

अंक-27 वॉ
सितम्बर
2016



चेतना

कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हफदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए (बाएँ से दाएँ) : श्री जॉर्ज सैमूएल, उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि)
श्री भारत भूषण झा, व. ले. अ. (संपादक) ,
मो हाशिम अंसारी व. ले. अ., (प्रधान संपादक)
श्री सी. सुरेश कुमार, महालेखाकार (ले. एव हक.)
श्रीमती तान्या सिंह, व. उप महालेखाकार

खड़े हुए (बाएँ से दाएँ) : श्री अजीत कुमार सिन्हा, महालेखाकार के सचिव,
श्री राजेन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक-सह-स. संपादक
श्रीराम पाण्डेय, स. ले. अ.-सह-स. संपादक
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा, स. ले. अ.-सह-स. संपादक



सत्यमेव जयते

चेतना

अंक-27वाँ (संयुक्तांक)

(अक्तुबर, 2015 से सितम्बर, 2016)

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

27 वाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001

चेतना के इस 27वें संयुक्तांक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
प्रकाशन : 'चेतना'
प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना -800001
अंक-27वाँ : (अक्तुबर, 2015 से सितम्बर, 2016)
मुख्य पृष्ठ : अशोक स्तम्भ, वैशाली, बिहार
मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा
मुद्रक : जी0 बी0 प्रिंटेर्स, पोपुलर प्लेस, लंगरटोली चौराहा, पटना-4

चेतना परिवार

संरक्षक

श्री सी० सुरेश कुमार
महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति,

श्रीमती तान्या सिंह,
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री जॉर्ज सैमुअल
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक
मो० हाशिम अंसारी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सम्पादक,
श्री भारत भूषण झा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक,
श्री श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक
श्री राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक

सहायक संपादक
श्री सुरेन्द्र दूबे
वरीय लेखाकार

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या

1.	चेतना परिवार	II
2.	अनुक्रमणिका	III
3.	महालेखाकार का संदेश	V
4.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	VI
5.	उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश	VII
6.	सम्पादकीय	VIII
7.	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ 2015-16	IX
8.	पुरस्कार वितरण	XI

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पदनाम	रचना का नाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ संख्या
01	श्रीराम पाण्डेय	स0ले0अधिकारी	इनक-इनक तोरी बाजे पायलिया	कहानी	1
02	राजेन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	प्राणायाम एक अनुभव	लेख	4
03	राजेन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	शारीरात्मा-वायु संबंध	लेख	9
04	बंशीधर मिश्र	व0ले0अधिकारी	त्याग	कहानी	11
05	सुरेन्द्र लाल दास	लेखा अधिकारी	जिन्दगी	लेख	13
06	ज्योति केशरी, पत्नी- श्री देव प्रकाश केशरी	लेखाकार	संत का नेवला	कहानी	14
07	देव प्रकाश केशरी	लेखाकार	सफलता की तैयारी	कहानी	15
08	देव प्रकाश केशरी	लेखाकार	दिखावे का फल	कहानी	16
09	तेज नारायण पाण्डेय	स0प्रबंधक (कै0)	काल	कहानी	17
10	दुलारी शरण सिंह	वरीय लेखाकार	बेचारा	कहानी	18
11	दुलारी शरण सिंह	वरीय लेखाकार	मर्द	लेख	21
12	सत्येन्द्र मॉझी	एम0टी0एस0	भारत की बहादुर बेटियाँ	लेख	23
13	सुरेश पाठक	एम0टी0एस0	आत्मविश्वास	लेख	24
14	प्रियांशु, पुत्र- श्री सुरेश पाठक	एम0टी0एस0	दहेज एक अभिशाप	कहानी	25
15	धीरज कुमार	लेखाकार	नक्सलवाद का गाँधीवाद समाधान	लेख	27
16	धीरज कुमार	लेखाकार	तनाव प्रबंधन में योग का महत्व	लेख	28
17	तेज नारायण पाण्डेय	स0प्रबंधक (कै0)	एक दिन का स्वर्ग	कहानी	29
18	भारत भूषण झा	व0ले0अधिकारी	धर्म	लेख	31
19	प्रभाष चन्द्र	व0लेखाकार	माया के जाल में	लेख	35
20	अविनाश कु0 ठाकुर	स0ले0अधिकारी	सौराठ सभागाछी	लेख	37
21	राम अनुग्रह प्रसाद	से0नि0व0लेखा0	श्राद्ध कर्म	लेख	40
22	राम अनुग्रह प्रसाद	से0नि0व0लेखा0	वृद्धाश्रम क्यों	लेख	42

क्रम संख्या	लेखक का नाम सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती	पदनाम	रचना का नाम	रचना के प्रकार	पृष्ठ संख्या
23	अमरेन्द्र कु० पाण्डेय	स० ले० अधिकारी	डाकू	लेख	45
24	अनिरुद्ध राय	से० नि० पर्यवेक्षक	गरीब का बेटा	संस्मरण	50
25	मो० हाशिम अंसारी	व० ले० अधिकारी	स्वच्छ भारत अभियान	लेख	52
26	स्मिता सुमन, पुत्री- श्री दीपक कुमार सिन्हा	वरीय लेखाकार	बंटवारे का मंजर	कविता	54
27	स्मिता सुमन, पुत्री- श्री दीपक कुमार सिन्हा	वरीय लेखाकार	जिन्दगी	कविता	55
28	राम सिंगार चौहान	लेखाकार	फूल पलास के	कविता	56
29	प्रियांशु, पुत्र- श्री सुरेश पाठक	एम० टी० एस०	मैं जीना चाहती थी	कविता	57
30	सुश्री सना खान, पुत्री- श्री सुलतान अहमद खान	वरीय लेखाकार	जन्मदाता	कविता	58
31	सुश्री सना खान, पुत्री- श्री सुलतान अहमद खान	वरीय लेखाकार	कैंसर	कविता	59
32	श्रीमती शिप्रा वर्मा, पत्नी- श्री उदय ना० प्रभाकर	लेखाकार	सिसकियाँ	कविता	60
33	श्रीमती शिप्रा वर्मा, पत्नी- श्री उदय ना० प्रभाकर	लेखाकार	कहता है मन	कविता	61
34	अश्विन अनुराग, पुत्र- श्री प्रेमनिवास मिश्र	स० ले० अधि०	गाँव की सड़क	कविता	62
35	अर्पित, पुत्र- श्री दिलीप कुमार सिंह	वरीय लेखाकार	प्रकृति की देन	कविता	63
36	आर्येश, पुत्र- श्री दिलीप कुमार सिंह	वरीय लेखाकार	हाय रे गर्मी	कविता	64
37	ऋषव माँझी, पुत्र- श्री सत्येन्द्र माँझी	एम० टी० एस०	सरदी के ठट	कविता	65
38	नायला समरीन, पुत्री- श्री मो० आफताब अंसारी	व० लेखाकार	हम गढ़ते अपनी तकदीर	कविता	65
39	बनवारी सिंह	लेखाकार	ए० जी० ऑफिस	कविता	66
40	बनवारी सिंह	लेखाकार	मने-मने हम गाई ला	कविता	67
41	शिव शंकर तिवारी	व० लेखाकार	कुदरत की कृति	कविता	68
42	अग्रिता प्रभाकर, पुत्री- श्री उदय ना० प्रभाकर	लेखाकार	धरा के भूषण	कविता	69
43	सुमित कुमार गुप्ता	लेखाकार	जीवन संघर्ष	कविता	70
44	श्री सोनु ओझा	डी० ई० ओ०	जीत की दौड़	कविता	71
45	मो० सुलतान अहमद खान	वरीय लेखाकार	दर्द-ए-दिल	गजल	72
46	मो० आफताब अंसारी	व० लेखाकार	तन्हा	गजल	73



संदेश

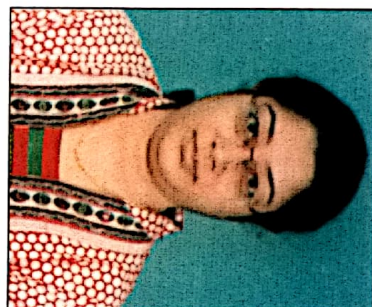
आज बहुत ही हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि हिन्दी पखवाड़ा के इस शुभ वेला में हमारा कार्यालय लगभग शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में सम्पन्न कर मुख्यालय का मान बढ़ाया है तथा राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हिन्दी में प्रचार-प्रसार के कार्य में सराहनीय सहयोग प्रदान कर रहा है। गृह पत्रिका 'चेतना' भी इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस अंक में विभिन्न अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा हिन्दी के प्रति अपने समर्पण, प्रेम, आदर एवं सम्मान का परिचय कविताओं, लेखों एवं संस्मरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मैं उनकी इस भावना एवं सतत् प्रयास हेतु उन्हें साधुवाद देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि हिन्दी के उत्थान में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का सतत् प्रयास अक्षुण्ण बना रहे।

शुभकामनाओं सहित।

सी. कुमार

सी० सुरेश कुमार
महालेखाकार



संदेश

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 27वां अंक इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संपादक मंडल के सहयोग से आपके समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए हम सब का दायित्व है कि सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा अपरिहार्य परिस्थितियों में ही अंग्रेजी का प्रयोग करें।

हिन्दी भाव-सम्प्रेषण की सरल भाषा है। फलस्वरूप इसके माध्यम से पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश की गई है, जो कारगर साबित होता दिख रहा है। भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा केन्द्रीय कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका सुखद परिणाम पूरे देश में परिलक्षित है।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं अपनी तरफ से शुभकामनायें व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने हिन्दी में कार्य कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया एवं कार्यालय का सम्मान बढ़ाया है।

धन्यवाद।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

तान्या सिंह

तान्या सिंह

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)



संदेश

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष की सर्वमान्य एवं सर्वसुलभ भाषा है। भारत सरकार के कार्यालयों के साथ-साथ अन्य उपक्रमों में भी प्रयास किया जा रहा है कि यह भाषा देश के सभी नागरिकों तक पहुँचे, ताकि देश में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं रहे। मोतियों की एक सुन्दर माला की तरह देश के विभिन्न प्रान्तों को एक सूत्र में बांधने की कोशिश इस भाषा के माध्यम से की गई है।

गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं हमारे मुख्यालय द्वारा जारी किए गये निर्देशों का पालन करते हुए हमारे कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' के माध्यम से प्रयास किया गया है कि कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की अभिरुची हिन्दी में बनी रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए पत्रिका के माध्यम से कार्यालय कर्मियों को हमारी शुभकामनायें।

धन्यवाद।

जॉर्ज सैमुअल

उप महालेखाकार
(पेंशन व निधि)



सम्पादकीय

हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 27वें अंक को हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि सहित जागरुकता लाने एवं इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के प्रचार एवं विकास के लिए सतत् प्रयत्न हो रहा है। तीव्र गति से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप से डालनी पड़ेगी।

आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर यह संकल्प लेना होगा कि सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में ही की जायेगी। साथ ही हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर की जायेगी।

इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध एवं कविता इत्यादि प्रत्येक माह नियमित रूप से हिन्दी कक्ष को देते रहेंगे, ताकि पत्रिका अपने त्रैमासिक लक्ष्य को प्राप्त कर सके और पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकें।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव बेहिचक सूचित करेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचना से इसे सुशोभित करने की कृपा करेंगे।

अंत में अपने हिन्दी-प्रेमी विद्वान, संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री सी० सुरेश कुमार तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशित हो पा रही है। पत्रिका में सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय रही है। उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद! पत्रिका में त्रुटि नहीं हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है तथापि यदि उसमें त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए क्षमा याचना है। इसके लिए विज्ञ पाठकगण मार्ग दर्शन कराने का अनुग्रह करेंगे। अपनी ओर से सभी पाठकों और रचनाकारों को पुनः बधाई देता हूँ।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

श्री भारत भूषण झा,
(संपादक)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी।

कार्यालय, महालेखाकार (ले० व ह०), बिहार, पटना। हिन्दी गतिविधियाँ-2015-16

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नांकित है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन:

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत वर्ष 2015-16 में कुल 3339 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें सभी हिन्दी/द्विभाषी में (कुल 3339) जारी किए गये तथा अंग्रेजी में जारी किए गये दस्तावेजों की संख्या शून्य रही।

2. हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2015-16 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 124,941 थी, जिनमें से 87,515 के उत्तर हिन्दी में दिए गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा हिन्दी में भेजे गये पत्रों की प्रतिशतता 100 प्रतिशत रही।

3. राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

वर्ष 2015-16 में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चार हिन्दी तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया। अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4. हिन्दी कार्यशाला:

वर्ष 2015-16 के दौरान इस कार्यालय में सात हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं जिनमें कार्यालय के 88 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5. हिन्दी पुरस्कार योजना:

वर्ष 2015 में हिन्दी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत इस कार्यालय के कर्मियों एवं उनके बच्चों को हिन्दी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार 'हिन्दी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया।

6. हिन्दी-पखवारा समारोह का आयोजन:

इस कार्यालय में वर्ष 2015 के दौरान 01 सितम्बर, 2015 से 14 सितम्बर 2015 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत् आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-निबंध-प्रतियोगिता, प्रारूप-लेखन एवं प्रतियोगिता, हिन्दी-अनुवाद प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयी। विभिन्न

प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

7. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भाग लेने हेतु जब भी आमंत्रित किया गया, इस कार्यालय ने भाग लेकर राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यालय ने राजभाषा में वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी।

8. हिन्दी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 114 अधिकारी एवं 528 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। यहाँ 09 टंकक तथा 53 डाटा एंट्री ऑपरेटर हैं, जिनमें 09 टंकक तथा 08 डाटा एंट्री ऑपरेटर प्रशिक्षण के लिए शेष हैं।

9. हिन्दी पुस्तकों की खरीद:

इस कार्यालय में 2015-16 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल रु0 40,000/- व्यय किए गये, जिसमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 20,000 रुपया व्यय किया गया।

10. हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2015-16 के दौरान इस कार्यालय में कुल 55,709 संचिकाएँ खोली गईं, जिनमें 55,419 संचिकाओं में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गईं।

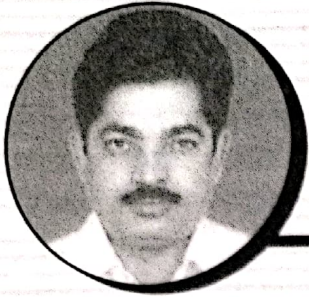
इस प्रकार इस कार्यालय द्वारा कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतर लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है। आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति की जा सके।

+++++

पुरस्कार वितरण (वर्ष-2015)

हिन्दी पखवारा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्रम संख्या	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों का नाम
1.	प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण	प्रथम	श्री नृपेन्द्र कुमार (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री अविनाश कुमार ठाकुर (स0ले0अ0), (ले0 एवं हक कार्यालय)
		तृतीय	श्री नीरज कुमार-2, एवं कुमार प्रशांत (स0ले0प0अधिकारी), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
2.	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	श्री नृपेन्द्र कुमार (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री धनंजय कुमार तिवारी (लेखाकार), (ले0 एवं ह0 कार्यालय)
		तृतीय	श्री दावर शेख, (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
3.	बच्चों का काव्य पाठ	प्रथम	अदिति, द्वारा ओम प्रकाश सिंह, एस0एस0-1
		द्वितीय	शोभना प्रांजल, द्वारा-प्रवीण कुमार (स0ले0प0अधिकारी), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	नायला समरीन, द्वारा-मो0आफताब अंसारी, (वरीय लेखाकार) (ले0 एवं ह0 कार्यालय)
4.	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	प्रथम	श्री रंजय कुमार शर्मा (एम0टी0एस0), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	शंकर लाल सिंह (लेखाकार), (ले0 एवं ह0 कार्यालय)
		तृतीय	श्री देव प्रकाश केशरी (लेखाकार) (ले0 एवं हक0 कार्यालय)
5.	स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	प्रथम	श्री शंकरषण कुमार सिंह (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री चंदन कुमार बड़ई (वरिष्ठ अनुवादक), (लेखा परिक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री आलोक कुमार (व0ले0प0अधिकारी), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
6.	हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता	प्रथम	श्री शीतांशु कुमार (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री नीरज कुमार-2 (स0ले0प0अधि0), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री नील कमल (स0ले0प0अधि0), (लेखापरीक्षा कार्यालय)



इनक-इनक तोरी बाजे पायलिया

श्रीराम पाण्डेय,
(सहायक लेखा अधिकारी)

जब भी विविध भारती पर यह गाना बजता, दीनदयालजी मस्त होकर झूमने लगते, गुनगुनाने लगते थे। आखिर इसकी वजह क्या थी ?

उस दिन वे खुशी से नाच उठे थे, जब उनके घर में बिटिया का जन्म हुआ था। सुखिया को पाँच सौ रुपये का नोट देते हुए बोले, “अरे सुक्खो! मेरा मुँह क्या देख रही है ? जा जल्दी से घोघन साह के यहाँ से मिठाई ले आ और पूरे गाँव में बांट दे।” माँ घर में भून-भूनाती रही कि बेटी के होने पर इतना इतराना अच्छा है क्या ? गाँव के लोग कितना हँसी-ठिठल्ला करेंगे, इसकी भी इसे चिंता नहीं। और न जाने क्या-क्या बड़बड़ाती रही माँ, परंतु उस दिन दीनदयालजी कहाँ किसी की सुनने वाले थे। बार-बार पत्नी के पास जाते और खुशी भरी आँखों से धन्यवाद देते। कुछ कह नहीं पाते क्योंकि वहाँ माँ एवं अन्य महिलाओं का जमघट लगा हुआ था।

छठी के दिन तो तंगहाली में भी पूरे गाँव और सगे-संबंधियों को भोज खिलाया गया। इतना बड़ा आयोजन देखकर दीनदयालजी के एक मित्र उन्हें कोने में ले जाकर पूछ बैठे कि बेटा हुआ है क्या भाई ? और फिर दीनदयालजी ने न जाने क्या कहा कि मित्र क्रोध में बिना भोजन किये वहाँ से चले गये। खैर, जान से भी प्यारी अपनी लाइली के लालन-पालन में कोई कसर नहीं छोड़ा उन्होंने। वह जब छोटी ही थी तो उसकी माँ का देहान्त हो गया। अत्यंत पीड़ा होने के बाद भी वे बेटी के सामने इसलिये नहीं रोये कि वह इस बात को समझ न ले कि

उसकी माँ अब इस दुनिया में नहीं रही। एकान्त में सुबक-सुबक कर रोते, पर बेटी के सामने खुश रहने कि कोशिश करते। माँ के बारे में पूछने पर कह देते कि नानी की तबीयत खराब हो गई है, इसलिये वह उन्हें देखने गई है। शुरू-शुरू में उसे समझाना बहुत ही कठिन होता था, परंतु बाद में बिना माँ के रहने की उसे आदत पड़ गई।

माँ-बाप दोनों का कर्तव्य बखुबी निभाया उन्होंने। यद्यपि गाँव के लोग बेटी के लिये इतना प्यार देखकर उनसे जलते-भूनते रहते थे, लेकिन यह कहने की हिम्मत किसी में नहीं होती थी कि गायत्री बिना माँ की बेटी है। जी हाँ, अपनी लाइली का नाम गायत्री ही तो रखा था दीनदयालजी ने। परंतु कभी भी इस सम्बोधन से उन्होंने उसे नहीं पुकारा, कभी बिटिया, कभी बिटिया रानी तो कभी-कभी गुड़िया। उसकी चंचलता और मासुमियत को देख अघाते नहीं थे वे। पढ़ाने के क्रम में यदि कभी डाँट देते और वह रोने लगती तो उनका कलेजा फट जाता था। फिर उस रात वे सो नहीं पाते थे और नींद में सोई हुई बच्ची को भी इस प्रकार गोद से चिपकाये रहते, मानो वह अभी भी रो रही हो। पैसे की कमी की आँच बेटी पर कभी नहीं आने दिया उन्होंने। एक-दो हितैषी उन्हें समझाते कि उनका इतना दुलार उस अबोध को बिगाड़ देगा। परंतु बेटी के प्यार में वे इतने कमजोर हो चुके थे कि किसी की सलाह, किसी के उपदेश का उनपर कोई असर नहीं पड़ता था।

दैव संयोग से उनके अत्यधिक

लाइ-प्यार के बावजूद गायत्री में कोई कुटेव घर नहीं कर पाया। कभी भी उसकी जरूरतें इतनी नहीं बढ़ पाई कि उसके बाबूजी को कष्ट हुआ हो या उन्हें किसी के आगे हाथ फैलाना पड़ा हो।

उस अबोध उम्र में भी वह बड़ों की तरह समझदार होती जा रही थी। किसी दिन यदि दीनदयालजी को सुबह उठने में देर हो जाती तो वह अनायास समझ जाती कि उनकी तबीयत खराब है और अपने नन्हें कोमल हाथों से उनके माथे में बाम मलने लगती। नींद टूट जाने के बाद भी उस नन्ही हाथ का स्पर्श उन्हें इतना मुग्ध कर देता कि झूठ-मूठ के आँख बंद किये पड़े रहते। जब लगता कि उनकी लाइली के हाथ में दर्द होने लगेगा, तब आँख मलते हुए उठ जाते और उसके दोनों गालों में चिकोटी काटने लगते। गायत्री को अपने बाबूजी पर बस इसी एक बात से गुस्सा आता था। दिनभर में पचासों बार उसके सुकोमल गालों में चिकोटी काट लेते थे। गायत्री लाख मना करती, परंतु अपनी इस आदत से वे मजबूर थे। उसके नन्हें पैरों में खुब सारी घूँघरुओं वाली पायल की रुनझून सून कभी-कभी इतने भाव-विभोर हो जाते कि अनायास ही मन्नाडे का गाया हुआ गाना 'झनक-झनक तोरी बाजे पायलिया' गुनगुनाने लगते। स्वप्न में खो जाते कि बेटी का विवाह हो गया है। उसका पति उससे अगाध प्रेम करता है, सास-ससुर बेटी के समान मानते हैं। मारे खुशी के उसके पैरों के घूँघरु बजने लगे हैं। ये दिवास्वप्न थे।

धीरे-धीरे गायत्री बड़ी होने लगी और बाप-बेटी में यह प्रतिस्पर्धा होने लगी कि कौन किसकी सेवा ज्यादा करता है। सुबह गायत्री बाबूजी के जगने से पहले उठ जाती और चाय बना लेने के बाद उन्हें जगाती। दीनदयालजी खुश होने के बजाय उसपर गुस्सा होने लगते कि आखिर उसे उठने कि इतनी जल्दी क्या थी। "देर रात

तक पढ़ाई कर थकती नहीं हो क्या तुम ? यदि पढ़ने-लिखने का मन नहीं है तो बोलो।" गायत्री ठठाकर हँस पड़ती, "आपकी नींद मुझसे पहले नहीं टूटी तो इस बात का क्रोध मुझपर क्यों दिखा रहे हैं ?" क्षण भर में बाप का गुस्सा पानी हो जाता, क्योंकि वे जानते थे कि उनकी लाइली उनकी बात की गौंठ बांध चुकी है और चाहे जो भी हो जाये, अपनी पढ़ाई से कभी समझौता नहीं करेगी।

उनकी होनहार लाइली बाबूजी का नाम रौशन करते हुए स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ली, तब दीनदयालजी को उसके विवाह की चिंता सताने लगी। यद्यपि इस बात की कल्पना से ही उनका मन घबराने लगता कि एक दिन उनकी लाइली बिटिया उनको छोड़कर, इस आंगन को सूना कर चली जायेगी। कभी-कभी समाज की इस परंपरा से उन्हें चिढ़ होने लगती, परंतु कर क्या सकते थे ? कहाँ भागते ? रहना तो इसी समाज में था। फिर न जाने कहाँ-कहाँ से कर्ज लेकर अपनी हैसियत से अधिक खर्च करते हुए एक होनहार, संपन्न लड़के के साथ उन्होंने अपनी प्यारी गुड़िया को विवाह बंधन में बांध दिया और वह विदा होकर चली गई। उस बार भी उन्होंने बेटी के सामने आँसू नहीं बहाया, ताकि उसे कोई कष्ट नहीं पहुँचे। उसके जाने के बाद घंटों रोते रहे।

खैर, उनकी लाइली परंतु अब पराई बेटी जब भी उनसे टेलिफोन पर बात करती और सास-ससुर तथा पति की खूब बड़ाई करती, वे खुशी से झूमने लगते और फिर घर में दर्जनों बार उस दिन वह गाना बजता रहता, "झनक-झनक तोरी बाजे पायलिया"। पास-पड़ोस के लोग अनुमान लगा लेते कि या तो गायत्री आई है या उसकी कोई अच्छी खबर। पर गायत्री के आने का तो सवाल ही नहीं था। जब कभी बाबूजी उसे लिवा आने के लिये उसके ससुराल जाने की बात करते,

वह उन्हें मना कर देती, “बाबूजी, अभी मत आईये। सासु माँ बिल्कुल अकेली हो जायेंगी। इनको (पतिदेव को) जब फुरसत मिलेगी, मैं स्वयं इनके साथ आपसे मिलने आ जाऊँगी।” यद्यपि बेटी के ससुराल में मन लगने की बात से वे आश्वस्त हो जाते, परंतु उसके जाने के पाँच-छः महीने बाद भी दुबारा उससे भेंट नहीं होने से कट कर रह जाते थे बेचारे। परंतु करते क्या? जब उनकी प्यारी लाइली ही उन्हें वहाँ जाने से मना कर देती। बस हर दिन अनुमान लगाते रहते कि आज बिटिया रानी का फोन आयेगा और कहेगी कि बाबूजी कल उनके साथ आ रही हूँ।

फोन तो नहीं आया। बल्कि उनकी बिटिया रानी का एक पत्र उन्हें मिला। थरथराते हुए दीनदयालजी पत्र पढ़ने लगे—

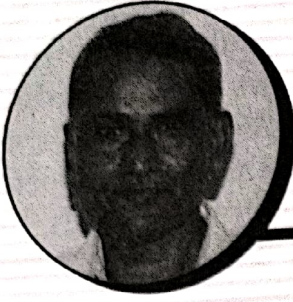
मेरे प्रिय बाबूजी, आपकी अभागी लाइली गुड़िया का आपके चरणों में अंतिम प्रणाम। बाबूजी, जबतक यह चिट्ठी आप तक पहुँचेगी, मैं इस संसार से विदा हो चुकी रहूँगी। मुझे क्षमा कीजिये बाबूजी, मेरे कारण आप इतने कमजोर हो चुके हैं कि अबतक सच नहीं कह पा रही थी। मैं आपसे झूठ बोलती रही। ये और इनके घर वाले मुझे बहुत सताते थे। बहुत ही लोभी तथा स्वार्थी हैं ये लोग। यहाँ आने के दिन से ही मुझपर आपसे रुपया एवं अन्य सामान मांगने के लिये दबाव बनाने लगे। बाबूजी मैं आपसे किस मुँह से यह सब कहती। आपने नहीं बताया था, परंतु मुझे सब मालूम है कि मेरे विवाह में आपने कहाँ-कहाँ से कर्ज लेकर, अपना एकमात्र जमीन बेचकर इन लोगों की मांगों को पूरा किया था। मैं इन्हें बता भी चुकी थी, परंतु ये इतने लालची हैं कि मेरी किसी भी बात पर इन्हें विश्वास नहीं होता था। बाबूजी, ससुराल के अन्य लोगों के लालचीपन से मुझे इतना दुख न पहुँचता, परंतु यदि पति जो

पत्नी का रक्षक एवं अवलंबन होता है, वही इस तरह लोभी हो जाये और पत्नी के ऊपर दया तक न करे तो कैसे बर्दाश्त कर पाती बाबूजी। मैं उस आदमी के साथ पूरी जिंदगी कैसे बिता पाती? मुझे कितने ताने मारे जाते, कितनी यातनाएँ दी जा रही थी, उसका वर्णन कर मैं आपको पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहती। बस इतना समझ लीजिये कि आप जिसे हिम्मती, विवेकी और निडर बेटी कहा करते थे, वह पूरी तरह टूट चुकी है। अब और सहने की ताकत नहीं है मुझमें बाबूजी।

मैं अब जा रही हूँ। आप रोड़ियेगा नहीं बाबूजी, कोई मलाल नहीं रखियेगा। मैं हजार जन्मों के बराबर आपके गोद में सुख पा चुकी हूँ। अगले जन्म में फिर से आपकी बिटिया रानी बनूँगी। बाबूजी, अलविदा।

घंटों से उसी एक गीत ‘झनक-झनक तोरी बाजे पायलिया’ की आवाज सून जब पड़ोसी पहुँचे तो देखा कि दीनदयालजी के हाथ में उनकी बिटिया का पत्र पड़ा हुआ है। आँखें निस्तेज हो चुकी हैं। फिर किसी ने उस घर में झनक-झनक पायल की आवाज नहीं सुनी।

+++++



प्राणायाम एक अनुभव

राजेन्द्र कुमार,
(पर्यवेक्षक)

प्राणायाम एक प्राकृतिक चिकित्सा सूक्ष्म विज्ञान है, जो शरीर के किसी भी अंग में होने वाले बीमारियों के लिए ऐंटीबायोटिक का कार्य करता है। फलस्वरूप प्राणायाम करने से शरीर के सभी अंग सामान्य रूप से कार्य करते रहते हैं। बुढ़ापे का लक्षण नहीं आने देता, चेहरे पर झुर्रियाँ नहीं पड़ती। सभी जीवों को अपना जीवन सफलतापूर्वक निर्विवाद जीने के लिए प्राणायाम ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, जिसको यदि मानव अपने जीवन में उतारे, तो उसे कभी भी डॉक्टर के यहाँ जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

हमारे शरीर में दो तंत्र (Machine) है। एक श्वासतंत्र (Lungs) और दूसरा पाचनतंत्र (Liver), जिसमें Lungs मुख्य है। हमारा पूरा शरीर इन्हीं दो तंत्रों के द्वारा कंट्रोल होता है। किडनी, हृदय आदि भी इन्हीं दो तंत्रों पर आधारित हैं। जबतक ये दोनों तंत्र ठीक रहते हैं, तबतक शरीर के अन्य तंत्र भली-भाँति कार्य करते रहते हैं। बचपन से युवावस्था तक यानि 25-35 वर्ष की आयु तक इंसान युवा की स्थिति में रहता है, दोनों तंत्रों को प्रायः कुछ नहीं होता है, फलस्वरूप शरीर सामान्य रूप से कार्य करता रहता है। जैसे-जैसे उम्र ढलती है, शरीर में विद्यमान ये दोनों तंत्र कमजोर पड़ते जाते हैं। प्राणायाम इन दोनों तंत्रों को यथावत् बनाने में मदद करता है।

शरीर का मुख्य तंत्र (Lungs) यदि जीवन भर ठीक रहे, तो प्राणी कभी बीमार नहीं पड़ेगा। किसी भी बीमारी की शुरुआत Lungs और Liver के कमजोर पड़ने से ही होती है। अनुलोम-विलोम करने से श्वास के जरिये फेफड़े का फूलना और पचकन उसे स्थायी तौर पर मजबूती प्रदान करता है तथा बंद पड़े छिद्रों को साफ करता है और छिद्र साफ रहने से शरीर को ऑक्सीजन प्रचूर मात्रा में मिलती है तथा ऑक्सीजन प्रचूर मात्रा में मिलने से शरीर के सभी अंग सामान्य रूप से उसी प्रकार कार्य करते रहते हैं, जिस प्रकार बचपन से युवावस्था तक कार्य कर रहा होता है।

जिस व्यक्ति का ये दोनों तंत्र आजीवन सही रहे, उन्हें किसी भी बीमारी का सामना नहीं करना पड़ता। दोनों तंत्र एक दूसरे के पूरक हैं। एक का खराब होना दूसरे को प्रभावित करता है। अतः हमलोग का प्रयास होना चाहिए कि दोनों तंत्रों को प्राणायाम के माध्यम से बचपन की तरह यथावत् बनाये रखें।

जिस व्यक्ति का श्वास तंत्र बचपन ही कमजोर है, उसे भी प्राणायाम के द्वारा स्वस्थ व्यक्ति की तरह सामान्य बनाया/रखा जा सकता है। जिस व्यक्ति का श्वास तंत्र मजबूत है, उसका पाचन तंत्र अपने-आप मजबूत रहेगा, बशर्ते कि उसका खान-पान सही हो।

बचपन से लेकर युवावस्था (35

की आयु) तक 85 प्रतिशत लोगों को कोई बीमारी नहीं होती है, क्योंकि ईश्वर ने उक्त अवधि में शरीर की क्षमता को यथावत् बनाये रखने का स्वतः अधिकार दे रखा है। 15 प्रतिशत लोगों को बीमारी का सामना करना पड़ता है, वह भी परिवार की लापरवाही या बाहरी वातावरण के प्रभाव के कारण। फिर जैसे-जैसे उम्र बढ़ती/ढलती जाती है, फेफड़ा (Lungs) एवं पाचनतंत्र कमजोर पड़ता जाता है और अन्त में कमजोर पड़ जाने के कारण शरीर को न तो ऑक्सीजन प्रचूर मात्रा में मिल पाता है और न ग्रहण किए गये भोजन से पूर्ण उर्जा, जितना की जरूरत है। प्राणायाम (अनुलोम/विलोम एवं कपाल भाति) एक ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक साधन है, जो हमें संयम से रहना और शरीर रूपी मंदिर में झाड़ू लगाना सिखाता है।

जिस प्रकार मानव निर्मित मंदिर, जहाँ ईश्वर की मूर्तियाँ रखी होती है, उस जगह झाड़ू लगाने से वह हमेशा साफ-सुथरा रहा करता है, उसी प्रकार ईश्वर द्वारा निर्मित मंदिर (मानव शरीर) में प्राणायाम रूपी झाड़ू (अनुलोम/विलोम, कपाल भाति एवं भस्त्रिका) यदि प्रत्येक दिन लगा लिया जाय, तो ईश्वर निर्मित यह मंदिर भी हमेशा साफ-सुथरा रहेगा। मंदिर के किसी कोने में कभी धूल-कण नहीं बैठेगा। फलस्वरूप मानव का शरीर, जिसे ईश्वर ने जिस रूप में गढ़ा/बनाया है, अन्तिम सांस लेते वक्त भी वैसा ही रहेगा। यानि जिस रूप में ईश्वर ने मुझे रहने के लिए शरीर दिया, अन्तिम सांस लेते वक्त हमने उसी रूप में ईश्वर को लौटा दिया। जरूरत है ईश्वर प्रदत्त मंदिर में रहने एवं उसे साफ रखने के लिए प्रत्येक दिन प्राणायाम रूपी झाड़ू

लगाना।

जब सृष्टि बनी और मानव की उत्पत्ति हुई, उसके संबंध में लोग कहा करते हैं कि पूर्व में मानव सौ दो सौ साल जीया करते थे, जबकि उस समय कोई अस्पताल नहीं हुआ करता था। ईश्वर का दिया हुआ वरदान “प्राणायाम” का ही सहारा लेकर अपना जीवन-यापन किया करते थे। प्राणायाम ही उनके लिए अस्पताल के डॉक्टर का काम किया करता था और जिसके सहारे इंसान अपनी युवावस्था को बनाये रखता था।

यह परम सत्य है कि आज से 15 वर्ष पहले मेरे शरीर में 10 (दस) बीमारियाँ थी, प्राणायाम करने से सब ठीक हो गया। इस संबंध में वर्ष 2008 में चेतना पत्रिका के 20वें अंक में एक लेख ‘प्राणायाम एक अनुभव’ भी प्रकाशित किया गया था।

वर्ष 2014 के नवम्बर माह में मेरे शरीर की जाँच के क्रम में तीसरे-चौथे श्रेणी का कैंसर पाया गया, वह पिछले 4-5 वर्ष के कार्यकाल में तनाव होने का कारण बताया गया, जो केमोथेरेपी और रेडिएशन से धीरे-धीरे सामान्य हो रहा है। सामान्य होने में प्राणायाम की भी अहम भूमिका रही है। अब प्रत्येक महीने खून-जाँच रिपोर्ट सामान्य रहता है। प्रारम्भ में जाँचोपरान्त कैंसर के डॉक्टर का कहना था कि कैंसर के अलावे आपके शरीर में और कोई बीमारी नहीं है, इसलिए आप ठीक हो जायेंगे। आज मैं ठीक से चल-फिर रहा हूँ, उसमें प्राणायाम की भूमिका अहम है। प्राणायाम शरीर में केमोथेरेपी और रेडिएशन को पचाने/बर्दाश्त करने में काफी मददगार साबित हुआ। अगर मैं प्राणायाम नहीं करता, तो शायद ही ठीक हो पाता, क्योंकि शरीर में उत्पन्न कैंसर अन्तिम अवस्था

तीसरे-चौथे श्रेणी में पहुँच गया था।

अतः मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से उनके बेहतर स्वास्थ्य की कामना करते हुए उनसे आग्रह करना चाहूँगा कि वे किसी भी प्रकार से बीमार न हों, शरीर में हर प्रकार के बाहरी आक्रमण सहने की क्षमता हो, इसके लिए नित्य दिन प्राणायाम करें और अपने शरीर को निर्मल बनायें, ताकि उन्हें जीवन में कभी भी किसी डॉक्टर की शरण में नहीं जाना पड़े। यह शरीर ईश्वर का दिया हुआ सर्वोत्तम उपहार है, जिसे हम प्राणायाम रूपी ऐंटीबायोटिक से सही और यथावत् बनाये रख सकते हैं।

प्राणायाम करने के लिए जब लोगों को कहा जाता है, तो लोग यही कहते हैं “समय ही नहीं मिलता है”। प्राणायाम नहीं करने से उम्र बढ़ने पर फेफड़े का सुराख जो करोड़ों में है, बंद होता जाता है और उसके बंद होने से शरीर को ऑक्सीजन मिलना कम हो जाता है तथा ऑक्सीजन कम मिलने से रोगों से लड़ने की क्षमता शरीर में घट जाती है। फलस्वरूप भिन्न-भिन्न प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न होने लगती हैं। अब सोचने वाली बात है कि व्याधियों को ठीक करने के लिए किसी भी मनुष्य को प्रचूर समय मिल जाता है, परन्तु प्राणायाम करने के लिए नहीं।

अतः समय न मिलने का बहाना करना इंसान की अपनी कमजारी है। 24 घंटे दुनियादारी देखने के लिए इंसान के पास समय है, परन्तु ईश्वर द्वारा निर्मित किए गये मंदिर में, जिसमें हम रह रहे हैं, झाड़ू लगाने के लिए समय नहीं है, यह कैसा दुर्भाग्य है। एक

बार प्राणायाम शुरू करें, प्रारंभ में थोड़ा कठिन महसूस होगा, हल्का-फुल्का दर्द भी हो सकता है, आप घबरायेंगे नहीं। कुछ लोग दर्द महसूस होने पर घबरा जाते हैं कि पता नहीं आगे क्या होगा और फिर प्राणायाम करना छोड़ देते हैं। घबराइये नहीं, प्राणायाम करते जाइये, नियमित प्राणायाम करते-करते लगभग एक माह के अन्दर आनंद महसूस होने लगेगा और स्वतः आप अनुभव करने लगेंगे कि अब हम ग्रसित बीमारियों से (यदि है) मुक्त होते जा रहे हैं।

नियमित प्राणायाम करने से स्वतः आनंद आने लगेगा। अपने-आप महसूस होने लगेगा कि बिना किसी टॉनिक के ईश्वर प्रदत्त उर्जा अब हमारे शरीर को स्वतः मिलने लगी है। इस जीवन में नियमित प्राणायाम करते हुए कितना भी शारीरिक/मानसिक कार्य किया जाय, कभी थकावट नहीं आएगी और अन्तिम सांस लेने तक आप सबल बने रहेंगे और यदि ऐसा आपके साथ हुआ, तो समझें कि प्राणायाम रूपी वरदान ईश्वर से आपको मिल गया। कभी आपके चेहरे पर झुर्रियाँ नहीं पड़ेंगी, कभी बुढ़ापा महसूस नहीं होगा। बुढ़ापा आने के बावजूद भी आप अपने आप को युवा महसूस करेंगे। इस प्रकार प्राणायाम जीवन जीने के लिए ईश्वर का दिया हुआ वरदान है।

एक भिखारी के लिए भी शरीर रूपी यह मंदिर उतना ही कीमती है, जितना कि एक धनी व्यक्ति के लिए। कोई भी व्यक्ति इस शरीर को छिन्न-भिन्न करके, दौलत प्राप्त नहीं करना चाहेगा। यदि कोई कहे कि एक हाथ, एक पैर, और एक आँख निकालकर दे दो, हम तुझे अमुक दौलत, जो करोड़ों/अरबों की है, दे देंगे, तो वह आदमी कभी भी अपने अंग को देकर

दौलत प्राप्त करना नहीं चाहेगा। वैसी परिस्थिति में उसका अपना शरीर ही सबसे बड़ी दौलत दिखाई देगा, न कि करोड़ों की अमूल संपत्ति। अतः इंसान की सबसे बड़ी दौलत है ईश्वर द्वारा निर्मित वह शरीर, जिसमें वह रहता है और यदि शरीर ही सबसे बड़ी दौलत है, तो शरीर रूपी इस मंदिर को साफ-सुथरा रखने के लिए क्यों न हम प्रत्येक दिन प्राणायाम रूपी झाड़ू लगा लें, ताकि मैल न बैठे और उसमें हम आनंदपूर्वक रहें।

हमारे शरीर में 10 वर्ष पहले 10 बीमारियाँ थी, जो प्राणायाम करने से 9 माह के अन्दर सब ठीक हो गया और फिर नियमित रूप से प्राणायाम करते रहने से कभी नहीं हुआ, 10 बीमारियाँ निम्न प्रकार थी:-

1. एसनोफीलिया, जिसके कारण खांसते-खांसते सुबह-शाम उठना-बैठना, ऑफिस करते दूभर हो गया था। इसके लिए प्रत्येक माह लगभग 2 से 3 हजार रुपये खर्च करने के बावजूद भी ठीक नहीं होता था;
2. 15 वर्षों का सर दर्द, जो प्रत्येक दिन या दो दिन पर बराबर हो जाया करता था और जिसे ठीक करने के लिए हमें हमेशा 24 घंटे जेब में दवा Nice Tablet (Elopath) या Carbo Veg (Homeopath)) रखनी पड़ती थी;
3. बायीं आँख में लाल धब्बे रहा करता था तथा पढ़ते-पढ़ते या कार्यालय कार्य करते-करते आधे घंटे के बाद दोनों आँखें हलका लाल होकर भारी लगता था और गड़ने भी लगता था;

4. शरीर के बायें अंग (जांघ) में उत्पन्न गाँठ, दबाने से दबता नहीं था;
5. करीब दस वर्षों से पैर में बराबर दर्द रहा करता था, उसे दूर करने के लिए दवा के रूप में टॉनिक लेनी पड़ती थी, फिर भी नहीं जाता था;
6. माथे (head) में चकत्ते-चकत्ते रुसी जमना, जो करीब बीस वर्षों से था;
7. दाहिने हाथ में दर्द के कारण हाथ ऊपर उठता नहीं था, दर्द की दवा खाने से भी उसपर कोई खास असर नहीं होता था;
8. पेट में कब्जियत/वायु विकार जो हमें लगभग बचपन से था;
9. बायें हाथ के बीच का नाखून काला होकर 20 प्रतिशत झड़ गया था तथा सभी नाखूनों में खुरदरापन भी आ गया था;
10. दौड़ते समय, गाड़ी चलाते समय या बैठे-बैठे (किसी भी मौसम में) लगभग 10 वर्षों से दाहिने कान के भीतर बर्फ की तरह ठंड लगती थी।

नियमित प्राणायाम करने से शरीर के भीतर का सारा तंत्र अपने आप ठीक हो गया और ऊपर उल्लेखित सभी 10 बीमारियाँ 10 वर्ष पहले ही लगभग 9 माह के अन्दर ठीक हो गई, और फिर कभी नहीं हुई।

प्राणायामों में तीन प्राणायाम मुख्य हैं, जिसे करके आप सदा निरोग रह सकते हैं, जो निम्न प्रकार है :-

रोगी व्यक्ति के लिए रोग के अनुसार

स्वस्थ व्यक्ति के लिए प्राणायाम की अवधि

	प्राणायाम	गति	अवधि
01	भस्त्रिका	मन्द/मध्यम/तीव्र	05/10 मिनट
02	अनुलोम-विलोम	मन्द/मध्यम/तीव्र	10 मिनट (108 बार)
03	कपालभाति	मन्द/मध्यम	15 मिनट (900 बार)

प्राणायाम करने की समय सीमा बढ़ानी पड़ती है। रोगी व्यक्ति के लिए कपाल भाति - 30 मिनट; अनुलोम-विलोम - 15/20 मिनट और भस्त्रिका - 10/15 मिनट। और यदि संभव हो तो इसे सुबह-शाम करें, बीमारी जल्द भागेगी। अन्य प्राणायाम भी समय की उपलब्धता को देखते हुए कर सकते हैं। प्राणायाम करने में बल का प्रयोग न करें, इसे सामान्य रूप से करें, यथा शक्ति तथा भक्ति।

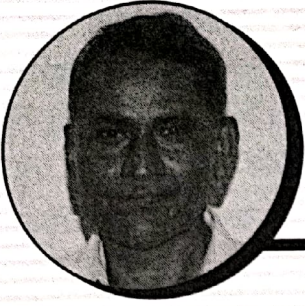
रखने में “ऊँ” के उच्चारण की अहम भूमिका है। सर्व प्रथम 10 बार से “ऊँ” का उच्चारण करें। फिर धीरे-धीरे 10 से आगे बढ़ें, करते-करते स्वतः 108 बार “ऊँ” का उच्चारण होने लगेगा।

नोट:- सही जीवन जीने एवं निरोग रहने के लिए शहंशाह जैसा सुबह में नास्ता लें, दोपहर में राजकुमार जैसा भोजन करें और रात में भिखारी की तरह खाना खायें।

प्रत्येक दिन सुबह में “ऊँ” (अ+उ+म) का उच्चारण 108 बार खाली पेट करने से हृदय के साथ-साथ अन्य सभी अंग जीवन भर सामान्य रूप से कार्य करते रहते हैं। शरीर को निर्मल

+++++





शरीरात्मा-वायु संबंध

राजेन्द्र कुमार,
(पर्यवेक्षक)

किसी भी जीव का शरीर पाँच तत्वों (यथा पृथ्वी, जल, वायु, आग और आकाश) से मिलकर बना है और वे पाँच तत्व जीव को उसकी माँ के गर्भ से/में ही प्राप्त हुए हैं। इस शरीर में जो आत्मा विद्यमान है, उसका तेज माता-पिता के कर्मों/संस्कारों से मिला है। अतः जब कभी भी आपको ईश्वर की तलाश करनी हो, तो उसे माँ की छवि में तलाश करें और उसे अपनी जेहन/आँखों में बसा लें, 24 घंटे आपको ईश्वर का दर्शन होता रहेगा। आप जो कुछ भी इस धरती पर रहकर प्राप्त करना चाहेंगे, आपको मिलेगा, वशर्ते कि सत्य निष्ठा से प्राप्त करने का प्रयास किया जाय।

इस धरती पर वायु हर प्राणी के लिए साक्षात् ईश्वर है, जिसे हम 24 घंटे लगातार ग्रहण कर रहे हैं। इसमें कोई पैसा नहीं लगता, इसपर किसी का कोई वर्चस्व नहीं है। इसे हम देख नहीं सकते, परन्तु अनुभव कर सकते हैं। हमारा प्रथम कर्तव्य है कि हम अपने आस-पास के साथ-साथ सम्पूर्ण वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखें और यदि हम किसी कार्यालय में कार्यरत हैं, तो हमारा प्रयास होना चाहिए कि कार्यालय के सभी स्थान, चाहे वह अनुभाग हो या किसी अधिकारी का कक्ष/चैम्बर दोनों की सफाई एक समान होनी चाहिए अर्थात् दोनों प्रदूषण मुक्त

होना चाहिए, ताकि कार्यालय प्रदूषण से शत-प्रतिशत मुक्त रहे और कार्यालय का कोई भी अधिकारी/कर्मचारी इसका शिकार न हो।

कार्यालय या अपने आस-पास की आवोहवा को प्रदूषण से मुक्त रखने का तात्पर्य यह है कि प्राणवायु, जिसे हम 24 घंटे बिना किसी बाधा के ग्रहण कर रहे हैं, हमारे प्राणों के संचालक हैं यानि साक्षात् ईश्वर है, क्योंकि यदि आपको इस वायु देवता से 2 मिनट के लिए दूर कर दिया जाये, तो आत्मा आपका शरीर छोड़ देगी, चाहे आप उस समय किसी भी देवी/देवता/ईश्वर की अराधना क्यों न कर लें, कोई सुनने या बचाने आपको नहीं आएगा।

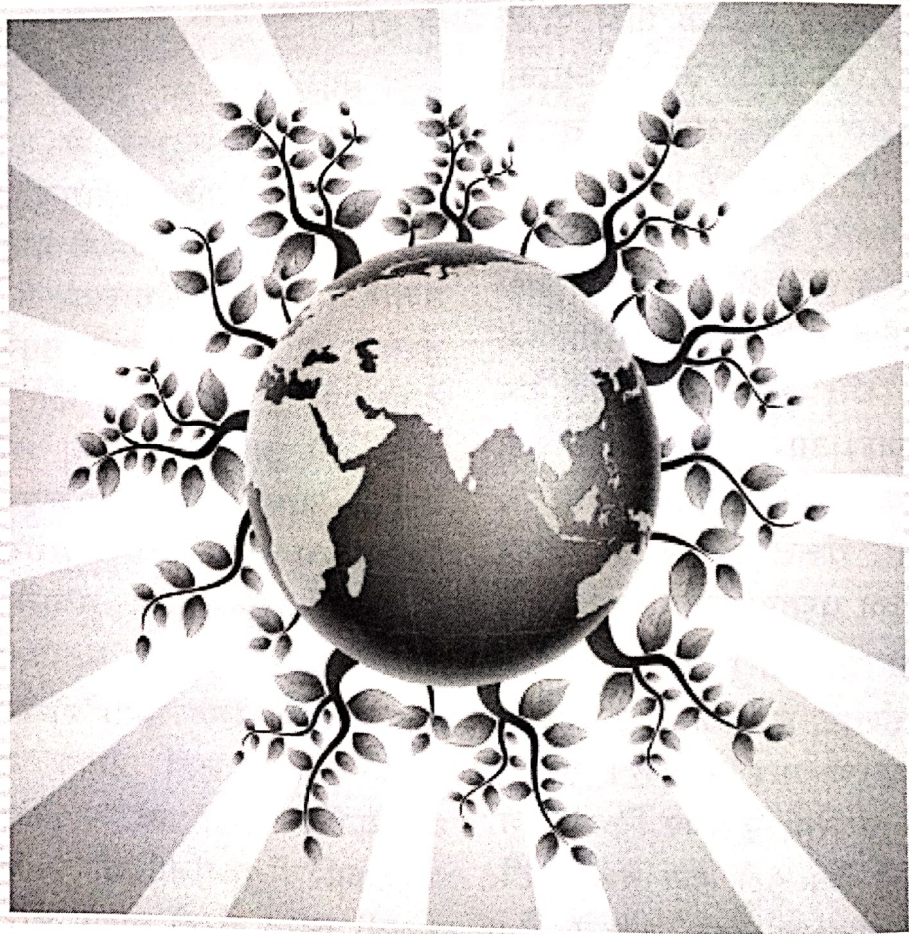
प्रदूषण एक ऐसा रोग है, जिसे यदि समय रहते नहीं रोका गया, तो यह कार्यालय के कितने ही अधिकारियों/कर्मचारियों को धीरे-धीरे अपनी चपेट में ले लेगा और पता भी नहीं चल पाएगा। प्रदूषण से श्वास की बीमारियों के साथ-साथ अन्य बीमारियाँ भी हुआ करती है, यहाँ तक कि कैंसर, जो सबसे घातक बीमारी है, के होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः यदि घातक बीमारियों से अपने-आप को, समाज को या किसी संस्था को मुक्त रखना है, तो सबसे पहले अपने आस-पास के आवोहवा के साथ-साथ कार्यालय के वातावरण को भी

प्रदूषण से मुक्त रखना होगा।

अतः यदि हमें स्वस्थ रहकर जीना है, तो सबसे पहले अपने आस-पास की आवोहवा (वायु रूपी देवता का ख्याल करते हुए) के साथ-साथ कार्यालय सहित प्रत्येक स्थान के चप्पा-चप्पा को साफ रखना होगा। कहीं पर किसी प्रकार की कोई गंदगी न रहे। अपने घर जैसा

कार्यालय भी साफ रहे या रखने में मदद करें। ऐसा माहौल बने, जिसमें हर व्यक्ति बिना किसी बाधा के स्वच्छ पूर्वक कार्यालय का कार्य करते हुए नियोग रहे प्रदूषण/तनाव के कारण कभी कोई बीमार न पड़े।

+++++



त्याग

बंशीधर मिश्र,
(वरीय लेखा अधिकारी)

बात प्राचीन काल की है। उन दिनों “ब्रह्मर्षि” के रूप में ऋषि-मुनियों की पहचान हेतु गुरु वशिष्ठ द्वारा मान्यता दिया जाना नितांत आवश्यक था। जिस किसी को गुरु वशिष्ठ द्वारा “ब्रह्मर्षि” की मान्यता दी जाती थी, मात्र वे ही “ब्रह्मर्षि” कहलाने योग्य थे। विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि के रूप में गुरु वशिष्ठ द्वारा मान्यता नहीं दी जा रही थी, जिसका उन्हें बहुत दुःख था तथा वे मन-ही-मन गुरु वशिष्ठ पर बहुत ज्यादा नाराज रहते थे। विश्वामित्र जी को अपनी काबिलियत पर जरा भी शक नहीं था। ऐसी स्थिति में ब्रह्मर्षि के रूप में मान्यता न मिलने की स्थिति उन्हें काफी परेशान किया करती थी। स्वभाव से वे क्रोधी तो थे ही, यह स्थिति उन्हें और भी क्रोधी बना रही थी।

पूर्णिमा की चाँदनी रात थी। अपनी कुटिया के पास गुरु वशिष्ठ अपनी पत्नी के संग चहलकदमी कर रहे थे तथा विश्वामित्र जी पर ही उनसे चर्चा चल रही थी। गुरु वशिष्ठ लगातार विश्वामित्र जी की प्रशंसा किए जा रहे थे। इसी क्रम में उन्होंने अपनी पत्नी को कहा कि विश्वामित्र जी में “ब्रह्मर्षि” होने के सारे गुण हैं, सिर्फ क्रोध को छोड़कर। अगर वे क्रोध का त्याग कर दें, तो उनके समतुल्य कोई अन्य ऋषि है

ही नहीं, वे अतुल्य हैं। ये सारी बातें विश्वामित्र जी सुन रहे थे, जो कि आज अपने हाथों में तलवार लेकर गुरु वशिष्ठ का अन्त करने हेतु क्रोध की मुद्रा में आये थे। अपने बारे में गुरु वशिष्ठ से अत्यधिक तारीफ सुनकर विश्वामित्र जी अपने-आप को रोक नहीं सके और उनके चरणों में गिरकर रोते हुए अपने द्वारा किए जा रहे कर्म हेतु माफी माँगने लगे। ऐसी स्थिति में गुरु वशिष्ठ एवं उनकी पत्नी हतप्रभ रह गये। गुरु वशिष्ठ द्वारा विश्वामित्र को “उठो ब्रह्मर्षि” संबोधन के साथ उठाया गया और गले से लगा लिया गया। इस तरह सही समय से क्रोध का “त्याग” करने पर विश्वामित्र जी को मनचाही उपलब्धि प्राप्त हुई।

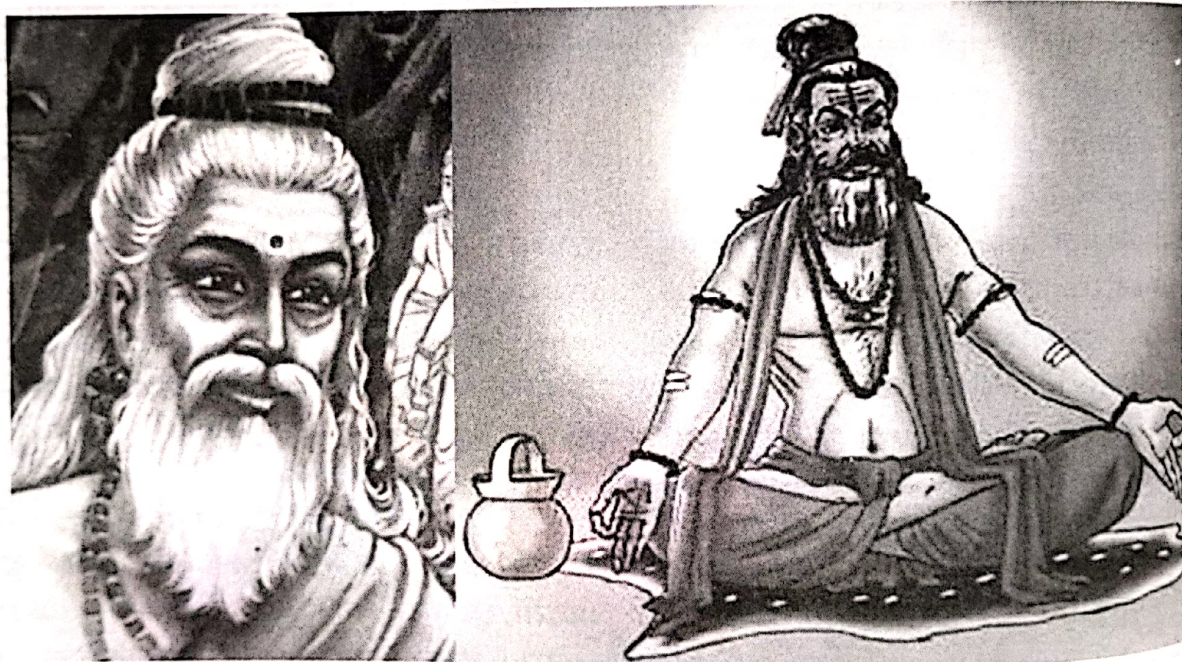
इस छोटी सी कहानी का स्पष्ट तात्पर्य/संदेश है कि आदमी को बुरी आदतों/व्यसनों का समय से त्याग करना चाहिए। इसके परिणाम स्वरूप निश्चित ही बहुत बड़ी उपलब्धि संभव है। एक बात और भी है, आपमें विद्यमान कमियों को कोई और ही परख सकता है, बोल सकता है। अतः यदि आपके विद्यमान कमियों को कोई उजागर करता है, तो उसे भी स्वीकार करनी चाहिए एवं उसके त्याग का प्रयास करना चाहिए। आपके अन्दर विद्यमान कमी आपको स्वयं दिख ही नहीं सकती। इस प्रकार लोगों द्वारा उजागर की गई कमियों

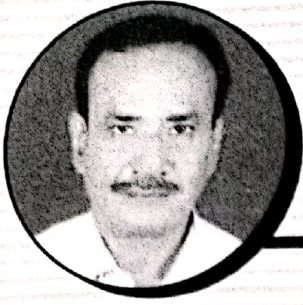
के लिए उनका शुक्रगुजार होना चाहिए।

कबीरदास जी ठीक ही कह गये हैं-

“ निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छ्वाय,
बिन पानी-साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।”

+++++





जिन्दगी

सुरेन्द्र लाल दास,
(लेखा अधिकारी)

एक गिलहरी रोज अपने काम पर समय से आती थी और अपना काम पूरी मेहनत और ईमानदारी से करके चली जाती। गिलहरी जरूरत से ज्यादा काम करके भी खुश थी, क्योंकि उसके मालिक जंगल के राजा शेर ने उसे दस बोरी अखरोट देने का वादा किया था। गिलहरी काम करते-करते थक जाती तो सोचती कि थोड़ा आराम कर लूँ, लेकिन जैसे ही आराम की बात ध्यान में आती वैसे ही उसे याद आता कि शेर उसे दस बोरी अखरोट देगा।

गिलहरी जब दूसरे गिलहरियों को खेलते देखती, तो उसकी भी इच्छा होती थी कि मैं भी खेलूँ, पर उसे अखरोट का याद आ जाता और वह फिर काम पर लग जाती। बात ऐसी नहीं थी कि शेर उसे अखरोट नहीं देना चाहता था, शेर बहुत ही ईमानदार था। इस प्रकार समय बीतता चला गया।

एक दिन ऐसा भी आया कि जब जंगल के राजा शेर ने गिलहरी को दस बोरी अखरोट देकर आजाद कर दिया तब गिलहरी सहर्ष अखरोट स्वीकार कर अखरोट के पास बैठकर सोचने लगी कि अब अखरोट मेरे किस काम के? पूरी जिन्दगी काम करते-करते दाँत तो घिस गये, इन्हें खाऊँगी कैसे? यह कहानी आज जीवन की हकीकत बन चुकी है।

इंसान अपनी इच्छाओं का त्याग

करता है एवं पूरी जिन्दगी नौकरी, व्यापार और धन कमाने में बीता देता है। 60 वर्ष की आयु में जब वो सेवा निवृत्त हो जाता है, तो उसे जो उसका फण्ड मिलता है या बैंक में जो जमा पूँजी होती है, उसे भोगने की क्षमता वह खो चुका होता है। उस उम्र के पड़ाव पर जेनरेशन (पीढ़ी) बदल चुकी होती है एवं परिवार चलाने की जिम्मेवारी बच्चे संभाल चुके होते हैं।

क्या इन बच्चों को इस बात का अन्दाजा लग पाएगा कि इस फंड या जमा धन राशि के लिए कितनी इच्छायें मरी होगी, कितनी तकलीफें सहनी पड़ी होगी और कितने सपने अधूरे रह गये होंगे। क्या फायदा, ऐसे फण्ड या बैंक में जमा राशि का, जिसे पाने के लिए पूरी जिन्दगी दाव पे लगाना पड़ जाय और इंसान उसका भोग खुद न कर सके। माना कि धन का संचय अपने एवं भावी पीढ़ी के लिए आवश्यक है, परन्तु इस धरती पर कोई भी ऐसा अमीर अभी तक पैदा नहीं हुआ, जो बीते हुए समय को खरीद सके।

इसलिए सुधि पाठकों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि आप अपने जीवन के हर पल को खुशनुमा बनाकर जिन्दादिली के साथ जियें, मस्त रहें एवं सदा स्वस्थ रहें।

धन्यवाद !

+++++



संत जी का नेवला

ज्योति केशरी
पत्नी-श्री देव प्रसाद केशरी
(लेखाकार)

एक बार एक संत जी अपने कुछ शिष्यों के साथ जंगल में आश्रम बनाकर रहते थे। एक दिन कहीं से एक नेवला का बच्चा रास्ता भटककर आश्रम में आ गया। संत जी ने उस भूखे प्यासे नेवले के बच्चे को दूध रोटी खिलाया। वह बच्चा वहीं आश्रम में रहकर पलने लगा। लेकिन उसके आने के बाद संत जी को एक समस्या उत्पन्न हो गयी कि जब वे सायं ध्यान में बैठते, तो वह बच्चा कभी उनकी गोद में चढ़ जाता, कभी कंधे या सिर पर बैठ जाता। तो संत जी ने अपने एक शिष्य को बुलाकर कहा, देखो मैं जब सायं ध्यान पर बैठूँ, उससे पूर्व तुम इस बच्चे को दूर एक पेड़ में बाँध आया करो। अब तो यह नियम हो गया, संत जी के ध्यान पर बैठने से पूर्व वह नेवला का बच्चा पेड़ में बाँधा जाने लगा।

एक दिन संत जी की मृत्यु हो गयी तो उनका एक प्रिय काबिल शिष्य उनकी गद्दी पर बैठा। वह भी जब ध्यान पर बैठता तो नियम के अनुसार उस नेवले के बच्चे को पेड़ में बाँधा जाता। फिर एक दिन तो अनर्थ ही हो गया, बहुत बड़ी समस्या आ खड़ी हुई। पेड़ में बाँधा जाने वाला नेवला की भी मृत्यु हो गई। कोहराम मच गया कि अब संत जी महाराज ध्यान पर बैठें कैसे? सारे शिष्यों की मीटिंग हुई, सबने इस बिन्दु पर विचार-विमर्श किया कि “परम्परा के अनुसार ध्यान से पूर्व नेवले को पेड़ में बाँधा जाना अनिवार्य है”। अतः निर्णय हुआ कि पास के गाँवों से कहीं

से भी एक नेवला लाया जाये। आखिरकार काफी ढूँढने के बाद एक नेवला मिला, जिसे पेड़ में बाँधने के बाद संत जी ध्यान पर बैठने लगे।

विश्वास मानें, उसके बाद न जाने कितने नेवला मर चुके और न जाने कितने संत भी गुजर चुके। लेकिन आज भी जब तक पेड़ में नेवला न बाँधा जाये, तब तक संत जी ध्यान पर नहीं बैठते। कभी उनसे पूछो तो वे कहते हैं कि “ध्यान पर बैठने की यही परम्परा है”। हमारे पुराने सभी संतजी यही करते रहे हैं, वे सब गलत तो नहीं हो सकते। हम कटिबद्ध हैं, कुछ भी हो जाये, हम अपनी परम्परा नहीं तोड़/छोड़ सकते।

यह तो हुई उन संत जी और उनके शिष्यों की बात। पर कहीं न कहीं हम सब भी एक नहीं, अनेकों ऐसे नेवले पाल रखे हैं। कभी गौर किया है इन नेवलों पर? सैकड़ों वर्षों से हमसब ऐसे ही और कुछ अनजाने तथा कुछ चन्द स्वार्थी तत्वों द्वारा निर्मित परम्पराओं के जाल में जकड़े हुए हैं।

जरूरत इस बात की है कि हम ऐसी परम्पराओं और अंधविश्वासों को अब और न पनपने दें, और अगली बार ऐसी बातों/परम्पराओं पर यकीन करने से पहले सोच लें कि कहीं हम जाने-अनजाने में अंधविश्वास रुपी कोई नेवला तो कहीं नहीं पाल रहे हैं?

+++++



सफलता की तैयारी

देव प्रकाश केशरी
(लेखाकार)

शहर से कुछ दूरी पर एक बुजुर्ग दम्पति रहते थे। वह जगह बिल्कुल शांत था। वहाँ पर इक्का-दुक्का ही लोग नजर आते थे। एक दिन भोर में उन्होंने देखा कि एक युवक हाथ में फावड़ा लिए अपनी साइकिल से कहीं जा रहा है। वह कुछ दूर तक जाते हुए दिखाई दिया, फिर आगे चलकर नजरों से ओझल हो गया। दम्पति ने इस बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया, परन्तु अगले दिन फिर वही व्यक्ति उसी रास्ते से जाते दिखा। अब तो मानो ये रोज की बातें हो गई।

वह व्यक्ति रोज फावड़ा लिए उस रास्ते से गुजरता और थोड़ी दूर जाकर आँखों से ओझल हो जाता। दम्पति इस सुनसान इलाके में इस तरह किसी के रोज आने-जाने से परेशान होने लगे और अन्त में उन्होंने उसका पीछा करने का फैसला किया। अगले दिन जब युवक उनके घर के तरफ से गुजरा, तो दम्पति भी अपनी गाड़ी से उसका पीछा करने लगे। कुछ दूरी चलने के बाद वह युवक एक पेड़ के पास रुका और अपनी साइकिल वहीं खड़ी कर आगे बढ़ने लगा। 15-20 कदम चलने के बाद वह रुका और अपने फावड़े से जमीन खोदने लगा।

दम्पति को अजीब लगा और वे

हिम्मत करके उसके पास पहुँचे और उससे पूछा, “तुम यहाँ इस सुनसान जगह पर यह काम क्यों और किसके लिए कर रहे हो?”

युवक बहुत ही धैर्यपूर्वक जवाब दिया, “जी, दो दिन बाद मुझे एक किसान के यहाँ काम पाने के लिए जाना है और उसे ऐसा आदमी चाहिए जिसे खेती में काम करने का अनुभव हो, चूँकि मैंने पहले कभी खेतों में काम नहीं किया है, इसलिए कुछ दिनों से यहाँ आकर खेतों में काम करने की तैयारी कर रहा हूँ!!” युवक की बातों से प्रभावित होकर दम्पति ने उसे काम मिल जाने का आशीर्वाद दिया।

दोस्तों! किसी भी तरह की सफलता को प्राप्त करने के लिए तैयारी बहुत ही जरूरी है। जिस प्रकार युवक ने किसान की खेतों में काम करने के लिए अपने-आप को तैयार किया, उसी प्रकार हर व्यक्ति को अपने-अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए खुद को तैयार करना होगा।

+++++



दिखावे का फल

देव प्रकाश केशरी
(लेखाकार)

मैनेजमेंट की शिक्षा प्राप्त कर एक नौजवान को बहुत अच्छी नौकरी मिल जाती है। उसे कंपनी की ओर से काम करने के लिए अलग से एक केबिन दे दिया जाता है। काम करते-करते जब कंपनी मैनेजर के रूप में उसकी अपनी पहचान बनती है, तब वह अपने पूर्व की स्थिति को भूल जाता है और स्वयं को कंपनी का मालिक समझ बैठता है। एक दिन जब वह नौजवान अपने ऑफिस जाता है और बैठकर अपने शानदार केबिन को निहार रहा होता है, तभी दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है। दरवाजे पर एक साधारण सा व्यक्ति को देखकर उसे अन्दर आने के बदले उसे आधा घंटा दरवाजे पर इन्तजार करने के लिए कहता है।

आधा घंटा बीतने के पश्चात् वह आदमी पुनः अन्दर आने की अनुमति मांगता है। उसे अन्दर आते देख झट से टेलिफोन उठाकर बातें करना शुरू कर देता है। वह बहुत सारे पैसों (करोड़ों में) की मांग करता है। अपने ऐशो-आराम के बारे में कई प्रकार की डींगें हाँकने लगता है। सामने वाला व्यक्ति उसकी सारी बातें सुनता रहता है। जब उसकी सारी बातें समाप्त हो जाती हैं, तब जाकर वह सामने वाला व्यक्ति से पूछता है कि 'तुम यहाँ क्या करने आये हो, बोलो अब ?'

वह व्यक्ति उस युवा व्यक्ति से,

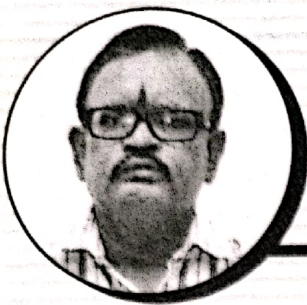
जो टेलिफोन पर डींगें हाँक रहा होता है, बड़े ही विनम्र भाव से देखते हुए कहता है, "साहब! मैं यहाँ आपके चैम्बर में टेलिफोन रिपेयर करने आया हूँ। मुझे खबर दी गई है कि जिस टेलिफोन से आप बातें कर रहे थे, वो हफ्ते भर से बंद पड़ा है और मैं इसी टेलिफोन को रिपेयर करने आया हूँ। इतना सुनते ही युवा व्यक्ति शर्म से पानी-पानी हो गया और चुप-चाप कमरे से बाहर चला गया। उसे अपने दिखावे का फल मिल चुका था।

हम जब सफल होते हैं, तब हम अपने-आप पर बहुत गर्व करते हैं और यह स्वाभाविक भी है। गर्व करने से हमें स्वाभिमानी होने का एहसास होता है, लेकिन एक समय के बाद ये अहंकार का रूप ले लेता है। इस प्रकार इंसान स्वाभिमानी से अभिमानी बन जाता है और अभिमानी बनते ही दूसरों के सामने दिखावा करने लग जाता है।

अतः हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम चाहे कितने भी सफल क्यों न हो जायें, व्यर्थ के अहंकार और झूठे दिखावे में ना पड़ें अन्यथा उस युवक की तरह हमें भी कभी-न-कभी शर्मिदा होना पड़ सकता है।

+++++

काल



तेज नारायण पाण्डेय,
(सहायक प्रबंधक "कैटीन")

एक गाँव में चार दोस्त रहते थे। भिन्न-भिन्न जाति और वर्ग के होने के बावजूद चारों दोस्तों में अगाध प्रेम रहता था। समय बीतता गया और वे बचपन से जवान हो गये। एक दिन की बात है कि चारों दोस्तों ने आपस में मिलकर यह निर्णय लिया कि हमें प्रदेश जाकर धन की प्राप्ति करनी चाहिए। निर्णय के अनुसार चारों दोस्त घर-गाँव छोड़कर प्रदेश को चल दिए। चलते-चलते जब शाम हो गई तब उनलोगों ने निश्चय किया कि रात्रि विश्राम इसी मैदान में पेड़ के नीचे किया जाय। चारों वहीं पेड़ के नीचे एक साथ लेट गये। थके रहने के कारण बहुत जल्द ही वे घोर निद्रा में डूब गये।

रात्रि का पल बीतता गया। सुबह होने का समय हो चला। अचानक एक ब्राह्मण दोस्त की नींद खुल गई। वह उठकर बैठा ही था कि उसकी नजर सोए हुए अपने साथियों पर पड़ी। उसने देखा कि उसके एक दोस्त को काला नाग (साँप) डँसकर तीव्र गति से भागा जा रहा है। उसने उस सर्प का पीछा किया। कुछ दूर आगे जाकर देखा कि वह सर्प एक लकड़बघा का रूप ले लिया। एक बूढ़े व्यक्ति, जो अपने पोते के साथ घर के बाहर खाट पर सो रहा था, उसके बच्चे को उठाकर उसका पेट अपने पंजे एवं दाँत से फाड़ दिया, जिसकी मौत तत्काल हो गई। फिर कुछ आगे जाने पर एक किसान अपने काढ़ों को एक

साथ जोड़कर गाँव के बाहर खेत जोतने के लिए ले जा रहा था। अब लकड़बघा अपना रूप एक काढ़े का ले लिया और उस किसान के काढ़े के साथ भीड़ गया। किसान उसे हटाने के लिए बहुत प्रयास किया और डंडे से मारकर जब अलग करना चाहा, तो उस काढ़े ने अपने नुकीले सिंघ से किसान का पेट फाड़ डाला, जिससे उसकी मौत वहीं पर हो गई।

अब अंधेरा छूट चुका था। पीछा करने वाला व्यक्ति ने उससे पूछा, यार! तुम हो कौन? पहले तो सर्प का रूप ले मेरे दोस्त को मारा, फिर लकड़बघा बन बच्चे को मार डाला और फिर काढ़ा का रूप धरकर किसान को, आखिर तुम हो कौन? उसने (काढ़े ने) जवाब दिया और कहा कि तुम मेरा पीछा करते-करते यहाँ तक पहुँच गये हो, इसलिए बता देता हूँ। मैं कोई और नहीं, काल हूँ। जिस व्यक्ति की आयु पूरी को जाती है, एक क्षण का विलंब किए वगैर उसकी आत्मा लेने हेतु मैं मौत बनकर उसके सामने खड़ा हो जाता हूँ। ब्राह्मण का लड़का ने पुनः पूछा, यार बताओ तो, मेरी मौत कैसे होगी? उसने ठहाका मारकर हँसा और बोला, मैं जानता था, यह बात तुम मुझसे जरूर पूछोगे। उसने जवाब दिया, तुम्हारी मौत के लिए मैं एक घड़ियाल का रूप लेकर आऊँगा। इतना कहकर काढ़ा अंतर्धान हो गया।

पंडित जी मन-ही-मन सोचने लगे,

घड़ियाल तो पानी में रहता है, मैं पानी में जाऊँगा तब न। मैं पानी में जाऊँगा ही नहीं, तो घड़ियाल पकड़ेगा कैसे ? यह सोचकर पंडित जी बहुत खुश थे। वे पूजा-पाठ, भविष्यवाणी आदि के लिए मशहूर हो गये।

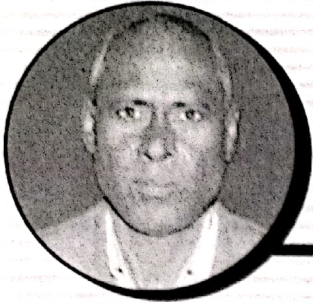
समय बीतता गया। उनके गाँव में राजा के यहाँ एक लड़का पैदा हुआ। राजा ने पंडित जी को बुलाकर बच्चे की कुंडली तैयार करवाया। जन्म कुंडली देख पंडित जी ने कहा, महाराज! यह लड़का बहुत ही भाग्यशाली, बहादुर एवं चक्रवर्ती सम्राट बनने योग्य है, लेकिन बच्चे की 5 वर्ष की आयु में गंगा स्नान करा गंगा में ही यज्ञोपवीत कराना होगा, तभी उसके ग्रहों का निवारण होगा। समय बीतता गया, बच्चे की आयु अब 5 वर्ष की हो गई। राजा ने पंडित जी को बुलाया और कहा, पंडित जी! यज्ञोपवीत और गंगा स्नान की तिथि निर्धारित किया जाय। इतना सुनते ही पंडित जी को घड़ियाल वाली बात याद आ गई। उसने झट से कहा, महाराज! मैं पानी के अन्दर तो जाऊँगा नहीं। राजा के लड़के ने बड़ी उत्सुकता से अपनी तुतली भाषा में कहा - बाबा! आप पानी के अन्दर नहीं जायेंगे, ठीक है, पानी के बाहर ऊपर में किनारे खड़े होकर मंत्रोच्चारण तो कर ही सकते हैं। पंडित जी तैयार हो गये।

दूसरे दिन यज्ञोपवीत और गंगा स्नान का शुभ मुहूर्त था। राजा के लड़के के साथ 5-6 सिपाही तथा पंडित जी गंगा स्नान को चले। गंगा किनारे पंडित जी खड़े होकर राजा के लड़के को पानी में तीन बार डूबकी लेने का निर्देश दिया। राजा के लड़के ने कहा - बाबा! मैं डूबकी तो लगा लूँगा,

परन्तु यज्ञोपवीत तो पानी में खड़ा होकर ही करना है, जैसा कि आपने बताया था। पंडित जी किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। तभी राजा के लड़के ने तुतली भाषा में बड़े प्यार से सुझाव दिया, बाबा! पानी में हमारे और आपके बीच में चारों तरफ गोलाकार में सिपाही खड़े रहेंगे। हम जल्दी-जल्दी डूबकी लगा लेंगे और आप मंत्रोच्चारण करते हुए यज्ञोपवीत के पश्चात् तुरंत पानी से बाहर आ जायेंगे। पानी भी तो ठेहुना के नीचे ही है। जब घड़ियाल आएगा, तो पहले सिपाही को ही पकड़ेगा, तब तक हम बाहर आ जायेंगे। लड़के की तुतली भाषा को सुनकर पंडित जी तैयार हो गये। उन्होंने राजा के लड़के को जल्दी-जल्दी डूबकी लगाने को कहा। राजा का लड़का एक डूबकी लगाया, दूसरी डूबकी लगाया और बाहर आया। जब तीसरी बार वह डूबकी लगाया, तो वह पानी से बाहर नहीं आया। सिपाही सब भयभीत होकर लड़के को इधर-उधर खोजने लगे। तभी लड़का पंडित जी का पैर पकड़कर गहरे पानी की ओर ले जाने लगा। अरे! तुम तो राजा साहब के लड़के हो, गहरे पानी में कहाँ ले जा रहे हो ? तभी लड़का बोला - मैं राजा का लड़का नहीं, तुम्हारा काल हूँ। यह सब रचना मुझे इसलिए रचना पड़ा कि मैंने तुम्हें तुम्हारे मौत के बारे में बता चुका था। अब तुम्हारी आयु पूरी हो चुकी है। इतना कहकर राजा को मौत अपने आगोश में ले लिया।

दोस्तों! मौत अदृश्य है। कब किस रूप में आयेगी, इसे कोई नहीं जानता। अतः जब तक मौत नहीं आती है, तब तक अपने जीवन को ईश्वर का सौगात समझें। प्रत्येक सुबह अपने जीवन का पहला दिन और नया बिहान समझें।

+++++



बेचारा

दुलारी शरण सिंह,
(वरीय लेखाकार)

यह शब्द बहुत ही मार्मिक शब्द है। जिस किसी व्यक्ति के मुख से यह शब्द प्रवाहित होता है, उस वक्त उस बेचारे व्यक्ति या जीव के प्रति किसी प्रकार का द्वेष, घृणा या नफरत का भाव नहीं होता, बल्कि उस व्यक्ति के लिए अफसोस होता है। उस समय यही लगता है कि काश उस व्यक्ति के साथ ऐसा नहीं होता। आदमी अपने गम को उस वक्त बिल्कुल महसूस नहीं करता, बल्कि बेचारे व्यक्ति के दर्द को अपना दर्द समझने लगता है। जिस व्यक्ति विशेष की घटना क्रम को शब्द रूप में देने की जुर्रत कर रहा हूँ, उसे मैंने बहुत ही नजदीक से महसूस किया है, परन्तु इस लेख में घटना का स्थान, नाम आदि बदल दिया गया है। इस घटना का संबंध किसी विशेष व्यक्ति, जाति को कष्ट देना नहीं है। यदि मेरी लेखन से किसी को कष्ट महसूस हो, तो मैं इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

पटना से सटे एक गाँव है, जिसका नाम है पीपरा। उस गाँव के एक बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे, जिनका नाम भोला था। कहने को तो वे बहुत ही साधारण परिवार से संबंध रखते थे, पर थे वे दिल के धनी। शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा, जो उनके पास जाकर अपना कष्ट थोड़ी देर के लिए भूल न जाता हो। दूर-दूर के गाँव तक

उनका नाम प्रचलित था। चढ़ती जवानी थी और हो भी क्यों नहीं, यह अवसर तो सबके जीवन में आता है। भोला बाबू के दो बेटे एवं एक बेटी थी। सरकारी नौकरी के साथ-साथ उनकी अपनी खेती भी थी। किसी बात की कमी शायद ही उनके पास हो।

दोनों लड़कों को अच्छी तालीम देने की कोशिश में वे अपने दोनों बच्चों को अपने से दूर रखकर जिन्दगी जीने को मजबूर थे। कहते हैं – “कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है”। चूँकि बेटी के प्रति उनकी सृझ-बूझ और लोगों की तरह बिल्कुल पुराने ख्यालात के कारण बेटी को पास के स्कूल में ही पढाया। उनकी बेटी मैट्रिक भी पास नहीं कर सकी। उन्होंने अपनी बेटी का विवाह अपने ही इलाके के एक गाँव में कर दिया। वे न कभी अच्छे कपड़े पहने और न कभी अच्छा भोजन किए। आस-पास के निवासियों से ही मनोरंजन एवं वाह्य खुशी पाने का सहारा था। दोनों बेटे भी पढ़ने के साथ-साथ अन्य कार्य करने में अच्छे थे। एक बेटा एग्रीकल्चर की पढ़ाई कर उसमें पी०एच०डी० किया। उसकी शादी भी हो गई, परन्तु वह नौकरी नहीं कर सका। इसके पीछे यही कारण था कि वह पी०एच०डी० करके बड़ी नौकरी की अभिलाषा में था, परन्तु छोटी भी हाथ से निकल गई। वह बेकार रहने लगा और

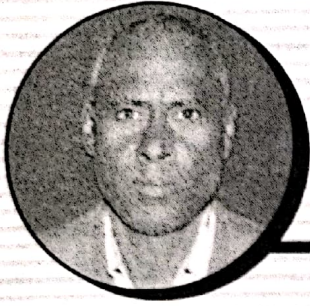
अन्त में वह नशा का शिकार हो गया। नशा के अलावे वह कोई और काम नहीं करता था।

बेचारा भोला बाबू जितनी खुशियाँ दूसरों को देते थे, अब उसमें कमी आने लगी। दूसरा बेटा पढ़ने में अच्छा था। वह जानवर की पढ़ाई कर अच्छे अंकों से पास भी हो गया। अब भोला बाबू के पुराने दिन लौटने लगे। वैसे वे अब तक सेवा निवृत्त हो चुके थे। छोटे बेटे की पढ़ाई खत्म होते ही उसकी शादी के लिए बरतुहार भी आने लगे। भोला बाबू का हौसला और बुलंद होने लगा। उसी गाँव के उन्हीं के परिवार के एक व्यक्ति छोटे लड़के के लिए एक रिश्ता ले आये। पूरा परिवार लड़की देखकर मुंहमांगी दहेज के साथ छोटे बेटे का रिश्ता तय कर दिया। रिश्ता तय करते समय भोला बाबू और उनके परिवार के लोग भूल गये कि इस मामले में उनके छोटे लड़के की भी कोई इच्छा होगी। लड़का भी ऐसा, जो अपनी बातों को किसी के सामने व्यक्त करने को तैयार नहीं। वह लड़का भी अपने कॉलेज की किसी लड़की से बेहद प्रेम करता था।

कॉलेज बंद होने के बाद जो बच्चे अपने घर को नहीं गये थे, वे सब अपने-अपने हॉस्टल में आ गये, उसमें भोलाजी का भी लड़का था। डॉक्टर था ही, मार्केट से बहुत सारी नींद की गोलियाँ खरीद ली और रात में खाकर जो सोया की वह फिर कभी उठा ही नहीं। भोला बाबू तो मानो दूट से गये, विशेष रूप से उनकी पत्नी भी मानो निर्जीव हो गई। खैर जीवन तो किसी

परिस्थिति में रुकती नहीं। घुड़न की जिन्दगी जीने को मजबूर हो गये भोला बाबू। कुछ वक्त गुजरा, उनकी पत्नी भी भगवान को प्यारी हो गई। अब घर में भोला बाबू के साथ उनके नशेड़ी बेटे एक बहू रह गये। नशेड़ी बेटे के कारण बहू का वह हाल था कि वह डर के मारे एक कोने में दुबकी रहती। ना वह ठीक से खाना बनाने व खिलाने का मौका पाती और ना ही किसी से बात कर पाती।

घर में नशेड़ियों का जमावड़ा इतना बढ़ गया कि भोला बाबू को बिल्कुल पसंद नहीं था। अब हारकर भोला बाबू अपने पटना के मकान छोड़कर गाँव में अकेले घर में रहने को लाचार हो गये। भोला बाबू का यह जीवन कुछ लोभियों के लिए रास नहीं आया। एक दिन रात में भोला बाबू के घर में कुछ लोग घुस गये। उनकी कीमती संपत्ति को हथियाने के ख्याल से उन्हें भय दिखाकर कोई कागज पर अंगूठा लगाने को मजबूर कर दिया और सफाई भी हो गया। उसके पश्चात् उन लोगों ने भोला बाबू की हत्या कर दी। दो दिन बीत जाने के बाद उनके घर से दुर्गंध आने लगी, तब कहीं जाकर इस बात का खुलासा हुआ कि अब भोला बाबू इस दुनिया में नहीं रहे। चारों तरफ से लोगों का हुजुम इकट्ठा हो गया और सबों का मुख से यही निकल रहा था “बेचारे भोला बाबू”!



मर्द

दुलारी शरण सिंह,
(वरीय लेखाकार)

पृथ्वी पर पाये जाने वाले सभी जीव-जन्तु की संरचना ईश्वर ने अपने हिसाब से सोच-समझकर किया है। सभी जीव-जन्तु मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं। एक नर और दूसरा मादा। दोनों की शारीरिक संरचना अलग होने के साथ-साथ शारीरिक क्षमता यानि शक्ति में भी भिन्नता पायी जाती है। नर प्राणी मुख्य रूप से शक्तिशाली/बलवान हुआ करता है, वहीं मादाओं में इसका अभाव नजर आता है। इसके पीछे ईश्वर का क्या राज है, वही जाने, पर जो कुछ भी अपने जीवन में आकलन कर पाया, उसी को शब्दों में पिरोकर आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

अपने जन्म के पश्चात् जब कुछ सोचने-समझने की क्षमता हुई, तो पाया कि नर प्राणी मुख्य रूप से मादा प्राणियों पर हावी हुआ करता है, विशेष रूप से मनुष्य योनि में, क्योंकि मनुष्य योनि ही एक ऐसी योनि है, जो दूसरे योनियों पर राज करता है। सृष्टि की ओर से मनुष्य को ऐसा वरदान मिला हुआ है। बचपन का मुझे याद आता है कि शायद ही कोई ऐसा घर होता होगा, जहाँ पुरुष, महिलायें व बच्चों में समानता रहती हो। पुरुष का खौफ घर की सभी औरतों एवं बच्चों पर एक समान हुआ करता था। इसका एक फायदा यह भी हुआ करता था कि संयुक्त परिवार बहुतायत रूप में मिला करता था। संयुक्त परिवार में पुरुष लोगों का घर में प्रवेश लगभग वर्जित

सा होता था और जब होता था, तो राजा के रूप में। पुरुष राजा की तरह अपने परिवार के सभी सदस्यों को एक समान देखा करता था।

परन्तु आज के पुरुषों में पुरुषत्व की कमी आ गई है। लगभग पतन हो गया है। मैं किसी भी रूप में स्त्रियों की स्वायत्तता के खिलाफ नहीं हूँ और न ही पहले जैसा पुरुषों के बर्ताव के पक्ष में, पर समान स्वायत्तता दोनों को मिलनी चाहिए। पर ना तो ऐसा पहले था और ना ही आज ऐसा प्रतीत होता है।

कहते हैं, समय परिवर्तनशील है। समय के साथ-साथ शायद बदलना भी जरूरी होता है, परन्तु परिवर्तन का मतलब अपना अस्तित्व खोना कतई नहीं हो सकता। आज लगता है कि इस परिवर्तित युग में मर्द अपनी मर्दानगी को भूल गया है। आज का मर्द अपने से कमजोर पर अत्याचार करना, सताना आदि अपनी महानता समझने लगा है, परन्तु वही मर्द दूसरी जगह अपने को उसी स्थिति में पाता है, तो सारी मर्दानगी वह भूल जाता है।

आज के सामर्थवान कहे जाने वाले जो पुरुष है वे कहीं-न-कहीं कमजोर व्यक्तियों के शक्तियों को निचोड़ कर ही सामर्थवान बने हैं, जिसका नतीजा यह हुआ कि कार्य की गुणवत्ता काफी निराशजनक हो गई।

आज शायद चापलूसों का जमाना आ गया है, जिसका परिणाम यह है कि उन

मर्दों को हर जगह चापलूसी करनी पड़ती है। किसी भी रूप में मैं चापलूसों को मर्द मानने को तैयार नहीं हूँ। मर्द तो वह होता है, जो अपनी बुद्धि, शालीनता और शक्ति के बल पर अपना सभी कार्य करे। उनमें इतनी सामर्थ्य होती है कि उन्हें किसी की चापलूसी करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सच को सच एवं झूठ को झूठ बोलने की क्षमता हो। इसके लिए उसे किसी पर निर्भर ना होना पड़े।

एक घटना मुझे याद आती है, जो इस बात की मिसाल है कि वास्तव में मर्द कौन होता है। वर्ष 1947 से पूर्व हमारे देश पर अंग्रेजों का शासन हुआ करता था। उन दिनों जो रोयल वायु सेना के नाम से जाना जाता था, वह आज भारतीय वायु सेना के नाम से जाना जाता है। उन दिनों एक व्यक्ति उसमें कार्यरत था, जिसका नाम था श्री औजला। छोटे परिवार से आने वाला वह व्यक्ति वायु सैनिक के पद पर कार्य किया करता था। वह तकनीकी पद पर कार्यरत रहने के कारण उसे विमानों की देख-रेख एवं मरम्मत का काम मिला हुआ था। काफी लगन के साथ कार्य करने वाला वह व्यक्ति कभी यह नहीं देखता था कि उसके साथ कोई और कार्य कर रहा है अथवा नहीं।

अंग्रेज शायद वास्तव में काफी बुद्धिमान हुआ करता था। उसकी पैनी नजर से शायद ही कोई बच पाता था। गर्मी के दिनों एवं चिलचिलाती धूप में औजला साहब को अकेले टारमेक (जहाँ विमान खड़ा होता है) पर काम करते देख एक अंग्रेज पदाधिकारी ने उससे पूछा, और लोग कहाँ है आदि और पूछकर चला गया। कुछ दिनों के पश्चात् पुनः यह घटना घटती है। उस अंग्रेज

पदाधिकारी को काफी आश्चर्य होता है और उसकी नजर में औजला साहब आ जाते हैं। तीसरी बार जब उसकी पैनी नजर वैसे ही कार्य करते उसपर पड़ता है, तब वह औजला साहब को अपने पास बुलाता है। कुछ बातें होती हैं और अन्त में औजला साहब को आदेश दिया जाता है कि वह कर्मचारी निवास स्थान से पदाधिकारी निवास स्थान में तुरन्त स्थानांतरण करें। उस दिन से औजला साहब कर्मचारी से पदाधिकारी हो गये। इतना ही नहीं, औजला साहब की लगन, मिहनत और ईमानदारी का प्रमाण जो अपनी आँखों के सामने देखा, वह इस प्रकार है।

एक दिन दिल्ली के पालम हवाई अड्डे के टारमेक पर एक विमान में अचानक आग लग गई। सर्व प्रथम औजला साहब की निगाह में वह दृश्य नजर आया और वे जान की बाजी लगाकर उस विमान की आग को बुझाने में लग गये तथा कामयाबी भी हासिल हुई। हमलोग मात्र मूकदर्शक बने रहे। यह घटना वर्ष 1980 की है। उसके उपरान्त शीर्ष पदाधिकारी ने उनके नाम को विशेष मेडल के लिए नामित करना चाहा। उस समय वे सेवा निवृत्त होने वाले थे। उन्होंने इसका सारा श्रेय एक वारंट ऑफिसर श्री सौकिन के नाम यह कहते हुए कर दिया कि यह कारनामा श्री सौकिन द्वारा किया गया है। कुछ दिनों में सौकिन साहब भी पायलट अधिकारी बन गये। महज दोनों एक ही धर्म से संबंधित थे। यह एक मिसाल है मर्द का। आशा करता हूँ कि हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ ऐसे ही कार्य करे और मर्द कहलाए।

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

सत्येन्द्र माँझी,
(एम 0 टी 0 एस 0)

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता” अर्थात् जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है, यानि वहाँ सुख, समृद्धि और शांति रहती है। यह बात प्राचीन काल में कही गई थी, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उस वक्त नारी का सम्मान नहीं होता था और न यह बात नारी के सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कही गई थी, बल्कि यह बात अनुभव से कही गई थी।

प्राचीन काल में नारी हमारे देश में समाज की बहुत ही सम्माननीय सदस्या थी। गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी और अपाला आदि प्राचीन काल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ थीं। प्राचीन काल से ही नारियाँ हमारे देश में पुरुषों के बराबर बैद्वती रही हैं और समाज के निर्माण कार्यों में अपना योगदान देती रही हैं।

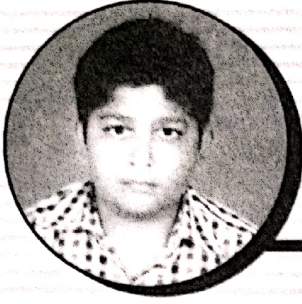
आज जब कहा जाता है कि महिलायें पुरुषों से कम नहीं है, तो इसलिए नहीं कि उनके प्रति दया भावना है, बल्कि उन्होंने इस बात को सिद्ध कर दिखाया है कि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसमें महिलाओं की भीगीदारी नहीं हो। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, प्रशासन हो, राजनीति हो, अर्थव्यवस्था, व्यापार, या तकनीक का क्षेत्र हो, हर जगह आपको महिलायें कार्य करती नजर आरेंगी। अब तो हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट तक पहुँचने,

अंतरिक्षयान की यात्रा करने के साथ-साथ पुलिस प्रशासन के क्षेत्र में भी महिलाओं ने सफलता अर्जित कर ली है।

आज चाहे हवाई जहाज उड़ाने का काम हो, रेल इंजन चलाने का, ऑटो-रिक्शा चलाने का या पेट्रोल पंप पर पेट्रोल भरने का ही काम क्यों न हो, हर काम अब महिलायें कर रही हैं। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हवाई जहाज के इंजन ठीक करने से लेकर स्कूटर ठीक करने तक के कामों में महिलायें दक्ष/सक्रिय हैं। इतना ही नहीं, अब तो उन्होंने पूरी दुनिया में सिद्ध कर दिखाया है कि महिलायें पुरुषों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, ईमानदार तथा कुशल प्रशासक हैं। इसलिए नारी को लक्ष्मी का रूप माना गया है।

+++++





आत्मविश्वास

प्रियांशु, पुत्र-
श्री सुरेश पाठक,
(एम०टी०एस०)

आत्मविश्वास एक ऐसा शब्द है जिसके बिना हमारा जीवन अधूरा है। अगर हमें खुद पर विश्वास है तो हम कोई भी मंजिल आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। आत्मविश्वास हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक ऐसा शब्द है, जिसे हम अगर अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो हम कोई भी कार्य करने में समर्थ होंगे।

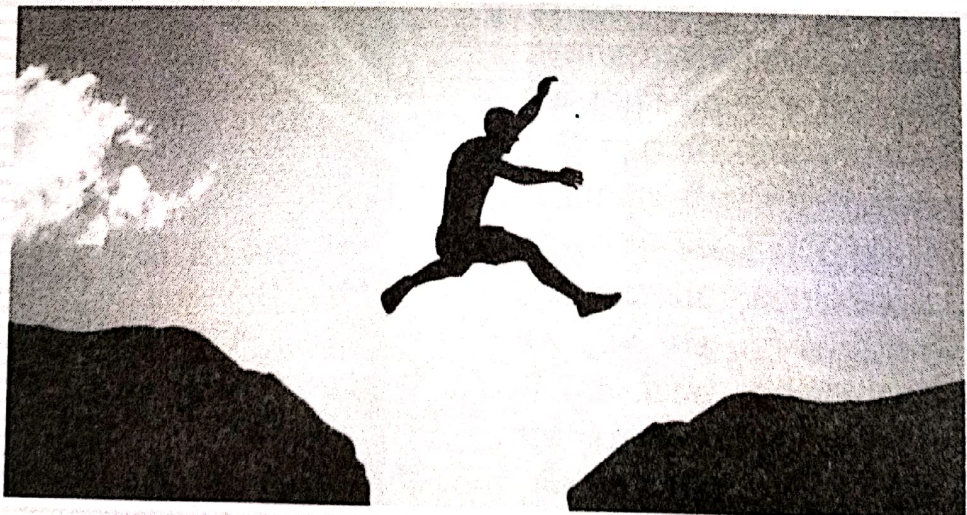
आत्मविश्वास जीवन के हर मोड़ पर साथ देता है। अगर हमें अपने पर विश्वास न हो तो हमें हर काम कठिन लगता है।

आत्मविश्वास को अपने जीवन का हिस्सा बनाने वाले लोग हमेशा सफल होते हैं। इसी का एक उदाहरण हैं युवा क्रिकेटर युवराज सिंह, जिसने अपने जीवन में कभी हार नहीं मानी। अपने जीवन में कड़ी मेहनत करने के बाद सफल बन युवराज को जब पता

चला की उन्हें कैंसर है, तो वह बहुत दुःखी हुए। लेकिन उन्होंने अपना आत्मविश्वास नहीं खोया और बोस्टन में हुए ऑपरेशन और उसके बाद लगभग तीन महीनों तक चले इलाज के बाद वह एकबार फिर मैदान में उतरने के लिए तैयार हो गए। युवराज सिंह का जीवन हमारे लिए काफी प्रेरणादायक है। हमें अपने जीवन में हार नहीं माननी चाहिए और ईश्वर द्वारा ली गई परीक्षा पर जीत हासिल करनी चाहिए।

ऐसा उदाहरण अपने कार्यालय में भी उपलब्ध है। श्री राजेन्द्र कुमार (पर्यवेक्षक, हिन्दी कक्ष) कैंसर के तीसरे/चौथे स्टेज की लड़ाई लड़कर सफलता पूर्वक जिन्दगी का सामना करते हुए हमारे बीच में सकुशल कार्य कर रहे हैं। ऐसे लोगों से हमें सीख लेनी चाहिए।

+++++





दहेज एक अभिशाप

प्रियांशु, पुत्र-
श्री सुरेश पाठक,
(एम0टी0एस0)

आरती एक मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी लड़की थी। उसके अलावा उसके परिवार में तीन लोग और थे:- माँ, पापा और उसका भाई। आरती बचपन से ही पढ़ाई में अव्वल थी। साथ ही घर के काम में माँ का हाथ भी बटाती थी। हर काम में आगे रहती थी। बचपन से ही उसका सपना इंजीनियर बनने का था। मगर हमारे समाज में कुछ बुराइयों में एक यह भी है कि लड़की को हमेशा लड़कों से कम आँका जाता रहा है।

आरती के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। बारहवीं के बाद उसने इंजीनियर बनने की इच्छा जताई। लड़की होने के कारण और दुनिया की बातों के डर से घर वालों के द्वारा बाहर नहीं भेजा गया। यही नहीं, किसी भी क्षेत्र में उसे समर्थन नहीं मिल पाया और अन्त में उसका दाखिला उसी शहर के किसी कॉलेज में करा दिया गया।

आरती हमेशा से कुछ अलग करना चाहती थी। मगर घरवालों के ज़िद के आगे उसने उनकी बात मान ली और कॉलेज करने लगी। जैसे-जैसे समय बीतता गया उसने समाज में चल रही बुराइयों को देखा और हमेशा उन बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाना चाहा। मगर हर कदम पर उसकी बातों को नज़रअंदाज़ किया गया। स्नातक की पढ़ाई पूरी होने के बाद लड़की ने पापा को नौकरी करने की इच्छा जताई, मगर एक बार फिर घर वालों का कुछ और ही फैसला था और वह फैसला था शादी का। आरती चौंक गई, उसने शादी टालने की पूरी कोशिश की। मगर माँ-पापा ने उसे

बहुत समझाया-बुझाया और कभी-कभी धमकी भी दी कि अगर वह शादी से इन्कार करती है तो वह अपने माता-पिता का मरा मुँह देखेगी। आरती अपने माता-पिता से बहुत प्यार करती थी, इसलिए शादी के लिए उसने हाँ कर दी।

फिर पापा ने किसी रिश्तेदार के पसंद के डॉक्टर लड़के से शादी तय कर दी और एक बहुत बड़ी राशि दहेज के रूप में दिया। ये सोचकर कि शादी के बाद आरती बहुत खुश रहेगी। दहेज के अलावा घर की जरूरतों की सारे समान के साथ आरती अपने घर से विदा हुई। आँखों में आँसू लिए अपने नए जीवन की शुरुआत करते हुए सबकुछ बहुत ही अच्छा चल रहा था। आरती को भी लगने लगा की उसने सही फैसला किया है।

समय बीतता गया। शादी के एक साल बाद आरती ने एक बेटी को जन्म दिया, इसके बाद भी सब कुछ अच्छा ही था, मगर असली मुसीबत तो तब शुरू हुई, जब उसने दूसरे बच्चे को जन्म दिया। दूसरी बार भी उसने बेटी को ही जन्म दिया, तब तो जैसे उसकी जिन्दगी में मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। अचानक से उसके ससुराल वालों ने उससे मुँह मोड़ लिया। सबका व्यवहार धीरे-धीरे खराब होने लगा। बात-बात पर आरती के ससुराल वाले उसे ताना मारने लगे की लड़के को जन्म नहीं दे सकती।

बात तो तब और बिगड़ गई जब लोगों ने उसके पति की दूसरी शादी करने की ठान ली। आरती ने पूरी कोशिश की कि सब मान जाए और शादी टाल दें। ससुराल वाले मान तो गए, मगर बदले में और ज्यादा दहेज की फिर

से मांग करने लगे। जो आरती के पिता देने में असमर्थ थे। इस वजह से शादी की बात फिर से शुरू हो गई। हैवानियत की हद तो तब हो गई, जब आरती के ससुराल वालों ने उसे मारने की कोशिश की। कभी जला के तो कभी एसिड पिला के मारने की कोशिश करने लगे। आरती बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाती रही। शादी का दिन आ गया। इधर आरती की मुसीबतें कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी। तंग आकर आरती ने पूरे परिवार को जहर देकर मार डाला।

अब आप बताइए की पूरी कहानी में असली गुनहगार कौन है ?

1. आरती, जिसने सामूहिक हत्या की।
2. उसकी, जिन्होंने आरती के साथ जानवरों से भी बदतर सलूक किया।
3. या उसके घर वालों की, जिन्होंने दहेज देकर एक ऐसे घर में रिश्ता कर दिया जहाँ औरत का मतलब

बस लड़का पैदा करना था।

एक और सवाल निकल के सामने आया है

“यह दहेज देना आखिर क्यों ?”

हम अपनी बेटियों के लिए दहेज देकर क्या खरीदना चाहते हैं ?

“दुल्हा या खुशियाँ”

लोग दहेज देकर यही सोच लेते हैं कि हमारी बेटी बहुत खुश रहेगी, मगर यह सोच कि जिन पैसे के भूखों के पास आप अपनी बेटी भेज रहे हैं, क्या गारंटी है कि एक बार दहेज से उनका पेट भर जायगा और आपकी बेटी खुश रहेगी.....

जरा सोचिये.....

+++++





नक्सलवाद का गाँधीवाद समाधान

धीरज कुमार,
(लेखकार)

आज का सम्पूर्ण भारत आतंक के साये में है। देश के विभिन्न जिलों में आये दिन नक्सलियों द्वारा मचाये गये आतंक देखने-सुनने को मिलते हैं, चाहे वह आतंक आंतरिक हो या बाह्य रूप से। हमारे जेहन में सवाल उठना लाजमी है कि नक्सली हैं कौन और उनकी माँग क्या है? वस्तुतः नक्सलवाद सत्ता की चाहत नहीं, न ही निर्दोष की जान लेना है और न समाज को परेशान करना है, बल्कि यह एक आन्दोलन है। नक्सलवाद एक मिशन है, जिसका उद्देश्य अपने अधिकारों के लिए सचेत रहते हुए अपराधों के विरुद्ध आवाज बुलंद करना है। भले ही आज का नक्सलवाद प्रशासनिक अड़ियलपन और सरकारी रवैये के कारण पूर्णतः भटक गया हो।

यह एक गंभीर चिन्तन का विषय है कि कहीं यह कार्य अपना उल्लू सीधा करने वालों की करतूत तो नहीं। हमारे राष्ट्रनेता का कर्तव्य है कि वे गाँधी, सुभाष, भगत, लोहिया आदि की तरह जनता के लिए आदर्श बनें। पूरे देश को अपना परिवार समझें और सभी क्षेत्रों में विकास करें, ताकि जनता को आपके अपनेपन का अहसास हो, क्योंकि आज हमारे बीच कोई ऐसा नेता नहीं है, जो हमारा आदर्श हो सके (चाहे वह केन्द्र का

हो या राज्य का)।

गाँधीजी के एकादश व्रत को जन-जन तक फैलाने के लिए सरकारी स्तर पर व्यवस्था सुनिश्चित की जाय, ताकि लोग सत्य, अहिंसा, असंग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, स्वदेशी, अस्पृश्यता, अस्वाद, शरीर-श्रम एवं सर्वधर्म समभाव को समझें और व्यवहारिक रूप में मानने को तैयार हों। इसके लिए सबसे पहली तैयारी हमारे बुद्धिजीवि, प्रशासनिक अधिकारी एवं राजनेताओं की हो, जो अपने कर्तव्यों का निर्वहन गाँधीजी के बताये गये रास्ते पर शत-प्रतिशत ईमानदारी पूर्वक कर रहे हों। साथ-ही-साथ देश के विभिन्न पदों पर आसीन जिम्मेदार अधिकारी एवं कर्मचारी भी अपने कर्तव्य का निर्वहन मानवीय मूल्य का खयाल रख कर करें, तो देश व समाज की दिशा स्वतः तय होने लगेगी।

+++++





तनाव प्रबंधन में योग का महत्व

धीरज कुमार,
(लेखाकार)

योग के अनुसार मानसिक रोग का मुख्य कारण चित्त का चंचल होना है। विज्ञान बताता है कि प्रतिक्षण 45,000 आवेग मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं, जिससे मस्तिष्क थकान अनुभव करने लगता है। व्यक्ति तनाव के कारण मनोकायिक रोगों से ग्रस्त हो जाता है। महर्षि पतंजलि ने योग को “योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः” कहा है अर्थात् योग चित्त को वृत्तियों से बचाता है। योग आत्मानुशासन का प्रशिक्षण देता है। योग को “अथयोगानुशासनम्” की संज्ञा दी गई है, क्योंकि योग अनुशासन से ही आरम्भ होता है। यह मन, चित्त एवं शरीर सभी पर संयम रहना सिखाता है। योग द्वारा संवेगों एवं इच्छाओं पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है, जिससे कि विवेकशील और तर्कसंगत निर्णय लेने में बाधा नहीं आती। योग के नियमित अभ्यास से जीवन आनन्दमय हो जाता है।

शारीरिक तनाव के लिए सूर्य नमस्कार का अभ्यास उत्तम है। इससे पूरे शरीर में रक्त संचार होता है। चक्रासन मेरुदण्ड से संबंधित समस्याओं के लिए है। इसी तरह स्नायुतंत्र के लिए सिंहासन एवं पेट की बीमारियों के लिए पश्चिमोत्तानासन तथा फेफड़े की कमजोरी दूर करने के लिए भुजंग आसन का अभ्यास है। ये सभी अभ्यास शरीर में जमे हुए अम्ल तथा तनाव की परतों को दूर करते हैं। इसलिए विश्व के अनेक राष्ट्रों में योग से संबंधित अनेक प्रयोग एवं अनुसंधान

किए जा रहे हैं।

भारत में भी उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, दमा, मधुमेह एवं पाचनतंत्र से संबंधित रोग आदि के ऊपर अनेक प्रकार के शोध किए जा चुके हैं। इंग्लैंड में अभी एड्स पर शोध किया जा रहा है। इन सभी बीमारियों का इलाज योग के सरल अभ्यासों के द्वारा किया जा रहा है। सफलता भी मिल रही है। साथ ही योग के अभ्यासों से मनोव्यथा को भी दूर करने का प्रयास अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन आदि राष्ट्रों में किया जा रहा है। डा० और्निश ने लगभग 300 हृदय रोगियों पर योग के 24 दिन से लेकर 3 महीने तक के प्रभाव को देखा और पाया कि जटिल से जटिल हृदय रोग, जिसके लिए डॉक्टर सर्जरी ही मात्र उपाय बताते हैं, का निदान हुआ और रोगी रोग मुक्त हो गये।

मनसिक तनाव कम करने के लिए योगनिद्रा तथा ध्यान के अभ्यास को सबसे उपयुक्त माना गया है। योगनिद्रा का नियमित अभ्यास व्यक्ति को स्वयं के प्रति सजग बनाता है तथा चेतना के स्तर पर भी विभिन्न अवस्थाओं की जानकारी देता है ताकि सूक्ष्म से सूक्ष्म तनाव को भी दूर किया जा सके। ध्यान का नियमित अभ्यास करने से वाह्य संवेदना से सुरक्षा और लक्ष्य के प्रति एकाग्रता उत्पन्न होती है, जिससे व्यक्ति मानसिक तनाव से बच जाता है। इस प्रकार तनाव प्रबंधन के लिए योग एक वरदान है।

+++++

एक दिन का स्वर्ग

तेज नारायण पाण्डेय,
(सहायक प्रबंधक "कैटीन")

बात आदिकाल की है। प्राचीन काल में एक शराबी था। वह नित्य दिन शराब पीना, जुआ खेलना यही उसकी दिनचर्या थी। उसकी पत्नी और माता-पिता पूर्व में ही स्वर्ग सिधार चुके थे। वह निःसंतान ही अकेले रह रहा था। स्वाभाविक है, जीवन जीने के लिए कोई सहारा चाहिए।

एक समय की बात है शराब पीते, जुआ खेलते-खेलते उसका संबंध एक वेश्या से हो गया। वह प्रति दिन जुआ खेलता और जुआ में जीते हुए पैसे से शराब सेवन करता। उसका रात्रि विश्राम वेश्या के साथ बीतता था। एक दिन वेश्या ने उससे सोने के एक हार की माँग की। वह सवेरे उठा और बिना कुछ खाये पिये जुआ के अड्डे पर बैठ गया। सचमुच उस दिन वह अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक आमदनी कर ली और उसने वेश्या के लिए एक कीमती हार खरीद कर शराब के नशे में धूत होकर उसके कोठे की ओर चल पड़ा।

और दिनों की अपेक्षा उसने उस दिन अधिक शराब पी ली थी। उससे चला नहीं जा रहा था। अचानक वह एक पत्थर से टकराकर गिर पड़ा। उसका एक साथी, जो शराब के नशे में था, होशो हवास में चल रहा था। उसे गिरा देख उठने की बहुत कोशिश की, पर उठा न सका। उसने अपने साथी से बोला - यार! ये हार आज ही उसे पहुँचा

देना, क्योंकि ये हार आज ही उसे देने का मैंने वादा किया था। इतना कहकर वह "हे राम" बोला और वहीं ढेर हो गया। जीवन में वह कभी न तो भगवान का नाम लिया था और न कभी पूजा अर्चना की थी।

उसकी आत्मा को लेकर यमराज ने धर्मराज के पास पहुँचा दिया। धर्मराज चित्रगुप्त जी से बोले - महाराज! इसकी जीवन कुण्डली देखें कि इसने कितना पाप और कितना पुण्य किया है। चित्रगुप्त जी ने उसके जीवन का पन्ना उलटकर देखा, तो कहीं पुण्य नजर नहीं आया। वे धर्मराज से बाले - महाराज! इसने तो कहीं पूण्य ही नहीं किया है, यह नरक का भागी है। धर्मराज ने उसकी कुण्डली को पुनः जाँच करने को कहा। चित्रगुप्त महाराज ने जब उसकी कुण्डली की गहराई से पुनः जाँच की तो पाया कि अंतिम समय में उसके मुँह से "हे राम" निकला था।

चित्रगुप्त जी ने कहा - महाराज, इसे एक दिन का "स्वर्ग" और शेष अन्य दिन नरक में जाना चाहिए।

धर्मराज बोले - इससे पूछें कि वह एक दिन के लिए पहले "स्वर्ग" जाना चाहता है या नरक के बाद स्वर्ग।

चित्रगुप्त जी ने पूछा - बताओ, तुम्हें क्या पसंद है? पहले एक दिन के लिए स्वर्ग जाओगे या

नरक भोगने के बाद स्वर्ग ?

शराबी सोचा - क्यों न एक दिन का स्वर्ग पहले ही भोग लूँ, फिर तो नरक में रहना ही है।

शराबी ने कहा -

महाराज, मुझे एक दिन का स्वर्ग ही पहले दिया जाय।

उसे यमराज के निदेशानुसार एक दिन का स्वर्ग मिला। उसने स्वर्ग जाकर एक दिन में इतना दान-पुण्य किया कि उसकी अवधि एक माह और बढ़ गई। फिर उसने और अधिक दान-पुण्य कर यश की प्राप्ति करने लगा। इसके दान-पुण्य और यश की कीर्ति से स्वर्ग के अधिकारियों को चिंता होने लगी।

उन्हें क्रोध और द्वेष भी होने लगा। उन्होंने स्वर्ग के अधिकारी भगवान विष्णु से हाथ जोड़कर विनती की कि “भगवन”! ये तो अनर्थ हो जाएगा। इसके दान पुण्य करने से स्वर्ग का खजाना ही खाली हो जाएगा। इसपर कुछ विचार करें।

भगवान विष्णु ने उसके दान-पुण्य को देखते हुए अक्षय पुण्य का भागी माना एवं उसे नरक से मुक्ति दिलाने की कृपा की।

+++++





धर्म

भारत भूषण झा,
(वरीय लेखी अधिकारी)

धर्म शब्द “धृ” धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है धारण करना। मनुष्य को जो धारण करना है, उसे धर्म कहते हैं। मनुष्य प्रारम्भ से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है। उसकी जिज्ञासा इस विश्व ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत अन्तरिक्ष सहित अन्यान्य विषयों में आविष्कार की ओर रही है। मनुष्य का आविष्कार मुख्यतः दो दिशाओं की ओर रहा है, पहला आध्यात्मिक और दूसरा भौतिक। भौतिक आविष्कार का अर्थ वैसे आविष्कार से है, जो विश्व ब्रह्माण्ड के दृश्य जगत (नेत्र के द्वारा देखे जाने वाले) से संबंधित है, परन्तु आध्यात्मिक आविष्कार का अर्थ वैसे आविष्कार से है, जो विश्व ब्रह्माण्ड के अदृश्य जगत (ज्ञान नेत्र से देखे जाने वाले) से संबंधित है। भौतिक क्षेत्र के आविष्कारक वैज्ञानिक कहलाते हैं जबकि आध्यात्मिक क्षेत्र के आविष्कारक ज्ञानी या मनीषी कहलाते हैं, जो अपने शरीर, मन एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण करने की विधि को धर्म के रूप में प्रतिष्ठापित करते हैं।

आध्यात्मिक आविष्कार की पराकाष्ठा मनुष्य ने पूर्व में ही प्राप्त कर लिया है, परन्तु भौतिक आविष्कार की पराकाष्ठा प्राप्त करने के लिए अभी संघर्षरत है। वस्तुतः आध्यात्मिक एवं भौतिक आविष्कार की पराकाष्ठा एक ही सीमा पर समाप्त होती है, जिसे

ईश्वरीय सत्ता कहते हैं। मनुष्य ईश्वरीय सत्ता से जब एकाकार होता है, तभी उसे आध्यात्मिक उन्नति की चरम सीमा प्राप्त होती है। ऐसा तभी होता है जब मनुष्य धर्म के नियमों का पालन करता है। धर्म के अन्तर्गत नियमों की मूल भावना है कि मनुष्य परोपकार की भावना रखते हुए झूठ, चोरी, नशा, हिंसा और व्यभिचार से बचे।

आदिकाल में धर्म, विज्ञान एवं अन्यान्य विषयों से संबंधित वैदिक सभ्यता पृथ्वी पर विकसित हुई। उस समय इकलौता वैदिक धर्म पृथ्वी पर रहा। उस अवधि में ही वेदों का पदार्पण हुआ। वैदिक धर्म में वेदांत का अद्वैत सिद्धांत प्रमुख है जिसका अर्थ है कि ईश्वर निर्गुण, निराकार एवं एक हैं। अनेकानेक विद्वानों एवं आध्यात्मिक अन्वेषकों ने इस पर विशद व्याख्या की है। ये वेद संसार के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ एवं उसकी अमूल्य निधि हैं, जो मनुष्य जाति के कल्याण हेतु हैं। सम्प्रति जर्मनी जैसे कुछ विकसित देशों में इन वेदों पर शोध हो रहा है। वैदिक सभ्यता में न स्त्री-पुरुष में भेद-भाव था और न किसी प्रकार की जातिप्रथा। वैदिक सभ्यता के बाद विश्व के कई भागों में अलग-अलग धर्मों या मतों का प्रचलन हुआ, जो निम्नलिखित हैं:-

- 1- हिन्दू धर्म या मत - हिन्दू धर्म या मत लगभग दस हजार वर्ष पूर्व से

है। वैदिक सभ्यता के अन्तिम दौर में आर्य और अनार्य में संघर्ष हुआ। आर्य वैदिक धर्म के अनुयायी थे और अनार्य उसके विपरीत। नई सभ्यता एवं संस्कृति का विकास सबसे पहले भारत देश के सिन्धु घाटी में प्रारम्भ हुआ। उसी समय सिन्धु घाटी में वैदिक धर्म के अनुयायियों द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार के साथ कुछ विशेष जीवन पद्धति का प्रचार-प्रसार हुआ, जिसे बाद में हिन्दू धर्म या हिन्दू मत कहा जाने लगा। वस्तुतः सिन्धु घाटी से ही हिन्दु धर्म या मत का प्रचार प्रारम्भ हुआ। अतः सिन्धु का अपभ्रंश हिन्दू हुआ माना जाता है। इस धर्म में मानव जीवन का अन्तिम ठिकाना शाश्वत सत्य में मिल जाना कहा गया है।

जिस प्रकार जीवन के बाद मृत्यु निश्चित है, उसी प्रकार मृत्यु के बाद दुबारा जीवन निश्चित है। यह प्रक्रिया तबतक जारी रहती है, जबतक कि आत्मा परमात्मा में विलीन न हो जाय। इसे मुक्ति या मोक्ष कहा गया है। हिन्दू धर्म में गुण और कर्म के आधार पर जाति प्रथा निर्धारित की गई थी। नारियों पर कुछ प्रतिबंध लगाए गये थे आदि। समय, स्थान और परिस्थिति के अनुसार शुरू में यह ठीक रहा हो सकता है, परन्तु इनमें बाद में कट्टरता आती गई, स्वरूप बदलते गये और जिसके कारण

अन्य धर्मों या मतों का उदय होना प्रारम्भ हो गया। यद्यपि समय-समय पर धर्म की मूल बात वेदान्त का अद्वैत सिद्धांत को समझाने के लिए कई महापुरुष पृथ्वी पर अवतरित होते रहे, जैसे-आदि शंकराचार्य, विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, दयानंद सरस्वती आदि।

2- यहूदी धर्म या मत - लगभग तीन हजार वर्ष से यहूदी धर्म दुनिया में है। यहूदी मतानुसार उनके अनुयायी ईश्वर के बहुत समीप हैं और उनके बेटे हैं। वे नरक की आग में नहीं जायेंगे। वे ईश्वर की चुनी हुई जाति हैं और संसार में सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ हैं। उनकी परलोक में सफलता और मुक्ति सुनिश्चित है।

3- जैन धर्म या मत - यह धर्म या मत लगभग दो हजार छः सौ वर्षों से इस दुनिया में है। इस धर्म में शरीर को भौतिक पदार्थ माना गया है। मनुष्य की आत्मा इसमें कैद है। आत्मा के छुटकारा के लिए आवश्यक है कि कठोर तपस्या की जाय। इस सिलसिले में तरह-तरह के कानून, सिद्धांतों और नियमों की बहुत सूचियाँ हैं, जो जैन मत के अनुसार मुक्ति के अभिलाषियों के लिए उनका अनुपालन अनिवार्य है।

4- बौद्ध धर्म या मत - यह धर्म या मत लगभग दो हजार पाँच सौ वर्षों से है। गौतम बुद्ध ने निर्वाण की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार जीवन दर्शन की दृष्टि से मुक्ति या निर्वाण के लिए इच्छाओं से छुटकारा पाना ही पर्याप्त है। प्रत्येक व्यक्ति

अपने व्यक्तिगत प्रयासों और नैतिक नियमों की शिक्षा को अपनाकर मुक्ति पा सकता है। निर्वाण अत्यंत आनंद की दशा को प्राप्त करना है, जो कामनाओं की त्याग करने से प्राप्त होती है। इससे मनुष्य पुनर्जन्म और मृत्यु चक्र से छुटकारा पाता है।

5- इसाई धर्म या मत - दो हजार वर्ष से कुछ अधिक वर्षों से इसाई धर्म या मत इस दुनिया में मौजूद है। इस मत के अनुसार इसा मसीह ने अपनी मृत्यु से मानवता के अनादिकालिक पाप का प्रायश्चित्त करके उसकी आत्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। मसीह मानवता के मुक्तिदाता थे। उनसे ईमानदारी से प्रेम करनेवाले लोग पापों की गंदगियों से पवित्र होकर आकाशीय साम्राज्य (मुक्ति और सफलता) की परिधि में प्रवेश कर जाते हैं।

6- इस्लाम धर्म या मत - हजरत मुहम्मद द्वारा मनुष्यों की सफलता और मुक्ति के संबंध में मानव जाति के मार्ग दर्शन के लिए अल्लाह की ओर से इस्लाम धर्म की स्थापना की गई। यह एक हजार चार सौ वर्षों से प्रचलित है। इस मत के अनुसार मनुष्य संसार में अल्लाह का बंदा और उसका प्रतिनिधि है। वह संसार के किसी चीज का मालिक नहीं है। सम्पूर्ण जगत की सारी चीजों का स्वामी और मालिक

सिर्फ अल्लाह है। अल्लाह ने मानव जाति को अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर उसे जगत की चीजों पर उपभोग का अधिकार प्रदान किया है। इसलिए हर मनुष्य के लिए अनिवार्य है कि वह दुनिया की हर चीज का उपयोग और उपभोग अल्लाह की मर्जी के मुताबिक करे क्योंकि हर इंसान को परलोक में हर उस चीज के बारे में हिसाब देना होगा, जिसका उपयोग और उपभोग उसने किया होगा।

मनुष्य को सांसारिक जीवन सामयिक और अस्थायी रूप से परीक्षा और आजमाइश के रूप में और परलौकिक जीवन की सफलता और मुक्ति की तैयारी के लिए प्रदान किया गया है। मनुष्य को इस जगत में पैदा करने का उद्देश्य है, एक और केवल एक ईश्वर की इबादत, उपासना और उसका आज्ञापालन। जिस व्यक्ति के अच्छे कर्मों का पलड़ा भारी होगा, वह शाश्वत आनंद और मुक्ति पाएगा। इसके विपरीत जिसके बुरे कर्मों का पलड़ा भारी होगा, वह असहनीय दुःख का भागी होगा। इस लोक में अल्लाह और उसके रसूल की मर्जी और इच्छाओं के अनुसार जिन्दगी गुजारने वाले सत्यनिष्ठ, ईमानदार और सत्कर्मों लोगों को ही सफलता, मुक्ति और शाश्वत आनंद की प्राप्ति होगी।

7- सिक्ख धर्म या मत - सिक्ख धर्म या मत लगभग साढ़े पाँच सौ वर्षों से संसार में प्रचलित है। सर्वप्रथम गुरुनानक ने इस मत या धर्म का

प्रतिपादन किया। उन्होंने हिन्दू धर्म में आई खामियों को दूर करने एवं उसकी रक्षा के लिए सिक्ख धर्म की स्थापना की थी। इसमें भी गुरु के बताये रास्ते पर चलने से जीवन से मुक्ति की बात कही गई है।

समय के अन्तराल में सभी धर्मों में कुछ-न-कुछ दोष प्रवेश करते गये। जो धर्म के मुख्य उद्देश्य थे, लोगों को विलग करने लगे। आज स्थिति यह है कि लोग धर्म के नाम पर एक दूसरे की जान लेने को आतुर हैं। यह धर्म का दोष नहीं है। जैसे हंस दूध में से दूध का अंश पीकर जल का अंश त्याग देता है, उसी प्रकार हमें धर्म के मूल उद्देश्य को ही पकड़ना चाहिए। यदि निष्पक्ष होकर हम संसार के

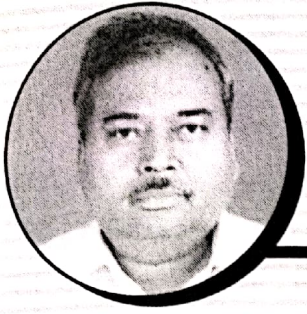
सभी प्रचलित धर्मों या मतों का विश्लेषण और अध्ययन करें, तो ज्ञात होता है कि सभी धर्म एक स्वर से यही मूल संदेश दे रहे हैं कि उपकार करना पुण्य है और अपकार करना पाप है। जो इसका पालन करते हैं वे ही धर्म के सही राह पर हैं और जो इसका पालन नहीं करते, वे ही अधर्म और पापी हैं, चाहे वे किसी भी धर्म का मानने वाले हों। अतः हमें इस विषय पर आत्म विश्लेषण करते हुए हृदय से विचार करना चाहिए।

+++++



Covers @ FirstCovers.com

**MAZHAB NAHI SIKHATA, AAPAS ME BAIR RAKHNA
HINDI HE HAM' WATAN HE HINDUSTAN HAMARA**



माया के जाल में

प्रभाष चन्द्र,
(वरिय लेखकार)

आज हमारा प्यारा भारत देश का हर इंसान माया के जाल में फँसता नजर आ रहा है। पैसे की ओर लोग बेतहाशा भाग रहे हैं, पैसे का आगमन चाहे कैसे भी क्यों न हो। लखपति-करोड़पति, करोड़पति - अरबपति, अरबपति - खरबपति तथा उससे भी आगे के पति बनने की दौड़ में किसी भी प्रकार के हथकंडे अपनाने से लोग बाज नहीं आ रहे। वह भी तब जबकि हाथ मलते हुए सबकुछ छोड़ कर खाली हाथ जाना है। यदि साथ में कुछ ले जाने की छूट मिली होती, तो लोग और क्या नहीं कर गुजरते।

माया के चक्कर में बड़े-बड़े पदों पर बैठे लोग देश की सुरक्षा के साथ-साथ संरक्षा से भी खिलवाड़ करने से बाज नहीं आ रहे हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण है देश की सीमावर्ती इलाकों के राज्यों में मादक पदार्थों की तस्करी। इसके कारण वहाँ के युवाओं को मादक पदार्थों के कैद में बताया जाता है, जबकि देश की सुरक्षा एवं संरक्षा हेतु उन प्रदेशों से आने वाले युवाओं को अबतक देश का कर्णधार समझा जाता रहा है तथा वे देश की सेवा में निर्भीकता से अग्रिम पंक्ति में लगे रहे हैं।

बड़े-बड़े पदों पर आसीन लोग, जिन्हें देश हित के लिए बड़ी-बड़ी

जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं, भ्रष्टाचार में आकण्ट डूबे पाये जाते हैं। हाल के दिनों में उच्च पद पर आसीन पदाधिकारियों, शिक्षाविद् चाहे वह स्वास्थ्य शिक्षा से आते हों, उच्च शिक्षा से आते हों या सामान्य शिक्षा से, भ्रष्टाचार के नये कीर्तिमान बनाते हुए अपनी जेल यात्रा करने को मजबूर हुए हैं। यहाँ तक कि जिन लोगों के कंधों पर भ्रष्टाचार के रोकथाम की जिम्मेवारी सौंपी गई है, वे भी माया के जाल से अछूते नहीं रहे हैं। माया के चक्कर में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य सेवा वर्गों को इस तरह से व्यवसायीकरण किया गया है कि प्रतिभायें दम तोड़ती नजर आ रही हैं, जबकि पैसे वाले बिना प्रतिभा के ही परीक्षाओं में उच्च प्रतिभा के स्वामी घोषित कर दिए जाते हैं।

आये दिन देश के नामी प्रतियोगी परीक्षाओं में मुन्ना भाईयों के पकड़े जाने की खबरें आती रहती हैं, फिर भी माया के चक्कर में शामिल लोग अपनी हरकतों से बाज नहीं आते। वे इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ रहते हैं कि अपने इस कुकृत्य से देश को कितना नुकसान पहुँचा रहे हैं। जहाँ सरकार की प्राथमिकताओं में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के उच्च स्थान पर होने के बावजूद सरकारी स्कूल, कॉलेजों एवं अस्पतालों को सुनियोजित तरीके से खस्ताहाल बनाया जा रहा है, वहीं प्राइवेट स्कूलों तथा अस्पतालों की चमक देखने लायक होती है, जहाँ पर अनावश्यक रूप से मोटी राशि लेकर सेवायें

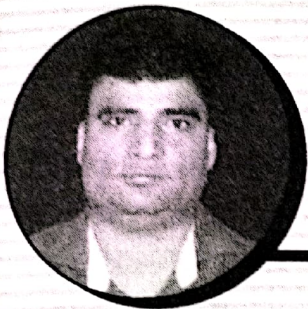
दी जाती हैं, इसकी रोक-थाम के लिए सरकार की तरफ से ठोस पहल की आवश्यकता है। ऋषि, मुनियों एवं तपस्वियों के इस देश में जहाँ नैतिक शिक्षा का बोल-बाला रहा है, वहीं जब बी०बी०सी० लंदन की हिन्दी प्रसारण सेवा से इस विषय में यह घोषणा की जाती है कि अब चलें घोटालों का देश, तब उस समय सिर शर्म से झुक जाता है।

समाज में हर कोई तरक्की करना चाहता है, परन्तु इसके लिए धनात्मक सोच वाला रास्ता अख्तियार करना देश हित में होगा। माया का अर्जन

धनात्मक सोच के साथ होना चाहिए न कि ऋणात्मक सोच के साथ। सरकारी योजनाओं में आवंटित राशि यदि अपने मुकाम तक पहुँचा दिया जाय, तो देश के अन्दर गरीबी का नामोनिशान नहीं मिलेगा। फिर सोचने की बात यह भी है कि भारतीय रिजर्व बैंक देश हित में जरूरत के हिसाब से मुद्राओं का परिचालन तो करती ही है। जरूरत है उन मुद्राओं को धनात्मक सोच के साथ पकड़ा जाय, तो देश सेवा और यदि उन्हें ऋणात्मक सोच के साथ पकड़ा जाय, तो देश सेवा के विपरीत।

+++++





सौराठ सभागाछी

अविनाश कुमार ठाकुर
(सहायक लेखा अधिकारी)

बिहार की पावन भूमि मिथिला के संबंध में कहा गया है कि “पग-पग पोखरि माछ मखान, मधुर बोल मुस्की मुख पान। विद्या वैभव शान्तिक प्रतीक, विद्यापतिक धरती मिथिला थिक”। यहाँ का खान-पान, अतिथि का स्वागत सत्कार, अड़िपन एवं मिथिला पेंटिंग जैसे कई सांस्कृतिक गतिविधियाँ देश-विदेश में लोकप्रिय हैं। यहाँ के मैथिल ब्राह्मण के लड़के एवं लड़कियों के लिए वैवाहिक संबंध निर्धारित करने की परंपरा भी अद्वितीय एवं अनोखी है।

विवाह लग्न जिसे मिथिला में ‘शुद्ध’ कहा जाता है, के अन्तिम सप्ताह (जून-जुलाई) में प्रतिवर्ष सभावास लगाने की प्राचीन परंपरा है। बिहार एवं नेपाल की तराई क्षेत्र के साथ-साथ देश-विदेश में बसे हुए मैथिल ब्राह्मणों के वैवाहिक संबंध तय करने के लिए प्रसिद्ध सौराठ सभागाछी, मधुबनी जिला मुख्यालय से लगभग सात किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। सदियों से यहाँ दुल्हों का मेला लगता है, जिसे सभावास कहते हैं, जिसमें विवाह योग्य बेटियों के लिए उनके पिता द्वारा मनपसंद दुल्हे का चयन किया जाता है। कहा जाता है कि जब सभावास में लोगों की भीड़ एक लाख से अधिक हो जाती थी, तब वहाँ पेड़ों के पत्ते मुरझाने लगते थे।

माना जाता है कि सौराठ सभागाछी में सभावास की शुरुआत सन्-1326 ई0 में दरभंगा महाराज श्री

हरिसिंह देव द्वारा की गई थी। दरभंगा जिसे “बंगाल का द्वार” भी कहा जाता है, के महाराजा के दरवार में प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा शास्त्रार्थ किया जाता था एवं विजयी विद्वानों को पुरस्कृत भी किया जाता था। इसी क्रम में राजा हरिसिंह देव के मन में मैथिल ब्राह्मण युवकों के बीच शास्त्रार्थ कराने का विचार आया, जिसमें भाग लेने वाले सभी युवक अविवाहित थे। वेद-पुराण एवं दर्शन से संबंधित विषयों पर कई दिनों तक चलने वाले शास्त्रार्थ के समापन अवसर पर राजा ने पुरस्कार स्वरूप एक-एक सुन्दर कन्या युवकों को प्रदान किए एवं दरवार में उपस्थित पंजीकार से अनुमति प्राप्त कर सभी युवकों का विवाह संपन्न कराया। तब से यह परंपरा सभावास के रूप में प्रतिवर्ष सौराठ में आयोजित की जाने लगी।

यह भी कहा जाता है कि राजा ने बाईस बीघा जमीन दान में देकर आगन्तुकों की सुविधा के लिए कुआँ, तालाब, चबूतरा आदि का निर्माण कराया एवं कई पेड़ भी लगवाये। सभागाछी में आनेवाले कन्यागत एवं वरागत के लिए कई प्रकार की मूलभूत सुविधायें उपलब्ध करायी जाती थी। कहा जाता है कि यहाँ बनारस से आकर पान बेचे जाते थे, ठहरने एवं खाने-पीने के लिए समुचित व्यवस्था की जाती थी। जिस तरह गुजरात के सौराष्ट्र जिले में सोमनाथ महादेव मंदिर है, उसी तरह मधुबनी के सौराठ गाँव में भी सोमनाथ महादेव का मंदिर है।





मिथिला के लड़कों का विवाह कुल, मूल एवं विद्वता के पैमाने पर तय होता रहा है। शिक्षा ग्रहण करने के बाद विवाह योग्य लड़कों को सभागाछी आना आवश्यक था, विवाह तय करने का कोई दूसरा स्थल प्रचलन में नहीं था। लड़के अपने अभिभावकों के साथ सुन्दर परिधान एवं सिर पर लाल पाग धारण कर बैठते थे एवं कन्या के पिता एवं अभिभावकों द्वारा दुल्हे का परिचय प्राप्त किया जाता था तथा सुयोग्य वर का चयन किया जाता था। इस प्रकार की परंपरा का अनुपम एवं मनोहर दृश्य एक साथ कई स्थानों पर सभागाछी में देखा जा सकता था। जब वर का चयन हो जाता था तब वहाँ मौजूद पंजीकार से विवाह करने की अनुमति लेनी पड़ती थी। पंजीकारों के पास उपलब्ध वंशावली के आधार पर वर-वधु के खानदान के सात पुश्त/पीढ़ियों के संबंध की जाँच-पड़ताल की जाती थी एवं कोई रक्त संबंध नहीं पाये जाने के उपरान्त पेड़ के पत्ते पर लिखकर विवाह की अनुमति दी जाती थी। इस परंपरा को “सिद्धांत” भी कहा जाता है। “सिद्धांत” का दूसरा पहलू यह भी है कि सामाजिक तौर पर विवाह का पंजीकरण भी हो जाता है। वैवाहिक संबंध तय होने तथा पंजीकार की अनुमति के पश्चात् दो-तीन घंटे में ही कन्यादान की तैयारी करनी पड़ती थी। तब न तो पंडाल बनते थे और न ही उतना चमक-दमक होता था। आपसी सहयोग से समाज में गरीब की लड़कियों का विवाह सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाता था।

सभावास के आरम्भ में ही अगर कोई वैवाहिक संबंध तय हो जाते थे, तब

कन्यागत को तीन-चार दिन का समय मिल पाता था। परदेश में रहने वाले निकट संबंधियों एवं मित्रों को टेलीग्राम भेजकर सूचना दी जाती थी, जिसका सन्देश कुछ इस प्रकार होता था “योर मदर इज सिरियस, कम सून्”। ऐसी आपात स्थिति बताने के पीछे मुख्य कारण कम्पनी/ऑफिस से छुट्टी मिलना माना जाता था।

जिन लड़कों का विवाह तय नहीं हो पाता था, उन्हें अगले सभावास तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। सभावास पर रिपोर्ट साधन बनाने के लिए दरभंगा रेडियो स्टेशन से संवाददाता आते थे, साथ ही मैथिल मंच के कलाकारों द्वारा कई प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता था। मिथिला का सांस्कृतिक महत्व एवं सौराठ सभागाछी के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन तथा मनोरम दृश्य का अवलोकन करने देश-विदेश के पर्यटक यहाँ आकर गौरवान्वित महसूस करते थे। धीरे-धीरे यहाँ लोगों की भीड़ कम होती गई। इसका मुख्य कारण समाज में दहेज प्रथा का प्रसार भी माना जाता है। लोग सभावास में आने से कतराने लगे। उनकी रुचि कम होने लगी। वे अपने घरों में विवाह तय करने लगे।

सौराठ सभागाछी में सभावास का मूल उद्देश्य था कि बिना दहेज के लड़कियों की शादी हो सके एवं कुल-मूल तथा विद्वता के आधार पर वैवाहिक संबंध तय किया जा सके। किन्तु ज्यों-ज्यों समाज में दहेज प्रथा की कुरीति बढ़ती गई, त्यों-त्यों लोग इससे दूर होते चले गये। सभागाछी में लोगों की अनुपस्थिति बढ़ने के कई और कारण हैं। ग्रामीण बेरोजगारी तथा गरीबी के कारण लोग शहरों की तरफ पलायन करने लगे। पीढ़ी दर पीढ़ी शहरों में

बसने लगे। मैट्रिमोनियल साइट्स पर ऑनलाइन शादियाँ तय होने लगी, जिसके कारण लोग मन पसंद दुल्हे की खोज सोशल साइट्स तथा अन्य माध्यम से करने लगे। विवाह एवं रिसेप्शन के नाम पर लाखों का अपव्यय होने लगा। लोगों में मजबूरन शानो-शौकत दिखाने की परम्परा दिनानुदिन बढ़ती गई। गरीबों की बेटियों का विवाह मुश्किल होता गया। अब सामाजिक समरसता धीरे-धीरे कम होती जा रही है। वाट्सएप, फेसबुक एवं ट्वीटर पर अच्छे विचार मिल जाते हैं, किन्तु उसे प्रयोग में नहीं लाया जा रहा है। सोशल साइट्स में मित्रों की कमी नहीं, लेकिन लोग पड़ोसी तक से बात नहीं कर पा रहे हैं। भाग-दौड़ की इस जिन्दगी में कुछ पल फुरसत के मिलते हैं, तो लोग उसे स्मार्ट फोन में बर्बाद कर रहे हैं। इन्हीं कई कारणों से आधुनिक युग में प्राचीन सभ्यता संस्कृति शनैः-शनैः विलुप्त होती जा रही है।

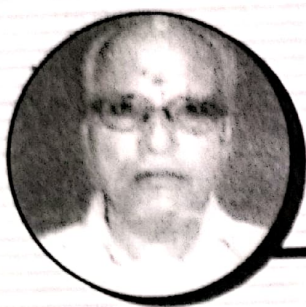
वर्तमान में भी प्रतिवर्ष सौराठ में सभावास का आयोजन किया जाता है, जहाँ अब कुछ ही दुल्हे दिखने को मिलते

हैं। सिद्धांत के कार्य हेतु पंजीकार अभी भी मिल जाते हैं, किन्तु न तो लोगों को अब जिज्ञासा ही रही और न उतना समय। जन प्रतिनिधि एवं कई संगठन सभावास के पुनरुत्थान हेतु प्रयत्नशील हैं, किन्तु जहाँ दहेज लेन-देन की परम्परा तेजी से फैल रही हो, वहाँ सभावास के स्वर्णिम इतिहास एवं प्राचीन परम्परा का पुनः उत्थान कहाँ तक सफल होगा, यह भविष्य ही तय करेगा।

लोगों को अपनी मानसिकता बदलनी होगी। सौराठ सभागाछी की प्राचीन गरिमामयी इतिहास एवं परंपरा को पुनः स्थापित करने तथा दहेज प्रथा को जड़ से समाप्त करने हेतु स्थानीय संगठनों द्वारा किए जा रहे सराहनीय प्रयास को मजबूती प्रदान करने की आवश्यकता है, ताकि सामाजिक समरसता पुनः कायम किया जा सके।

+++++





श्राद्ध

राम अनुग्रह प्रसाद
(से० नि०-व० लेखाकार)

श्राद्ध एक ऐसा कर्म-कांड है, जिसके लिए पूरे भारत के लोग बिहार प्रदेश के गया शहर में अपने पितरों के लिए पिंड दान करने आते हैं। हिन्दु धर्म में इसका बहुत बड़ा महत्व है। अब प्रश्न उठता है, कि क्या श्राद्ध कर्म-कांड और धर्मों के लिए नहीं है।

प्रत्येक धर्म के लोगों का जन्म इस धरती पर एक समान माँ के गर्भ से ही होता है। ईश्वर इसमें कोई भेद-भाव पैदा नहीं करता। मौत भी एक समान ही होता है। सबों का हाथ-पैर व आन्तरिक संरचना ईश्वर ने एक समान रचा है। सबों का भोजन एक है। पानी एक ही पीते हैं। हवा एक ही ग्रहण करते हैं। फिर अलग-अलग धर्म, जाति वर्ग और वर्ण-व्यवस्था के लोग इस धरती पर कहाँ से पैदा हो गये, जबकि सभी इंसान का खून एक समान लाल ही है। सूई चुभाने पर सब को दर्द होता है। किसी में भी ईश्वर ने कोई अन्तर नहीं रखा है।

धर्म एक, मानव एक, हवा एक, पानी एक, भोजन एक, संरचना एक, खून एक, दर्द एक, आनंद एक, दृश्य एक, आसमा एक, धरती एक, दिशाएँ एक, मंजिल एक, सूर्य एक, चन्द्र एक, तारे एक, आखों की रोशनी एक एवं अन्य जो प्रकृति में दिखते हैं, मानव के

लिए एक समान है, तो फिर समाज के कुछ शातिर लोगों ने अपने स्वार्थ की खातिर इस समाज को क्यों बांटा और हम उनपर क्यों चलते आ रहे हैं? क्या हम इस बंधन को नहीं तोड़ सकते?

श्राद्ध कर्म करने से, जिनके लिए श्राद्ध किया जा रहा है, वो देखने नहीं आ रहे हैं। हम भले ही समाज व दुनिया को दिखावे कि लिए यह ढोंग रचने का कार्य करें। जीते जी तो माता-पिता को लोग असहाय पाकर यूही जीने के लिए छोड़ देते हैं। उनसे मीठी-मीठी दो बातें भी करना पसंद नहीं करते, जबकि वे प्यार के भूखे उसी प्रकार होते हैं, जिस प्रकार बचपन में हर प्राणी प्यार का भूखा होता है। एक कहावत है, “बुढ़ रे बालक एक स्वभाव” यानि बूढ़े और बालक का स्वभाव एक ही होता है। वे कुछ कहना भी चाहें, तो बच्चे यह कहकर टाल देते हैं कि अभी मेरे पास वक्त नहीं है। यदि वे बीमार पड़ जायें, तो उन्हें नौकर-चाकर के भरोसे देखने के लिए छोड़ देते हैं और कहते हैं कि डॉक्टर से दिखावे लागी फलना के साथ चल जइह। जबकि वे सबकुछ कर सकते हैं, जो नौकर-चाकर के भरोसे छोड़ देते हैं। क्या नौकर-चाकर से वह अपनत्व मिल सकता है, जो अपने बाल-बच्चों से मिलेगा? क्या यही दिन देखने को माँ-बाप ने अपने बच्चों को प्यार से पढ़ाया-लिखाया और अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बनाया?

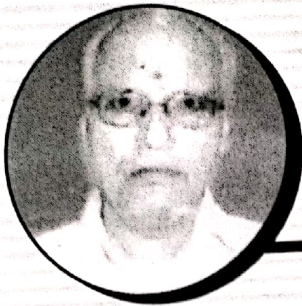
यह एक बहुत ही विचारणीय बिन्दु है कि ज्यादातर इंसान को अपनी बीबी, बच्चे व ससुराल को देखने के लिए समय 100 प्रतिशत रहता है, ससुराल वाले उन्हें बहुत अच्छे लगते हैं, लेकिन जिन्होंने या जिनके बल-बूते आज वे अपने पैरों पर खड़े हैं, अच्छे नहीं लगते हैं। अपने बूढ़े माँ-बाप को देखने के लिए उसके पास बिल्कुल ही समय नहीं होता, जिन्होंने अपना पूर्ण समय देते हुए उसे पाल-पोसकर कमाने-खाने लायक बड़ा बनाया। यह बहुत ही बड़ा दुर्भाग्य है इस मानव जाति का।

अतः यदि इंसान अपने माता-पिता, दादा-दादी, बुजुर्गों व

गुरुजनों का आदर समय पर करे या जब जैसा उनको जरूरत है, करे और उनके करने से यदि उनके माता-पिता इसी जीवन में अपने बाल-बच्चों की सेवा आदि से तृप्त हो जाते हैं, तो समझा जायगा कि मानव का जीवन सफल है, श्राद्ध-कर्म की कोई जरूरत नहीं। हाँ, साथ-ही-साथ माता-पिता द्वारा किए जा रहे कोई कार्य यदि अधूरा रह जाता है, तो उनके बच्चों को चाहिए उनके द्वारा किए जा रहे शेष कार्य को पूरा करे, तभी उनके माता-पिता को शांति मिलेगी, श्राद्ध-कर्म करने से नहीं। श्राद्ध कर्म दिखावे के लिए वे करते हैं, जिन्हें अपने कर्मों पर भरोसा नहीं है। श्राद्ध कर्म पर एक कहावत है, “जिन्दा में गुह भता और मरला में दूध भता”।

+++++





वृद्धाश्रम क्यों

राम अनुग्रह प्रसाद
(से0 नि0-व0 लेखाकार)

यह विचार उन अभिभावकों /माँ-पिता से संबंधित है, जिन्होंने अपने बच्चे को लालन-पालन से लेकर पढ़ाई तक का भार दूसरों पर छोड़ देते हैं। आज के अभिभावक अपने बच्चों को अपने से इतना दूर कर देते हैं कि वे अपने माँ-बाप के ममत्व को नहीं समझ पाते हैं। फलस्वरूप वृद्धावस्था में अपने माता-पिता को अपने साथ रखने के बदले उन्हें वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं, क्योंकि :-

- 1 बच्चा जन्म लेता है, माँ दूध पिलाना नहीं चाहती है। वह यह सोचती है कि बच्चे को दूध पिलाना उसकी सेहत को बिगाड़ देगा। पाउडर का दूध पिलाकर उसका लालन-पालन करती है, वह भी दाई व नौकर के भरोसे।
- 2 बच्चा जब चलने-फिरने (1 से ढाई साल तक का) लायक होता है, माँ अपना समय अपने बच्चों के साथ बिताने के बदले सहेलियों के साथ बिताना ज्यादा पसंद करती है। घर के बाहरी वातावरण से अवगत कराने के लिए बच्चे को अपने साथ स्वयं न ले जाकर अपने दाई-नौकर के भरोसे उसे घुमने/घुमाने के लिए भेज देती है। यहाँ पर बच्चा माँ की ममता से दूर हो जाता है।

3

बच्चा जब प्ले-स्कूल (ढाई से चार साढ़े 3 तक का) जाने लायक होता है, तब भी माँ-बाप अपने से न पहुँचाकर उसे नौकर-दाई के साथ भेजकर पहुँचाते हैं। यहाँ पर भी बच्चा माँ-बाप की ममता व देखभाल से दूर हो जाता है यानि माँ की ममता उसे नहीं मिल पाती है। बच्चों की इस उम्र में यह कहते हुए उनसे कोई सेवा नहीं ली जाती है कि बच्चा अभी छोटा है। इस उम्र में बच्चा जब कोई गलती करता है, तो उस गलती को सुधारने के बदले उसे यह कहते हुए छोड़ दिया जाता है कि बच्चा अभी छोटा है।

4

बच्चा जब स्कूल में कुछ सीखने लायक (साढ़े 3 से साढ़े 5 तक का) हो जाता है, तब माँ-बाप अपने से उसे अक्षरों का ज्ञान न कराकर टियूटर रख देते हैं, ताकि उसे पढ़ाने में बच्चा जैसा उन्हें स्वयं मिहनत न करना पड़े। बच्चों की इस उम्र में उनकी गलती पर ध्यान नहीं दिया जाता और यह कहते हुए उनसे कोई सेवा नहीं ली जाती कि बच्चा अभी छोटा है।

5

बच्चा जब स्कूल में पढ़ने के प्रथम चरण में (साढ़े 5 साल से लेकर 11 साल तक) होता है, तब उसे इस उम्र में माता-पिता की सख्त जरूरत पड़ती है, लेकिन माँ-बाप बच्चों की इस उम्र में भी ममता भरी दृष्टि से

सिखाने-पढ़ाने के बदले अपने साथी-संगियों के साथ समय बिताना ज्यादा पसंद करते हैं और बच्चों को टियूटर के भरोसे यह कहते हुए छोड़ देते हैं कि मेरा बच्चा मुझसे सुनता ही नहीं। बच्चों की इस उम्र में भी यह कहते हुए उससे कोई सेवा नहीं ली जाती है कि बच्चा अभी छोटा है।

6 अब बच्चा छठे क्लास में चला गया, उनकी उम्र लगभग किशोरावस्था की हो गई। किशोरावस्था उम्र का अर्थ है, बच्चों में समझने-बुझने का अपना ज्ञान का आरम्भ होना। 6ठे क्लास का पाठ्यक्रम 5वें क्लास के पाठ्यक्रम से ठीक दुगना होता है। इसे पढ़ने के लिए बहुत ही प्यार और संयम की आवश्यकता होती है, लेकिन इस उम्र में भी अभिभावक, बच्चों की पढ़ाई टियूटर के ऊपर छोड़ देते हैं। वे पढ़ाई के प्रति सिर्फ पैसा खर्च करना अपना धर्म समझते हैं, बच्चों के प्रति अपना प्यार बांटना नहीं। बच्चों की इस उम्र में यह कहते हुए उससे कोई सेवा नहीं ली जाती कि बच्चा अभी छोटा है और पढ़ रहा है।

7 अब बच्चा 7वें क्लास में किशोरावस्था उम्र (13 जव 19) के पड़ाव पर है। इस उम्र में बच्चों पर कड़े अनुशासन के साथ-साथ उनपर पहरेदारी भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी पढ़ाई, परन्तु इस उम्र में वे नहीं चाहते हैं कि उनपर कोई अनुशासन

और पहरेदारी करे क्योंकि बचपन से उन्हें आजाद पंछी की तरह उड़ने के लिए टियूटर के भरोसे छोड़ दिया गया। परिणाम होता है कि बच्चों को जिधर सहज रास्ता जाने को मिलता है, चला जाता है।

8 ऐसे बच्चों को जिनकी उम्र किशोरावस्था की है और जिन्हें माता-पिता का प्यार समय पर नहीं मिला और उन्हें बचपन में कभी माता-पिता की आज्ञा पालन करने के लिए नहीं सिखाया गया, वे बच्चे उम्र पाकर असहज हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में जब अभिभावक या परिवार का कोई सदस्य उन्हें कुछ करने के लिए कहता है, तो यह कहते हुए इनकार करते हैं कि अभी उनके पास समय नहीं है।

9 जब बच्चे किशोरावस्था पार करते हैं, तब उनकी अपनी समझदारी जागती है। आगे-पीछे समझने का ज्ञान हो जाता है, परन्तु इस अवस्था में बच्चे अपने को समाज से अलग-थलग महसूस करते हैं क्योंकि सामाजिक ज्ञान उन्हें माता-पिता के द्वारा कभी नहीं दिया गया। कारण कि उन्होंने बचपन से लेकर किशोरावस्था पार करने तक अपने माता-पिता की छाया कभी भी महसूस नहीं किया।

10 बच्चों की उम्र 20 से 25 के आस-पास आते ही उनकी अपनी पूर्ण समझदारी विकसित हो जाती है। यदि उन्हें बचपन से इस उम्र तक माँ-बाप की छाँव नहीं मिली, तो आगे भी नहीं मिलेगी क्योंकि अब वे खुद के मालिक और पूर्ण वयस्क हो गये। इस उम्र में 60 से 70 प्रतिशत तक के वयस्क स्वयं

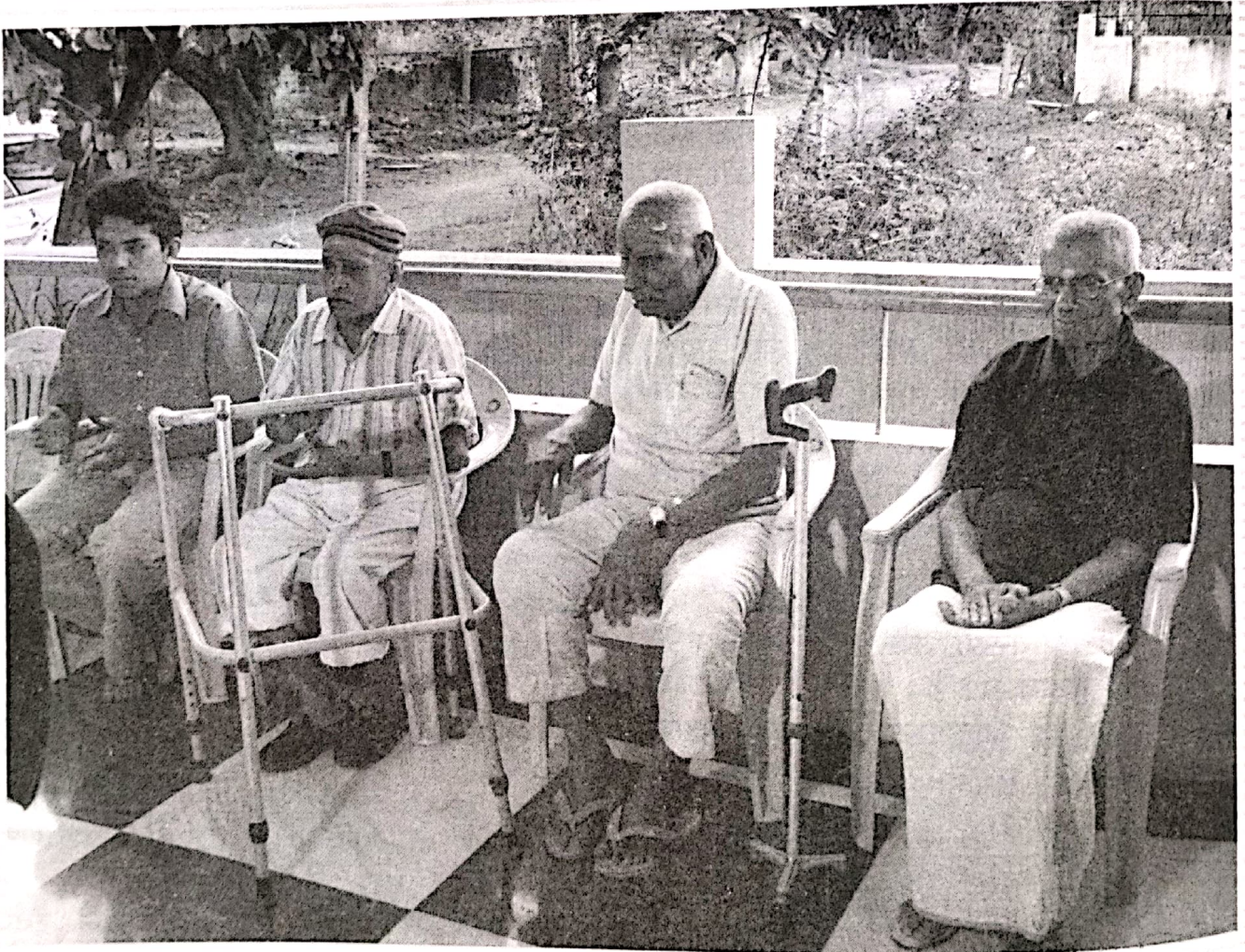
माता-पिता बन चुके होते हैं। उनके ऊपर परिवार की पूरी जिम्मेवारी आ जाती है।

- 11 कुछ ऐसे नवयुवक जिनकी उम्र 26 से 30 व उसके आगे की होती है, आगे की पढ़ाई में लगे रहते हैं या नौकरी की तलाश में रहते हैं। नौकरी पाते ही माँ-बाप से दूर होकर अपना आशियाँ अलग बना लेते हैं।

वैसे नवयुवक जिन्हें बचपन से माँ-बाप का प्यार शिक्षा ग्रहण के साथ-साथ सेवा धर्म का ज्ञान भी अभ्यास के साथ मिला, वे ही अपने माता-पिता के कष्ट को समझ पाते हैं और बुढ़ापे में उनकी सेवा करना अपना धर्म ही नहीं

अपना कर्तव्य भी समझते हैं। ऐसे माता-पिता को वृद्धाश्रम जाने की जरूरत नहीं पड़ती परन्तु वैसे माता-पिता जिन्होंने अपने बच्चों को बचपन से न कभी प्यार दिया, न अपने हाथों से कभी लिखना-पढ़ना सिखाया और न कभी सेवा धर्म का ज्ञान कराने के साथ-साथ अभ्यास कराया, वृद्धाश्रम की शरण लेनी ही पड़ेगी क्योंकि बुढ़ापे में जिस कर्म के लिए हम अपने बच्चों से उम्मीद करते हैं, उसका उसमें अभाव है यानि वह ज्ञान उसे है ही नहीं, जिसके सहारे वह अपने माता-पिता की सेवा करे।

+++++



डाकू

अमरेन्द्र कु0 पाण्डेय
(सहायक लेखा अधिकारी)

चेतना के पिछले अंकों में प्रकाशित मेरे लेख पर टिप्पणी करते हुए मेरे एक मित्र ने कहा कि आज के इस तकनीकी विज्ञान के युग में 8-10 पृष्ठ लिखने की फुरसत भले ही तुम्हें हो, परन्तु इसे पढ़ने की फुरसत किसे है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रश्न से लेख की शुरुआत कर जिज्ञासा उत्पन्न करना ओछे लेखकों की हरकत है। ऐसे छुटभैये लेखकों के शिकायत का क्या कोई मंच है? आगे उन्होंने कहा, जब भी कुछ लिखो पूर्व में मुझे बता दो, ताकि मैं दो-चार लोगों को इसे पढ़ने की सिफारिश कर दूँगा, इससे तुम्हारे लेख को पाठक मिल जाएंगे। ऐसे लेख बिना पढ़े ही पत्रिका की शोभा बनकर रह जाते हैं और इसकी छपाई आदि पर जो खर्च होता है, उसकी सारी जिम्मेदारी तुम्हारी है। बंद करो लिखना-विखना, बेवजह अपना एवं अन्य लोगों का समय बर्बाद करते हो।

हिसाब से लिखते हैं और आलोचना टन के हिसाब से प्राप्त होती है, इसलिए आलोचना विशेषकर आवसाद ग्रस्त आलोचना की परवाह नहीं की जानी चाहिए। हालांकि, उन्होंने एक नसीहत दे डाली कि व्यक्तिगत टिप्पणी से, जो समुदाय विशेष को नागवार गुजरे, बचनी चाहिए।

स्थापित लेखक महोदय के कथन से मैं उत्साहित हुआ और यह सोचा कि मिलीग्राम के हिसाब से तो लिखूँगा ही, भले ही ग्राम के हिसाब से आलोचना प्राप्त हो, फिर आलोचना की परवाह क्यों करूँ?

डाकू शब्द से मेरे चित पर न तो चंबल के नामी-गीरामी डाकूओं का स्मरण होता है और न ही इतिहास प्रसिद्ध कुख्यात दस्यू, जिनके कारनामों दिल को दहला देते हैं। मेरे लिए डाकू का पर्याय है प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म शोले का खलनायक “गब्बर सिंह”। बाल्यावस्था में मैंने यह फिल्म पटना के एलिफिस्टन सिनेमा हॉल में जब देखी, उसी समय से गब्बर सिंह आकृति का डर समा गया है, जिसमें आज भी रस्ती भर की कमी नहीं आई है। मेरे ख्याल से डाकू का अतिविकसित रूप है “गब्बर सिंह”। तो देखें क्या इस लेख का पात्र डाकू गब्बर सिंह से भी खतरनाक है?

मित्र की आलोचना से मेरा मन खिन्न हो गया। मैंने अपनी व्यथा अपने एक जान-पहचान वाले एक स्थापित लेखक महोदय के समक्ष व्यक्त की। स्थापित लेखक महोदय ने जोर का ठहाका लगाया और मेरी ओर मुख़ातिब होकर कहा, लेखक ग्लोबल हो या लोकल, आलोचना तो सहनी ही पड़ती है। उन्होंने यह भी कहा कि वे किचंटल के

बात पिछले वर्ष दिसम्बर की है। मेरे एक नव परीचित मित्र ने मुझे एक विचार



गोष्ठी में आमंत्रित किया। विचार गोष्ठी का विषय था - 'समाज में फैली अंधविश्वास, मिथक या वैज्ञानिक आधार। मैं विचार गोष्ठी में श्रोता की हैसियत से गया था। गोष्ठी को बड़े-बड़े विद्वानों ने संबोधित किया। छीक, बिल्ली का रास्ता काटना, भूत-प्रेत का अस्तित्व जैसे अनेक अंधविश्वास पर वक्ताओं ने पुरजोर तर्क सहित अपने मंतव्य रखे। किसी अंधविश्वास का वैज्ञानिक आधार पर कोई पैरवी किसी ने नहीं की, सबों ने इसे मिथक, भ्रान्ति बताया।

मेरे मित्र जिन्होंने इस गोष्ठी में मुझे आमंत्रित किया था, छीक, बिल्ली के रास्ते काटने समेत अनेक अंधविश्वासों पर लम्बा-चौड़ा तर्क देकर यह प्रमाणित करने की कोशिश की कि ये सब मान्यतायें समाप्तप्राय हैं और अब ये बातें कम पढ़े-लिखे एवं अविकसित समाज में प्रचलित हैं।

गोष्ठी समापनोपरांत घर लौटने के क्रम में एक जगह सड़क पर लोगों की भीड़ जमा थी। वाहन व लोग सब सड़क के लम्बवत जमे हुए थे। ट्रैफिक आगे बढ़ नहीं रही थी। पूछताछ पर पता चला कि एक काली बिल्ली सड़क के आर-पार हुई है और इसके दुष्प्रभाव से बचने के लिए लोग सड़क क्रौस नहीं कर रहे हैं। एक वृद्ध व्यक्ति जो सभ्य एवं जानकार लग रहे थे, ने आगे बताया कि बिल्ली काली थी एवं वह उत्तर से दक्षिण की ओर क्रौस की है। अतएव जो पहला व्यक्ति इसे क्रौस करेगा, उसे घोर विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। चूँकि अभी थोड़ी देर पहले ही ऐसे अंधविश्वास

पर लंबी-चौड़ी एवं तर्कपूर्ण बातें सुनी है, अतएव ऐसी स्थिति की अध्ययन की जिज्ञासा हुई।

अब क्या होगा? कौन पहले सड़क पार करेगा? भीड़ में पढ़े-लिखे, सभ्य सभी तरह के लोग थे। मैं चौंक गया जब देखा कि मित्र महोदय, जो अपने-आप को चिंतक कहलाना पसंद करते हैं, कोने में अपने बाइक के साथ खड़े हैं। मुझे यह उम्मीद जगी कि ये सड़क अवश्य पार करेंगे, क्योंकि अभी-अभी थोड़ी देर पूर्व ही इसके खिलाफ उन्होंने अनगिनत तर्क दिए हैं। मुझे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब मैं उनकी नजरों से बच-बचाके उनके पीठ पीछे पहुँचा तो वे चर्चा में मसगूल थे, कह रहे थे कि विपत्ति मात्र बिल्ली के रंग, भागने की दिशा पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि यह बिल्ली के स्वास्थ्य, उस समय की उसकी हरकत, ग्रह नक्षत्र आदि पर भी निर्भर करता है। मैं हैरान था कि घंटे भर पहले इन्होंने क्या-क्या कहा था, मेरे मन मस्तिष्क में कौंधने लगा। सहसा विश्वास नहीं हुआ, कथनी और करनी में इतना बड़ा फर्क मैंने आज तक नहीं देखी थी।

लोग इन्तजार में थे कि कोई सड़क पार करे, तो वे आगे बढ़ें। समय के साथ भीड़ बढ़ती जा रही थी। इसी बीच एक एम्बुलेंस भयावह साइरन के साथ भीड़ के पीछे रुकी। एम्बुलेंस में रोगी की स्थिति बहुत ठीक नहीं थी और उसे जल्द ही अस्पताल पहुँचाना अनिवार्य था। आशा बंधी कि एम्बुलेंस अवश्य ही क्रौस करेगा और इस ठहराव से मुक्ति मिलेगी। एम्बुलेंस से एक भद्र पुरुष बाहर आए और भीड़ से गुहार लगाई कि कृपया कोई सड़क पार



करें, मुझे जल्द ही मरीज को लेकर अस्पताल पहुँचना है। बात बनती न देख उन्होंने घोषणा की कि जो कोई सड़क पहले क्रौस करेगा, उसे वह 500 रुपये इनाम देगा। भीड़ में मजदूर फेरीवाला, छोटे दुकानदार आदि भी मौजूद थे और यह उम्मीद थी कि इनाम के लालच में पहले सड़क पार करने की होड़ मच जाएगी। मगर आश्चर्य, सड़क पार करने भीड़ में से कोई भी निकलकर आगे न आया। एक फेरीवाले ने मंद आवाज में ही सही कहा, दो दिन में तो मैं 500 रुपया आराम से कमा लूँगा, पर रुपये के लालच में ये बलइया अपने माथे न लूँगा।

बेचैन भद्र पुरुष जिन्हें अस्पताल जल्द पहुँचना जरूरी था, अन्त में हारकर एक गिद्दी उठाई और उसे सड़क पर इस तरह लुढ़काया कि वह शापित सड़क का हिस्सा पार कर गया। कुछ बुद-बुदाने यानि किसी मंत्र का उच्चारण के पश्चात् उनका एम्बुलेंस सड़क को क्रौस किया। एम्बुलेंस के सड़क क्रौस करने से डेडलॉक समाप्त हुआ। लोग अपने गंतव्य की ओर चल पड़े। चिंतक महोदय भी पलक झपकते आँखों से ओझल हो गये, शायद उन्होंने मुझे देख लिया था। सामना होने पर मैं उनकी विरोधाभास व्यवहार का उल्लेख उनसे अवश्य ही करता।

औरों से अलग दिखने की प्रवृत्ति, मनुष्य को प्रकृति से प्राप्त एक नैसर्गिक गुण है। रचनात्मक एवं विध्वंसात्मक दोनों तरह के कार्य करने वाले को एक अलग पहचान समाज में मिलती है।

अलग दिखने की इसी प्रवृत्ति के कारण अन्य जीवों की तुलना में मनुष्य ने उन्नति की है। विज्ञान के उपयोग से हमारे जीवन स्तर में बेहतरी आई है। विज्ञान ने आज हमें इतना प्रभावित किया है कि इसके बिना एक कदम भी आज चलना मुश्किल है। तथापि, विज्ञान की उन्नति ने अपने साथ अनेकानेक समस्याएँ उत्पन्न की है, परिणाम स्वरूप हमारी-आपकी आत्मिक शांति समाप्त सी हो गई है। औरों से अलग दिखने की इसी प्रवृत्ति ने चिंतक महोदय के व्यक्तित्व को क्लिष्ट बना दिया है। उनका व्यक्तित्व विरोधाभास से भरा-पूरा है। इन्हीं विविधताओं के कारण मेरी नजदीकी उनसे बढ़ती गई।

भारत को विश्व का आध्यात्मिक गुरु कहा जाता है। सभी शुभ कार्य के अवसर पर अपने इष्ट बंधु-बांधवों के साथ मनाने की परंपरा चली आ रही है। शादी-विवाह, उपनयन, गृहप्रवेश आदि अवसरों पर हम अपने इष्ट मित्र को बुलाते तो हैं, लेकिन वहाँ आध्यात्मिकता कम, भौतिकता अधिक होती है। आमंत्रित सगे-संबंधी की गतिविधि भोजन आदि तक ही सीमित रहता है। आध्यात्मिकता कहीं ऐसे अवसरों पर नजर नहीं आती। आध्यात्मिकता पर भौतिकता का हावी होने का प्रमाण है। चिंतक महोदय ने अपने नव-निर्मित मकान के प्रवेश के अवसर पर जो निमंत्रण पत्र छपवाया, वह भी विचित्रताओं से भरा पड़ा था। निमंत्रण पत्र पर साफ लिखा था, भोजन आदि की व्यवस्था इस गृह-प्रवेश के अवसर पर नहीं है। मात्र चाय की व्यवस्था रहेगी। चिंतक महोदय ने यह आयोजन सिर्फ अपने घर को दिखाने के लिए ही किया है। निमंत्रण पत्र पर क्रमांक के

साथ-साथ क्रमांकवार आने/जाने का समय भी निर्धारित था।

ओह!! यह निमंत्रण पत्र है या वैज्ञानिक अनुसंधान पत्र? पता नहीं, वहाँ जाऊँ और कोई तमाशा न खड़ा हो जाय। परिवार में निर्णय हुआ कि किसी छुट्टी के दिन चिंतक महोदय के यहाँ जाकर उनका नव-निर्मित मकान को देख लिया जाएगा।

रविवार को करीब दस-सवा-दस बजे मैं पत्नीसंग वहाँ पहुँचा। मुझे अंदेशा था कि वे तुरंत सवाल करेंगे कि गृह-प्रवेश के दिन मैं आप लोगों का बहुत इन्तजार किया, पर नहीं आये। शिकायती लहजे में यह बात कहेंगे, जैसा की अन्य लोग साधारणतया कहते हैं, परन्तु आश्चर्य की बात है कि यथोचित सत्कार एवं बैठने के प्रबंध के बाद चिंतक महोदय ने कहा, अच्छा किया, जो उस दिन आप नहीं आये, काफी भीड़-भाड़ थी। आज इतमिनान से एक साथ बैठकर चाय पीयेंगे। उन्होंने घर निर्माण में आने वाली परेशानियाँ, बरती जाने वाली सावधानियों की चर्चा अपने अंदाज में की। चर्चा चल ही रही थी कि चिंतक महोदय चिल्लाने के अंदाज में बोल उठे, अरे! डाकू आ गये।

राजधानी का सभांत इलाका, दिन का समय और डाकू! कुछ समझ में पाता कि तीन-चार युवक हाथ में चंदे की रसीद एवं कलम लिए हुए बरामदे पर आ धमके। चिंतक महोदय ने उनकी ओर इशारा करते हुए कहा - इनसे मिलो, ये हैं आधुनिक डाकू, समाज के

घून और समाज की विकृतियों का पोषक और ऐसे ही कई अपमानजनक विशेषणों से उन युवकों को संबोधित किया। आगे उन्होंने कहा, पहले डाकू मूँछें रखा करते थे, जंगलों में निवास करते थे। ये स्वच्छ हजामत किए हैं, आलीशान महलों में रहते हैं। इनके पहनावे को तो देखो, सब ब्रांडेड। हाँ, बन्दूक की जगह इन्होंने रसीद और कलम थाम रखी है, जिसका परिणाम हमें एवं हमारी पीढ़ी को झेलना होगा। अतएव पहले के डाकू अपनी इज्जत-प्रतिष्ठा अथवा सिद्धांत के लिए इस पेशे में आते थे, लेकिन ये आते हैं ऐयाशी के लिए। दरअसल ये युवक मुहल्ले के छंटे हुए बदमाश हैं। मैं इस विवाद में उनके डर से पड़ना मुनासिब नहीं समझा और मौन ही रहा। चिंतक महोदय के अपमानजनित विशेषण से आहत होकर एक युवक ने तैश में आकर कहा-चन्दा माँगना गुनाह है क्या? हमलोग व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए ऐसा नहीं कर रहे हैं। दुर्गा पूजा नजदीक है, उसी के लिए चंदा माँग रहे हैं। हजारों वर्षों से गली-गली में ऐसी पूर्जा-अर्चना तो इसी चंदे के बल पर होती आ रही है। आपके जैसे लोग तो इस संस्कृति का विनाश ही कर देंगे। चंदा की परंपरा न होती तो क्या आज बी०एच०यू० होता? अपने को चिंतक कहते हैं और घटिया सोच रखते हैं, चंदा माँगने वालों ने कहा।

चिंतक महोदय को तो इसी पल का इंतजार था कि वे युवक अपने पक्ष में तर्क दें और वे अपनी वाक्पटुता के जाल में फँस सकें। युवक के प्रतिवाद ने इसका मौका इन्हें दे दिया। इन्होंने युवकों के तर्क को अपने तीक्ष्ण विचारों से तर्कहीन बना दिया।

उनके इस काम को कु-कृत्य सिद्ध कर दिया। इससे पैदा होने वाली समस्याओं का जिम्मेदार उन युवकों को ठहराया। हाँ! उन्होंने आगे कहा, पूजा-पाठ बुरी-बात नहीं है, इसके विरोधी वे नहीं हैं, परन्तु इन आयोजनों का खर्च चंदे से नहीं, अपनी आवश्यकता कम कर (ब्रांडेड की जगह सामान्य उपयोग की सलाह दी) श्रम से पूरी करें।

उन्होंने चेतावनी भरे अंदाज में कहा-खबरदार! जो कभी उनके चौखट पर चंदे के लिए कदम रखा। आगे उन्होंने कहा-कल से मैं तुम लोगों के पीछे-पीछे चलूँगा और लोगों को जागरूक करूँगा कि वे तुम्हें चंदा न दें। याद रखो, कल से एक रसीद भी नहीं काट पाओगे। मैं डरता नहीं, जो बन पड़े कर लो। चिंतक महोदय ने एक-एक घर जाकर चंदे न देने का अनुरोध किया और तर्क के आधार पर उन्हें समझाया। युवकों ने अनेक तरह से इन्हें डराने-धमकाने का उपक्रम किया, परन्तु

ये कहाँ मानने वाले थे, इनको तो धुन थी इस विकृति को समाप्त करने की।

उन युवकों ने इनसे प्रेरित होकर स्व-व्यवसाय कर लिया और आज की तिथि में कोई भी कार्य चिंतक महोदय के सलाह के बिना वे नहीं करते। बाद में पता चला कि चिंतक महोदय समाज के अंधविश्वास एवं कुरीतियों के उन्मूलन के लिए वृहत् संस्था चलाते हैं, जो सरकार से पोषित है। वे इस क्षेत्र के सामाजिक, वैज्ञानिक सलाहकार एवं कुरीति उन्मूलन के प्रेरक हैं। उनका विरोधाभास व्यवहार लोगों से जुड़ने/प्रभाव डालने का हथियार मात्र है।

अतः इस लेख के माध्यम से मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप भी चंदा आदि किसी भी स्थिति में न दें और कुरीति उन्मूलन अभियान को अपने इस कृत्य से सहयोग प्रदान करें। कुरीति वाहक इन डाकूओं के उन्मूलन में आपका छोटा सा योगदान समाज में क्रांतिमयी बदलाव ला सकता है।

+++++



गरीब का बेटा

अनिरुद्ध राय,
(से० नि०-पर्यवेक्षक)

एक समय की बात है। गर्मी का दिन था। अचानक हमारे मित्र श्री शंकर सिंह के बच्चे की तबियत खराब हो गई। उन्होंने पूछा, बच्चे का कोई अच्छा डॉक्टर हो तो बतायें, मैं अपने बच्चे को इधर-उधर दिखा रहा हूँ, ठीक नहीं हो रहा है। मैंने उसे डॉक्टर आर्यन का नाम बता दिया, जो बोरिंग रोड से आगे राजापुर पुल के पहले बायीं तरफ बैठते हैं। मैंने उसे इस संबंध में डॉक्टर के कम्पाउन्डर से मिलने को कहा, साथ ही कहा कि कोई परेशानी होगी तो मुझे बताना।

श्री सिंह बिना विलंब किए मेरा नाम लेते हुए डॉक्टर के कम्पाउन्डर से मिले। कम्पाउन्डर मेरा नाम लेते हुए उसे डॉक्टर के पास ले गया। डॉक्टर ने खूब जाँच परख कर बच्चे को देखा और अपने डिस्पेंसरी से उसे कुछ दवा भी दी। शेष दवा बाहर से खरीदने के लिए कहा और साथ-ही-साथ उन्होंने यह भी कहा कि अगली बार (दस दिन के बाद) जब भी आइयेगा, साहब से फोन नहीं कराना है। उनका नाम लीजिएगा, कम्पाउन्डर आपको दिखला देगा।

श्री सिंह ने डॉक्टर के यहाँ से लौटकर उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा की और कहा कि ऐसा डॉक्टर तो मैंने पहली बार देखा है, जिन्होंने बिना फीस के मेरे

बच्चे को देखा, दवा दी और आगे दिखावे की भी सलाह दी। जब मैं अपने निवास पर आया और एकांत में बैठकर चाय पी ही रहा था, तो नेतरहाट का वो दिन मुझे याद आया। फीस जमा नहीं होने के कारण आर्यन को अन्य पाँच बच्चों के साथ प्रधान जी असेम्बली में रोक लिए और उन सबों से कहा गया कि असेम्बली के बाद कार्यालय कक्ष में आकर मिलें। कार्यालय में उन्हें यह हिदायत दी गई कि फीस जमा नहीं होने पर 10 दिन के बाद आपलोगों को विद्यालय से निकाल दिया जाएगा।

आर्यन उस दिन लंच ब्रेक में खाना नहीं खाया, दिनभर उदास रहा। श्रीमान जी ने भी पूछा-आर्यन बेटे आज तुमने खाना नहीं खाया, बात क्या है, बताओ? नहीं बताओगे तो हमलोग जानेंगे कैसे? वह नहीं बता रहा था, लेकिन प्यार से बहुत पूछने पर फफक-फफक कर रोने लगा और प्रधान जी की बात को दुहराते हुए उसने कहा कि आज से 10 दिन के बाद मुझे विद्यालय से निकाल दिया जाएगा। आर्यन से ही पता चला कि उसकी फीस 250 रुपया बाकी है। श्रीमान जी अपनी आलमीरा से 250 रुपया निकाले और कपड़ा पहनकर प्रधानजी के निवास की ओर चल दिए। श्रीमान जी ने प्रधान जी से कहा कि आपने आर्यन को क्या-क्या कह दिया है कि कल से वह बिल्कुल उदास है, खाना भी नहीं खा रहा है। उस लड़के के

भीतर विद्यालय से निकाले जाने का भय समाया हुआ है। कहीं सदमें में आकर वह कोई गलत कदम न उठा ले। लीजिए मैं उसकी फीस लेकर आया हूँ, कैशियर को बुलाकर इसे जमा करवा दें। इतना सुनते ही प्रधान जी श्रीमान जी के साथ उसी समय आर्यन से मिलने आये और कहा कि तुम्हारी फीस जमा हो गयी है, अब तुम्हें विद्यालय से नहीं निकाला जाएगा।

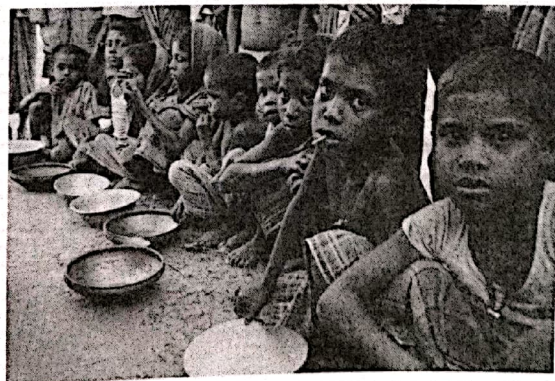
समय पाकर आर्यन ने स्थिति स्पष्ट करते हुए घर पर दो पत्र भेजा, एक घर के मालिक दादाजी को और दूसरा अपने दादाजी को। इस प्रकार आर्यन का पैसा उसके घर से आया और उसकी फीस जमा हो गयी। उसकी फीस समय पर जमा नहीं होने का कारण मैंने आर्यन से पूछा तो उसने बताया कि उसके दादाजी चार भाई हैं, उसका परिवार बहुत बड़ा है। उसके अपने दादाजी खेती का काम करते हैं। पिताजी एक दुकान में कपड़ा बेचते हैं, उन्हें मजदूरी के रूप में मात्र 80 रुपया महीना मिलता है। यह घटना वर्ष 1964 की है।

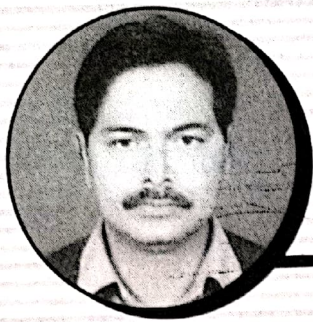
शेष दादाजी को आर्यन की पढ़ाई को देखकर जलन हो रही थी कि अगर आर्यन अच्छा स्कूल में पढ़ लेगा, तो वह बड़ा आदमी बन जाएगा। फायदा होगा उसके पिताजी और भाइयों को। इस जलन के कारण घर के मालिक एवं अन्य दादाजी ने उसकी फीस विद्यालय में जमा नहीं की, ताकि उसका नाम कट जाय। जब पत्र के माध्यम से इस बात की जानकारी आर्यन के अपने दादाजी

को हुई, तो उन्होंने इसकी चर्चा अपने एक नजदीकी रिश्तेदार से की, जो रिश्ते में फुफाजी के पिताजी लगते थे। आर्यन के दूर के रिश्तेदारों ने निर्णय लिया कि आर्यन एक मेधावी छात्र है, इसलिए उसकी पढ़ाई के लिए पैसों की कमी नहीं होनी चाहिए और उन्होंने उसके फीस का इन्तजाम बिना विलंब किए हुए कर दिया।

इस प्रकार आर्यन पढ़कर एक बड़ा डॉक्टर बना और उसकी विशेष पढ़ाई के लिए इंग्लैंड की एक यूनिवर्सिटी ने उसे छात्रवृत्ति भी दिया। इंग्लैंड में 12 वर्ष डॉक्टरी करने के बाद उसके मन में यह विचार आया कि अब स्वदेश सेवा के लिए वापस लौट आया जाय। वह अब अपनी मातृभूमि की सेवा करना चाहता था और वह लौटकर पटना में प्राइवेट प्रैक्टिस करने लगा। वह कभी-कभी बीच-बीच में अपने गाँव जाकर गरीबों की मुफ्त चिकित्सा भी किया करता है। उनका कहना है कि गाँव की मिट्टी का भी मुझे डॉक्टर बनाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। अतः मेरे डॉक्टर बनने का फायदा हमारे गाँव वालों को मिलना चाहिए। इसी प्रकार यदि समाज का हर व्यक्ति अपनी सोच रखे, तो समाज का स्वतः कल्याण हो जाएगा।

+++++





स्वच्छ भारत अभियान

मो० हाशिम अंसारी
(वरीय लेखा अधिकारी)

मेरे ख्याल में स्वच्छता का भाव दिल से निकलना चाहिए और अगर ऐसा हो, तो इसके लिए विशेष अभियान की आवश्यकता नहीं है। स्वच्छता की शुरुआत किसी ईकाई के साथ शुरू होनी चाहिए, तब आगे चलकर वह समग्र एवं विशाल रूप लेगी तथा हमारा माहौल पूर्ण रूप से स्वच्छ हो पाएगा। यहाँ मैं कहना चाहूँगा कि जब मैं सन् 1985 में अपनी संस्था से जुड़ा तथा अपने राँची कार्यालय में योगदान दिया, तो आरम्भ के दिनों में प्रशिक्षण के क्रम में उस समय दत्ता साहब, लेखा अधिकारी संस्था के कार्य से संबंधित प्रशिक्षण के अतिरिक्त कहा करते थे कि देखिये, कार्यालय आइये तो दूसरे पर आश्रित होने से अच्छा है कि घर से कोई पुराना कपड़ा लाकर रखें और आप जहाँ बैठते हैं, उस टेबुल-कुर्सी को स्वयं ही साफ कर लें।

जमशेदपुर में अपने घर में ही मैंने अपने चाचा को देखा है कि वे अपनी दुकान में सुबह जब कभी भी आते तो दुकान साफ-सुथरा किए जाने के बावजूद वह अपने से पानी का छिड़काव कर पोछते एवं साफ करते। उसी तरह दुकान बंद कर जब घर लौटते, तो अपने कमरे में झाड़ू स्वयं दे दिया करते। शायद इस वजह से कि थक कर आने पर साफ-सुथरे परिवेश में अच्छी

नींद आये और वे स्वस्थ रहें। भगवान की कृपा है कि चाचा की इसी दिनचर्या ने अभी तक उन्हें वृद्ध अवस्था में भी काफी स्वस्थ रखा है। मैं इन छोटी-छोटी बातों का उल्लेख यहाँ सिर्फ इसलिए करना चाहता हूँ कि कहीं भी जब कोई आरम्भ के दिनों में अच्छी चीजें देखता है, तो वह उसके मानस पटल पर अंकित हो जाती है तथा वह उसे अपने जीवन में भी उतारने की कोशिश करता है।

जमशेदपुर का तो स्वच्छता से खास एवं गहरा रिश्ता रहा है या यूँ कहें तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दोनों साथ-साथ चलते हैं। जमशेदपुर में बड़े-बड़े कल-कारखाने होने के बावजूद टाटा कंपनी की कोशिशों से वहाँ स्वच्छता स्पष्ट नजर आती है तथा इसे कायम रखने में वहाँ की जनता भी पूर्ण रूप से मदद करती है। चूँकि धीरे-धीरे लोगों को इसकी आदत सी पड़ गई है। यहाँ एक और बात का जिक्र करना चाहता हूँ कि नौकरी में आने के पूर्व जब मैं स्कूल-कॉलेज के दिनों में जमशेदपुर में था तो वहाँ मच्छड़ बिल्कुल नजर नहीं आते थे। इस वजह से वहाँ मच्छड़दानी का प्रचलन भी नहीं था। नौकरी में अपने राँची कार्यालय में आने पर मच्छड़ आदि से बेफिक्र और आजाद होकर रहने की आदत के कारण मच्छड़ों ने मुझे अपना कोप भाजन बनाया, जिसका मुझे अहसास भी नहीं हुआ। राँची कार्यालय में जमशेदपुर के

ही वरीय साथी श्री सुब्रमनियम का ध्यान इस ओर गया। उन्होंने कहा कि अरे! देखो, मच्छड़ ने तेरे चेहरे पर कैसा नक्शा बना दिया है। इसे जमशेदपुर मत समझो, नेट लगाओ और मच्छड़ों से छुटकारा पाओ। श्री सुब्रमनियम साहब आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी बात अच्छी तरह याद है। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। कहने का अभिप्राय यह है कि स्वच्छता से मन-मस्तिष्क प्रफुल्लित रहता है, जो तमाम तरह के रोगों को भी दूर रखता है।

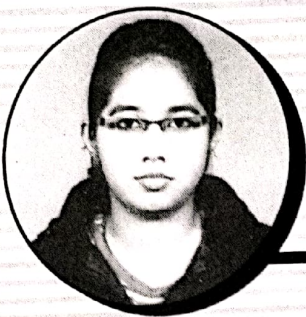
सृष्टि की रचना काल से ही इस संसार में अच्छी-बुरी, स्वच्छ-मैला आदि न केवल इंसान ने देखा बल्कि इसे दूसरे जीव-जन्तु ने भी देखा है। मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि इंसान से कहीं ज्यादा इसकी पहचान दूसरे जीव-जन्तुओं में है, वर्ना क्या कारण है कि जहाँ भारत जैसे विकासशील देश जो निरंतर हर क्षेत्र में तरक्की और कामयाबियों की नई ऊँचाइयों को छू रहा

है वहाँ हमारे प्रधानमंत्री जी को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत करनी पड़ी है। खैर, इस अभियान को दिल से आगे बढ़ाते हुए कामयाबी के शिखर पर पहुँचाया जाय और जैसा कि मैंने पूर्व में लिखा है, इसकी शुरुआत इकाई (अर्थात् स्वयं) से करें, तो इसका परिणाम अवश्य ही व्यापकता में दिखने लगेगा।

स्वच्छता की जब मैं बात करता हूँ, तो अनायास ही जमशेदपुर की स्वच्छता मेरी नजरों के सामने आ जाती है। बचपन के दिनों में बड़े उद्यमी के तौर पर सिर्फ टाटा-बिड़ला का नाम सुनता था। आज भारत में सैकड़ों-हजारों बड़े उद्यमी तथा कॉरपोरेट जगत के लोग हैं। काश! वे सभी जमशेदपुर के तर्ज पर इतना बड़ा न सही, परन्तु जहाँ उनका उद्यम-कारखाना है, उस परिवेश को स्वच्छ रखने हेतु दिल से ध्यान दें, तो भारत के बड़े भूभाग में स्वच्छता का संचार निश्चित रूप से हो जाएगा। साथ ही वहाँ की जनता का भी कल्याण हो जाएगा।

+++++





बंटवारे का मंजर

सुश्री रिमता सुमन
(पुत्री) श्री दीपक कु० सिंह
(वरीय लेखाकार)

जब याद आता है वो मंजर, दिल दहल उठता है।
रुहें काँप उठती हैं, हृदय जल उठता है।
हजारों मरे थे, लाखों इंसान बेघर हुए थे।
लाल चादर ओढ़ी थी धरती, अंगारे बरसा रहे थे अंबर।
दिल दहल उठता है,
याद आता है बँटवारे का जब वो मंजर।

समझ न पाया आज तक, कौन हिन्दू, कौन मुसलमान,
आखिर कैसे भेद करता है धरती का ये इंसान?
बंटवारे के वक्त रक्त तुम्हारा भी बहा था और मेरा भी,
याद करो ऐ नादान, भाई तुम्हारे भी मरे थे और मेरे भी।
दिल दहल उठता है,
याद आता है बँटवारे का जब वो मंजर।

चँद लोगों ने मिलकर स्वार्थ में बाँट दिया इंसान को,
काट दिया भाई ने, भाई के ही गले को।
दिल्ली और लाहौर स्वार्थ में अलग कर दिए गये।
उन बर्बरों को छोड़, बाकी सब कत्ल कर दिए गये।
दिल दहल उठता है,
याद आता है बँटवारे का जब वो मंजर।

नदियाँ रक्त की बही, हसीन वादियाँ कश्मीर की जली।
जख्म तुम्हारे भी हरे हैं और हमारे भी,
सबूत चाहिए, तो देख आओ लद्दाख का वो बंजर।
सीने में आज भी धँसा है बंटवारे का वो खंजर।

दिल दहल उठता है,
याद आता है बँटवारे का जब वो मंजर।

+++++



जिन्दगी



सुश्री रिमिता सुमन
(पुत्री) श्री दीपक कुं0 सिन्हा
(वरीय लेखाकार)

जिन्दगी वो किताब है, जिसे वक्त बदलता है।
इंसान डगमगाता है, गिरता है, गिर-गिर कर संभलता है।
हर कदम पर जीवन नया मोड़ दिखलाता है।
विश्वास अगर अटल हो, हर मोड़ पुराना लगता है।
जिन्दगी वो किताब है, जिसे वक्त बदलता है।

जिन्दगी की हर डगर मुश्किल है हर मुश्किल है अनजान।
समझ में नहीं आता, कितना बलशाली है इंसान।
जो हर मुश्किल से लड़ता है, गिर-गिर आगे बढ़ता है।
भूतकाल की बातों को, भूत में छोड़ वो चलता है।
जिन्दगी वो किताब है, जिसे वक्त बदलता है।

है इंसान का भविष्य अंजान, फिर भी भविष्य के लिए परेशान, भूल
चुका अपनी ताकत को, वर्तमान में जीने की आदत को, यह
बात मुझे बहुत खलता है इंसान हर पल दौड़ा चलता है,
चलते-चलते थक जाता है, फिर हाथ मलता चला जाता है।
जिन्दगी वो किताब है, जिसे वक्त बदलता है।

याद रखो वर्तमान, हर मुश्किल का है समाधान,
भविष्य के गर्भ को कुरेदने वाला, नादान है इंसान।
अगर भूलकर, कल को जो आज में मेहनत करता है,
तो जानो ऐ इंसान, उससे भविष्य भी डरता है।
जिन्दगी वो किताब है, जिसे वक्त बदलता है।

+++++



फूल पलास के

राम सिंगार चौहान
(लेखाकार)

फूल पलाश के जब-जब देखूँ,
याद तुम्हारी आती है।
एक दर्द सा दिल में उठता,
जान निकलती जाती है।
फूल पलास के जब-जब देखूँ

गर्मी की दोपहरी हो या हो ठंडी रातें,
छुप-छुप हम-तुम मिला करते थे।
ठंडी बयारें जब-जब बहती,
याद तुम्हारी आती है।
फूल पलास के जब-जब देखूँ

तुम थी रौनक बागों की,
फूलों की और कलियों की।
राहें भी तेरा इंतजार करती,
लाती हवायें तेरे गलियों की खुशबू।।
फूल पलाश के जब-जब देखूँ

लगता है हम बिछड़े हैं नहीं,
हैं बागों में फूल बहुत, पर तेरे जूड़े में
नहीं। याद जूड़े की जब-जब आती,
यादों में तेरी आँखें भर जाती।
फूल पलाश के जब-जब देखूँ

लिखके नाम पत्थरों पे तेरा,
साथ जीने-मरने की कसमें खायी थी।
जब-जब देखूँ ये बेजान पत्थर,
दिलाते एहसास हर बार तुम्हारी।
फूल पलाश के जब-जब देखूँ

पीपल छांव तले हम जब-जब मिलते,
कंधे पर सर रखके बातें करते।
कोयल की बोली से यूँ लगता,
तू गीत हमारी गाती है
फूल पलाश के जब-जब देखूँ



मैं जीना चाहती थी

प्रियांशु
(पुत्र) श्री राम सुरेश पाठक
(एम०टी०एस०)

मैं जीना चाहती थी।
जीवन का मधुर रस पीना चाहती थी।।
माँ, मैं जीना चाहती थी।
जीवन का मधुर रस पीना चाहती थी।।

लिंग परीक्षण करवाया।
घरा पर आने से पहले मरवाया।
गलती की है घटिया, किसे कहोगे बिटिया ?
बोलो पापा, किसे कहोगे बिटिया ?

किस मजबूरी में हुए खूनी।
भाई की कलाई रहेगी सूनी।
माँ तुमने मुझे मौत की नींद सुलाया।
क्यों तूने अपने गर्भ को कब्र बनाया ?

माँ मैं जीना चाहती थी।
जीवन का मधुर रस पीना चाहती थी।।

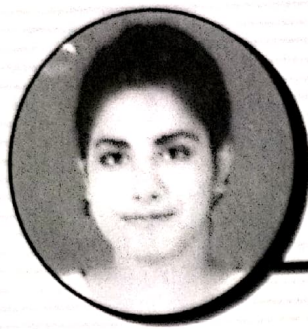
तुम्हारी इस हरकत से।
ब्रह्मा भी थर्राये।
पर पश्चाताप के आँसू।
तुम्हारी आँखों में न आये।।

माँ, अगर मैं तुम्हारी बिटिया बन आती।
तू कितनी खुश होती, फूली न समाती।
जीवन में कुछ कर दिखलाती।
पापा, तुम्हारी शान बढ़ाती।।

कहती हूँ मैं आप सब को।
बिटिया की किलकारी लाओ अब तो।
वरना हर माँ का पवित्र गर्भ अब,
कहीं बदल ना जाए कब्रगाह में।।

मैं जीना चाहती थी।
जीवन का मधुर रस पीना चाहती थी।।
माँ, मैं जीना चाहती थी।
जीवन का मधुर रस पीना चाहती थी।।

+++++



जन्मदाता

सुश्री सना खान
(पुत्री) मो० सुलतान अ० खान
(वरीय लेखाकार)

पलकों पे बैठते हैं, बाहों में सुलाते हैं।
गोद में बैठकर, सारी दुनिया दिखलाते हैं।
धन्य हैं, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

गिर पड़े हम जब, वो झट से उठाते हैं।
जब कोई साथ न दे, तो वे हाथ बढ़ाते हैं।
धन्य हैं, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

नन्हें-नन्हें पैरों पर वो, चलना हमें सिखाते हैं। कमजोर
पड़े होसले जब, साहस का गीत सुनाते हैं।
धन्य हैं, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

हमारी चाहत को वो, अपना सपना बनाते हैं।
हमारी छोटी-मोटी खुशियों में, हँसते हैं, इतराते हैं।
धन्य हैं, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

हमें वो सुख-दुःख में धैर्य की रीत-नीत सिखाते हैं।
दया-धर्म आदि से भी वे हमें अवगत कराते हैं।
धन्य हैं, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

अपनी चाहत को मारकर, हमारी दुनिया सजाते हैं।
दुनिया से अकेले लड़ने की भी कला सिखाते हैं।
धन्य हैं, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

सम्मान के समय उन्हें हम पहचानना भूल जाते हैं।
जब उनको देना हो सहारा, हम दूर खड़े क्यों हो जाते हैं?
फिर भी, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

सेवा के बदले हम उन्हें वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं।
ईश्वर तुल्य माँ-बाप क्या यही दिन देखने को हमें पालते हैं?
फिर भी, वो माँ-बाप कहलाते हैं।

+++++



कैंसर

सुश्री सना खान
(पुत्री) मो० सुलतान अ० खान
(वरीय लेखाकार)

माँ मेरे दिल में दर्द तो है, पर बताऊँ कैसे ?
आँसू भी है पर सूनी आँखों से बहाऊँ कैसे ?

माँ जहन में लफ्ज जो है, होठों पे लाऊँ कैसे ?
जीने का अरमान भी है, पर जिन्दगी सजाऊँ कैसे ?

माँ एक-एक पल की, एक-एक सांस मैं बताऊँ कैसे ?
अपनी सूनी आवाज को तुझ तक पहुँचाऊँ कैसे ?

कैंसर की वो पीड़ा ऐ माँ, तुझको मैं बताऊँ कैसे ?
साँसें टूट रही हैं अब तो, माँ की गोद में पाऊँ कैसे ?

+++++



संपादक की ओर से:-

उक्त कविता में कवि कैंसर से पीड़ित अपने जीवन के अन्तिम क्षण गिन रहा है, वह बोल नहीं सकता, रो नहीं सकता, यहाँ तक कि वह इशारे से भी अपनी अभिव्यक्ति अपनी माँ, जो सामने खड़ी है, जता नहीं सकता, जिसे वह इस कविता के माध्यम से अपने विचारों में व्यक्त करता है।

+++++



सिसकियाँ

शिप्रा वर्मा,
(पत्नी) श्री उदय नारायण प्रभाकर
(लेखाकार)

मैं भी अब चुप रहना सीख रही हूँ,
घुट-घुट कर जीना सीख रही हूँ।

तूने तो ऐ जिन्दगी अपने सारे रंग दिखाये,
मैं अब उन्हीं रंगों में ढलना सीख रही हूँ।

ख्वाहिश तो जीवन में मेरी और भी थी,
पर अब तिल-तिल कर मरना सीख रही हूँ।

तेरी नजर में शायद मैं कुछ भी नहीं थी,
पर मैंने तुझे सबों से अलग अपना माना था।

तूने ना जाने मुझसे कैसी दोस्ती निभाई,
अब दोस्तों से दूरी रखना सीख रही हूँ।

बचपन के वे सपने, लड़कपन की वो नादानियाँ,
हाय तेरे ही कारण मरते उनको देख रही हूँ।

बचपन के खेल खिलौने, बचपन की वो यादें,
अब अकेले ही बैठकर, मैं जीना सीख रही हूँ।

मैं भी अब चुप रहना सीख रही हूँ,
घुट-घुट कर जीना सीख रही हूँ।

+++++



कहता है मन



शिप्रा वर्मा,
(पत्नी) श्री उदय नारायण प्रभाकर
(लेखाकार)

कहता है मन तेरे पास आ जाऊँ माँ,
तेरी गोद में सिर रखकर सो जाऊँ माँ।
क्यूँ इतना तू दूरखड़ी है मुझसे,
मुझको अपने पास बुला ले माँ।

मेरी याद तो तुझे हर वक्त सताती होगी,
जब भी तू घर को सूना पाती होगी।
बिटिया-बिटिया कहकर पुकारती होगी,
अकेले में बैठकर अपने को समझाती होगी।

सुबह-सुबह जब आँखे तेरी खुलती होगी,
अपने बगल में न पाकर तू रोती होगी।
थककर रात को जब तू सोने जाती होगी,
आवाज मेरी सुनने की ललक होती होगी।

मेरे भोले बचपन की वो नादानियाँ,
आज भी तुझे धीरे-धीरे गुदगुदाती होगी।
आज भी सूने आँगन में अकेले बैठकर,
मेरे भोलेपन पर तू मुस्कुराती होगी।

मेरे बचपन की तस्वीर को लेकर,
तू घंटों तक बराबर निहारती रहती होगी।
सीने से लगाकर मेरे पुराने कपड़ों को,
स्नेह भरे अपने हाथों से सहलाती होगी।

याद करती होगी तू अब भी वो दिन,
पहली बार जब तुझे माँ कहकर पुकारा था।
माँ-माँ कहकर जब मैं तेरे पास आई थी,
तब तू मुझे स्नेह भरी गोद में बिठाया था।

कहता है मन मैं तेरे पास आ जाऊँ माँ,
तेरी गोद में लोरी सुनकर सो जाऊँ माँ,
तेरे सिरहाने बैठ, बीत जाये यूँ रात-दिन,
जी करता है लौट जाये बचपन के वो दिन,

कहता है मन तेरे पास आ जाऊँ माँ,
तेरी गोद में सिर रखकर सो जाऊँ माँ।

+++++



गाँव की सड़क

अश्विन अनुराग,
(पुत्र) श्री प्रेम निवास मिश्र,
(स० ले० अधिकारी)

गाँव में एक मंत्री आये, सड़क देख वो भृकुटाये,
अफसर को फटकार लगाई, कहा कल हमें ही देना वोट भाई।

चुनाव जीतकर खुशियाँ पाये, अपने सारे गम भूलाये,
बैठ फूस पर खाना खाये, बच्चों संग फिर गाना गाये।

उठे मंत्री हुए मोटर सवार, पहुँचे फिर वो अगले द्वार,
बिरजू भइया तब फिर बोले, बात नहीं तुम समझे भोले।

कुर्सी का अलमस्त यह खेल, कोई पास तो कोई फेल, खाद,
सड़क और बिजली पानी, भूली-बिसरी अनसुनी कहानी।

पाँच बरस का लगता मेला, हम छिलें वो खाएँ केला,
मौसम फिर वही पुराना आया, वारों का वही पिटारा लाया।

आँखों में सपनों का सैलाब, सारे ही अच्छे कौन खराब,
फिर वही धमाका, उठा-पटक, पीये अंग्रेजी दारु गटक-गटक।

बिक रहे देश के प्राणाधार, फिर आ रही वही सरकार,
कहते हैं गाँव के लोग बड़े, गाँधीजी जब दुश्मन से लड़े।

हुआ करती थी सड़कें जो यहाँ, दिखते हैं गड्ढे आज वहाँ,
बारिश आई, आँधी आई, फिर वही बदहाली लाई।

न नेता आए न बाबू आए, सरकारी पैसे कहाँ समाए,
इंसान की जागी नीयत सोई, सड़क अपनी तकदीर पे रोई।

सड़क अपनी तकदीर पे रोई।

+++++



प्रकृति की देन

अर्पित
(पुत्र) श्री दिलीप कुमार सिंह,
(वरीय लेखाकार)

प्रकृति ने दी है हमें तोहफे अनेक,
सब हैं बढ़कर एक-से-एक।

सूरज निकलताहोता रोज सवेरा,
मुर्गी करती कूकरुं-कू का टेरा।

छंटा अंधेरा, छाई हरियाली,
चिड़ियाँ सब फुदकती डाली-डाली।

प्रकृति ने दी है जानवर अपार,
जिनसे करते हम सब प्यार।

हरियाली धरती हमारी है जान,
हरियाली नहीं तो रुठे भगवान।

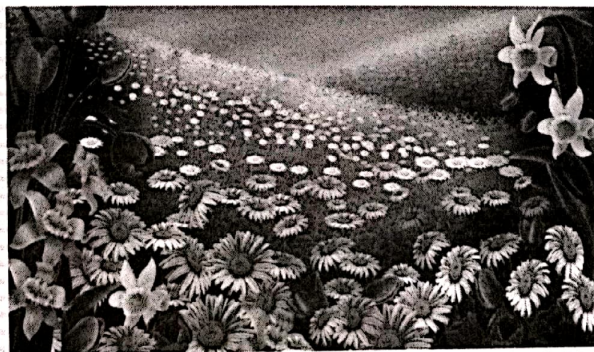
तितलियाँ खेलती, भौरे मंडराते,
भूझ-भूझ कर सब नाचते-गाते।

लाखों पौधे, करोड़ों इंसान,उन सबका
मालिक है भगवान।

बारिश होती झम-झम - झम-झम,
सभी नाचते रहते हर दम।

जो भी करते प्रकृति की देख-रेख,
प्रकृति करती उनका भी अभिषेक।

+++++





हाय रे गर्मी

आर्येश
(पुत्र) श्री दिलीप कुमार सिंह,
(वरिय लेखाकार)

देखो-देखो आई ये गर्मी,
उमस को भी बुलाए ये गर्मी,
उफ ये गर्मी, हाय रे गर्मी।

पूरवा हवा जब बहाए ये गर्मी,
पसीने को संग लाये ये गर्मी,
उफ ये गर्मी हाय रे गर्मी।

दिन भर रहती छाई ये गर्मी,
लोगों को नहीं भाये ये गर्मी,
उफ ये गर्मी हाय रे गर्मी।

बच्चों को न भाये ये गर्मी,
ठंड की चाह बढ़ाये ये गर्मी,
उफ ये गर्मी हाय रे गर्मी।

संग में बिमारियाँ लाई ये गर्मी,
बच्चों को घबराये ये गर्मी,
उफ ये गर्मी, हाय रे गर्मी।

घमौरी, खुजली लाये ये गर्मी,
लू से सबको सताये ये गर्मी,
उफ ये गर्मी, हाय रे गर्मी।

पानी को सुखाये ये गर्मी,
वर्षा को तरसाये ये गर्मी,
उफ ये गर्मी, हाय रे गर्मी।

खेतों को भी सुखाये ये गर्मी,
किसानों को न भाए ये गर्मी,
उफ ये गर्मी, हाय रे गर्मी।

दिन में सबको सताये ये गर्मी,
रात में उमस बढ़ाये ये गर्मी,
उफ ये गर्मी, हाय रे गर्मी।

हर कोई चाहे, जाये ये गर्मी,
वर्षा आये तो भागे ये गर्मी,
उफ ये गर्मी, हाय रे गर्मी।

+++++



सरदी के ठाट

ऋषभ माँड़ी
(पुत्र) सत्येन्द्र माँड़ी,

दूध जलेबी ने सरदी में
अपनी धाक जमाई,
गरम-गरम गाजर का हलवा
लेकर सरदी आई।

गजक रेवड़ी पाकर बच्चे
किलकारी कर उछले,
ज्यों पानी में मछली के दल
भुने चनों पर मचले।।

+++++

हम गढ़ते अपनी तकदीर

ऋषभ माँड़ी
(पुत्र) सत्येन्द्र माँड़ी,

अपने नन्हें हाथों से
हम गढ़ते अपनी तकदीर,
बंद हमारी मुट्ठी में है
अपने जीवन की जंजीर।

सदा बढ़ेंगे, हम न रुकेंगे,
तोड़ेंगे बंधनों की जंजीर।।

हमें न मोड़ो, हमें न तोड़ो,
न हमें जंजीरों से जकड़ो,
हम भी तो अनुभव करते हैं,
अपना सुख-दुख अपनी पीर।

विजय हमारी निश्चित होगी,
क्योंकि हम हैं सच्चे वीर।।

+++++



ए०जी०ऑफिस

बनवारी सिंह,
लेखाकार-सह-प्रभारी कैयर-टेकर।

ए०जी०ऑफिस बा बिहार के नमुनवाँ, ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।
ऑफिस बा बिहार के नमुनवा, ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

बगले में बाटे रेलवे स्टेशन, बगले में दूर थोड़ा बस-स्टेशनवाँ,
पूरे बिहार के कर्मचारी लोगन के आवे-जाये के, अच्छा बा सधनवाँ।
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

बगले में बाटे पर्यटन ऑफिस, बगले में सोन भवनवाँ,
सामने में बाटे सर्किट ऑफिस, मात्र अफसर लोग के बाटे विश्रमवाँ,
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

बगले में बाटे एम० एल० ए० फ्लैट, विधायक लोगन के स्थनवाँ,
सटले में बाटे रवीन्द्र भवन, जहाँ सब नेता लोगन देवेला भषनवाँ।
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

ए०जी०ऑफिस कैम्पस में यूको बैंक, पोस्ट ऑफिस और डाकखनवाँ,
सी०पी०डब्ल्यू०डी० करेला ऑफिस से लेकर कॉलनी तक मेंटनेसनवाँ।
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

इसी ऑफिस के ग्राउंड फ्लोर पर बा ए० सी० कैंटीनखनवाँ,
जहाँ से चाय-पानी नास्ता मिलेला, और मिलेला स्वादिष्ट भोजनवाँ।
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

अकॉउंट्स से लेखा बनेला, जी०ए०डी० से पे-स्लिप और पेंशन से पेंशनवाँ,
एक माह के अन्दर बनके, पहुँच जाला जिला वाइज सब डाकखनवाँ।
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

एही ऑफिस पूरे बिहार के ऑडिट करके, रिपोर्ट करेला बिहार भवनवाँ,
गलती पर जब ऑडिट पकड़ेला, सजायाफ्ता सब जाला जेलखनवाँ।
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

कविता बनाके कहे बनवारी, हम बानी ए०जी०ऑफिस के कर्मचारी,
दानापुर के आगे परिवार साथ रहेला, खास नेउरा टिकैतपुर मकनवाँ।
ये गुनवाँ कहाँ से सुनाउँ नाये।

जय हिन्द! जय भारत!

+++++



मने-मने हम गाई ला

बनवारी सिंह,
लेखाकार-सह-प्रभारी केयर-टेकर।

मने-मन हम गाई ला, मने-मने हम गाई ला,
ऑफिस लोगन सब के भलाई खातिर, हम राधे-राधे गाई ला।।
लोग सुबह छः बजे जागें, हम त छः बजे ऑफिस खोलवाई ला,
दरवान से लेकर पहरेदार तक के, रोज खबर हम लेई ला।
मने - मन हम

ए०जी०, डी०ए०जी० साहब के दफ्तर पहले खोलवाई ला,
फिर खड़ा होकर हम उनके चैम्बर में झाड़ू-पोछा लगवाई ला,
मने - मन हम

ग्राउंड तल से छट्टे तल तक हम साफ-सफाई करवाई ला,
फिर आठ बजे के बाद अपना डेरा, फेश होवे के जाई ला।
मने - मन हम

नहा-धोवा के पूजा-पाठ कर, हम भोजन छक खाई ला,
फिर नौ बजे कार्यालय आ के सफाई के निरीक्षण कराई ला।
मने - मन हम

फुरसत पा के साढ़े नौ बजे हम गेट-कीपर के कार्य करी ला,
फिर अनुभाग में टियूब-लाइट, पंखा, कुलर के कार्य देखी ला।
मने - मन हम

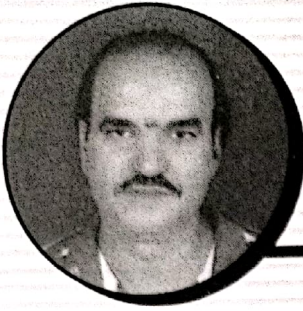
कभी-कभी मिटिंग, ट्रेनिंग औ परीक्षा में चाय-पानी चलवाई ला बीच-बीच में
गेट पर आके गेट-कीपरो के टिफिन कराई ला।
मने - मन हम

कभी-कभी भौचर सब के पुराना अभिलेख शाखा में भेजवाई ला, समय पाके
कभी-कभी आलमीरा के चाभी बनवाई ला।
मने - मन हम

कार्यालय बंद करवा के शाम के सात बजे डेरा हम जाई ला, कभी-कभी साहब
सब के छुटल-बढ़ल काम भी करवाई ला,
मने - मन हम

कविता बनाके कहे बनवारी हम प्रभारी केयर-टेकर कहलाई ला,
कोई पूछे तब अपना पता ग्राम-टिकैतपुर नेउरा बतलाई ला,
मने - मन हम

+++++



कुदरत की कृति

शिव शंकर तिवारी,
वरीय लेखाकार

कुदरत द्वारा सृजित हर चीज प्यारी लगती है,
छोटी हो या बड़ी, सभी न्यारी लगती है।

कोई कहता है कि कुछ चीजें बेदमदार लगती हैं,
पर मैं तो कहता हूँ कि सभी दमदार दिखती हैं।

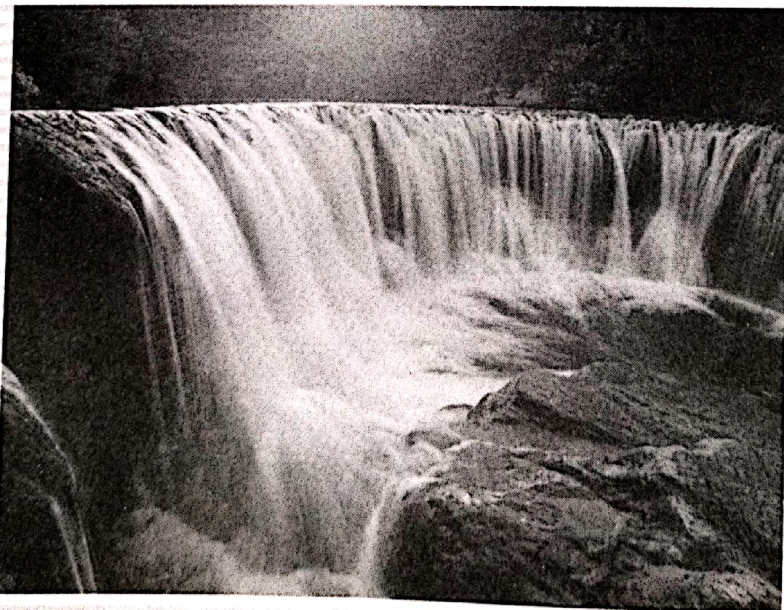
तिवारी दिवाना है कुदरत की हर पेशकश पर,
इंसां तो बेहतरीन तोहफा है, स्वर्गस्वरूपा धरा पर।

कितना कहूँ, क्या-क्या कहूँ? सब कमतर होगा,
तेरे सामने मेरे बाबा, ये सब फीका लगता है।

तेरे दीदार को अँखियाँ मेरी, बेचैन रहती है,
न चाहूँ तो भी मेरे मौला! तुम्हीं मैं निमग्न रहती है।

तेरी रहमत पे ऐ मौला, ये दुनिया नाज करती है,
तुम्हीं मेहराब हो सबके, तुम्हें सरताज कहते हैं।

+++++





धरा के भूषण

अग्रिता प्रभाकर
(पुत्री) श्री उदय नारायण प्रभाकर,
(लेखाकार, जी० डी०)

पेड़ धरा के भूषण हैं,
हमको फल ये देते हैं,
धूप से हमें बचाते हैं,
हरे-भरे ये रहते हैं।
पेड़ धरा के भूषण हैं।

पेड़ धरा के कटाव रोके,
मिट्टी बंजर होने से रोके,
खेतों को उपजाऊ बनावे,
हमें अन्न-जल देते जावे,
पेड़ धरा के भूषण हैं।

पेड़ हमें औषधि देते,
बीमारी को दूर भगाते,
पक्षियों के बसेरा हैं,
जानवरों का पोषक हैं,
पेड़ धरा के भूषण हैं।

तुम भी इसे खूब लगाओ,
प्रदूषण को मार भगाओ,
चलो वायु हम स्वच्छ बनावें,
तब वह वायु स्वस्थ बनावें,
पेड़ धरा के भूषण हैं।

चलो मिलकर पेड़ लगावें,
कोई इनको काट न पावे,
अपने घर सौन्दर्य बढ़ावें,
प्रकृति को निर्मल बनावें।
पेड़ धरा के भूषण हैं।

+++++



जीवन-संघर्ष

सुमित कु० गुप्ता
(लेखाकार)

किसी ने भगवान से पूछा -

प्रभु! तूम्ने ज्वाला में इतनी चमक दी, सूरज,
चाँद, तारों में रोशनी भी भर दी,
फिर मेरे जीवन में कालिमा क्यों भर दी?

प्रभु बोले -

ज्वाला खूब जली, तब कहीं इतना चमकी,
अंधेरी से जितना अधिक लड़ी उतना चमकी।

प्रभुजी पुनः बोले -

सूरज, चाँद सितारों का उजाला देखा है?
अंधेरी से उनका संघर्ष रातभर देखा है,
अंधेरी से निकलकर ही उसने रोशनी पायी है।

जिनका उजाला, रोशनी देख, तू चकराई है,
वे स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी देते हैं,
अंधेरी से टकराते और जगमगाते हैं।

चमकने, जगमगाने के लिए जलना जरूरी है,
चमकने के लिए रोशनी भी जरूरी है।
क्योंकि अंधेरा ही रोशनी को चमक देती है।

सफलता पाने के लिए संघर्ष जरूरी है,
संघर्ष के लिए अंधेरी से लड़ना जरूरी है,
क्योंकि अंधेरे से ही रोशनी का अस्तित्व है।

+++++





जीत की दौड़

सोनु ओझा
(डी०ई०ओ०)

एक दौड़ शुरू हुई है जीतने की,
हर कोई दौड़ा जा रहा है।

शुरू हुई थी एक बिंदु से,
क्यों तू पीछे पड़ता जा रहा है।

अभी थोड़ा पीछे हो तो क्या,
तैयार रह बस तू मर मिटने को।

कौन तुझे पछाड़ रहा है,
तू तो बना ही है जीतने को।

तू देख इन फौलादी पहाड़ों को,
ये कहाँ कभी झुकते हैं।

सुन ले तू शेर की दहाड़,
वह कब शिकार से पीछे हटता है।

याद करो उन वीर जवानों को,
जो भारत माता के लिए लड़ते हैं।

वे क्यों नहीं डरते उस वक्त,
जब उनके देह पर हथगोले बरसते हैं।

हार का डर एक जहर है,
जो डरता है, तिल-तिल कर मरता है।

तू ना डर तेरे साथ हैं हम,
जीतना तेरे जीवन के लिए वरदान है।

आँख बंद कर अपने रुह की सुन,
जीत, यह जीत तेरे ही नाम है।

+++++





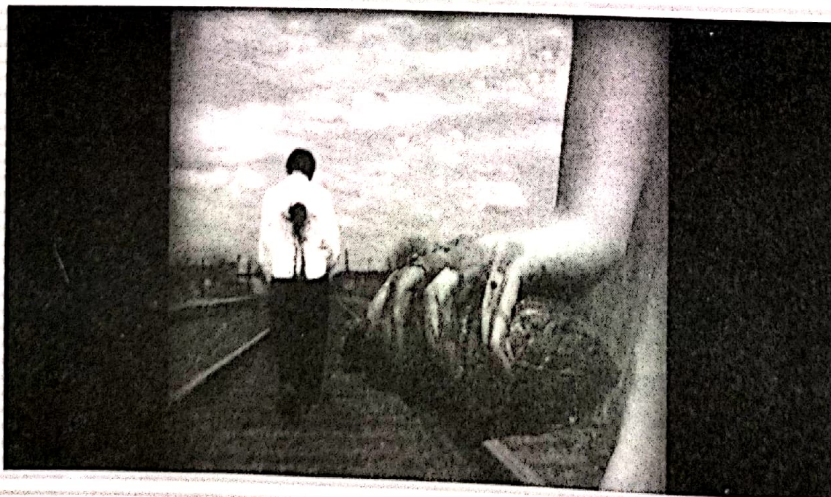
(गजल)

दर्द-ए-दिल

सुलतान अहमद खान
(बरीय लेखाकार)

वे जुर्म करते हैं,
लेकिन सजा भी न मिली,
मैं बेकसूर हूँ बेशक
मगर बचा भी नहीं।
हमारे पास था एक दिल,
चुरा लिया उसने।
पसन्द हमको वे करते हैं,
या खुदा, जाना नहीं हमने।
किसी से हमने भी ऐ दिल,
कभी सुना भी नहीं।
जला दिया गया 'सुलतान'
सामने सब के,
मेरा कसूर क्या है,
जनाजे को पता भी नहीं।

+++++





तन्हा

आफताब अन्सारी
(वरीय लेखाकार)

हर शख्स अपने आप में, सिमटा हुआ है आज,
बाजार में भी आदमी, तन्हा हुआ है आज।
ये दिल तुम्हारी याद में, डूबा हुआ है आज,
गुजरा जमाना लौट के, आया हुआ है आज।

आँखें तुम्हारी राह में हरदम बिछी हुई,
तुमसे मिले हुए तो, जमाना हुआ है आज।
मौसम ने अपना हर रंग, दिखाये हुए है आज,
आई बहार जख्म भी, ताजा हुआ है आज।

शायद इसे ही कहते हैं, जमाने का इन्कलाब,
कल था जो चारह साज बेचारह हुआ है आज।
तुम संग हर राहों से, गुजरा हूँ बारहां,
जिन रास्तों से तेरा, गुजरना हुआ है आज।

झूठा फरेब से दूर है आफताब,
जो झूठ बोलता वही सच्चा हुआ है आज।
हर शख्स अपने आप में सिमटा हुआ है आज,
बाजार में भी आदमी तन्हा हुआ है आज।

+++++



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महालेखाकार (ले. एवं हक.) एवं महालेखाकार (ले. प.), सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेते हुए



महालेखाकार (ले. एवं हक.) झंडोत्तोलन के उपरान्त तिरंगे को सलामी देते हुए



महालेखाकार (ले. एवं हक.) एवं महालेखाकार (ले. प.) सांस्कृतिक कार्यक्रम में ध्यानमग्न अवस्था में



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर
महालेखाकार (ले. एवं हक.),
वरीय उप महालेखाकार एवं
उप महालेखाकार, कार्यालय के
अधिकारियों एवं कर्मियों के
साथ

महालेखाकार (ले. प.)
एवं महालेखाकार (ले. एवं हक.)
बाल कलाकारों एवं तारा
इंस्टीच्यूट ऑफ लर्निंग,
कंकड़बाग, पटना की
निदेशिका श्रीमती किरण कुमारी
के साथ



बायें से दायें खड़े हैं- श्री अजहर
जमाल, उप महालेखाकार; श्रीमती
सरिता गुप्ता, उप महालेखाकार; श्री
धर्मेन्द्र कुमार, महालेखाकार (ले.
प); श्री सी० सुरेश कुमार,
महालेखाकार (ले. एवं हक.);
श्रीमती तान्या सिंह, व० उप
महालेखाकार; श्री पवन कुमार उप
महालेखाकार; श्री जॉर्ज सैमूअल,
उप महालेखाकार, स्वतंत्रता दिवस
के शुभ अवसर पर